साक्षी

अंक-51

साक्षी

अंक-51

राम वनगमन पथ की वनस्पतियाँ

डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह

अयोध्या शोध संस्थान
तुलसी स्मारक भवन, अयोध्या, फ़ैज़ाबाद (उ. प्र.)
फ़ोन–फ़ैक्स : 05278-232982

साक्षी-51

राम वनगमन पथ की वनस्पतियाँ

डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह

ISSN : 2454-5465

इक्यावनवाँ अंक

©अयोध्या शोध संस्थान

प्रकाशक

वाणी प्रकाशन

21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
फ़ोन : 011-23273167, 23275710
फ़ैक्स : 011-23275710
ई-मेल : vaniprakashan@gmail.com
वेबसाइट : www.vaniprakashan.in

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए वाणी प्रकाशन की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचना में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। विचारों से पूर्णतः लेखक और वाणी प्रकाशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

राम नाईक
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

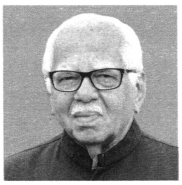

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

08 जून, 2017

शुभेच्छा

मुझे प्रसन्नता है कि डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा 'राम वनगमन पथ की वनस्पतियाँ' पुस्तक की रचना की गयी है, जिसमें उन्होंने भगवान श्रीराम के वनगमन के मार्ग (अयोध्या से श्रीलंका तक) पर पायी जाने वाली विभिन्न वनस्पतियों का उल्लेख किया है।

डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह ने शासकीय सेवा में रहते हुए अपने लेखन कार्य को भी जारी रखा और उन्होंने अब तक 16 पुस्तकों की रचना की है। वाल्मीकिकालीन वनस्पतियों, नदियों एवं पर्वतों पर इनका शोध कार्य भी प्रकाशित हो चुका है। डॉ. सिंह की कृतियाँ पर्यावरण और भारतीय संस्कृति के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण हैं। पर्यावरण हम सबकी साझा धरोहर है, जिसे सुरक्षित रखना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

मैं डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह को इस कृति के लिए हार्दिक बधाई देते हुए पुस्तक की सफलता की कामना करता हूँ।

(राम नाईक)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

भूमिका

राम वनगमन के समय अयोध्या से श्रीलंका तक का पूरा मार्ग घने वन क्षेत्र से युक्त था। मार्ग में भाँति-भाँति के जीव-जन्तु थे। मार्ग में अनेक नदियाँ एवं तालाब थे, जो स्वच्छ पेय जल सम्पन्न थे। वर्तमान समय में राम वनगमन पथ पर न तो सघन वन हैं और न ही स्वच्छ जलस्रोत बचे हैं। यह युग पर्यावरण प्रदूषण का है। पर्यावरण के सभी अंगों के साथ जल स्रोत भी प्रदूषित हो गये हैं। पर्यावरण संरक्षण आज का प्रमुख युग धर्म है। यह सन्तोष का विषय है कि धीरे-धीरे जनमानस में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। किन्तु समस्या इतनी विकराल है कि इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना शेष है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि यदि भारत के जनमानस के अन्तर्मन में कोई विचार स्थापित करना हो तो उसे धर्म से जोड़ देना चाहिए। राम और कृष्ण भारत के सर्वमान्य महापुरुष हैं तथा रामायण एवं महाभारत की कहानियाँ विद्वान से अनपढ़ तक सभी वर्ग में लोकप्रिय हैं। राम वनगमन एक सर्वमान्य घटना है। अनेक स्थानों पर इसके साक्ष्य विद्यमान हैं। आजकल तो रामेश्वरम् से श्रीलंका तक के सेतु के प्रमाण भी मिल रहे हैं। यदि हम राम वनगमन पथ को प्राचीन रूप में विकसित करने का प्रयास करें तो इसे जनता का पूरा सहयोग प्राप्त होगा तथा हम अपनी पौराणिक धरोहर को संरक्षित करने का अभूतपूर्व कार्य भी कर सकेंगे।

वाल्मीकि रामायण या तुलसीकृत रामचरितमानस में राम वनगमन पथ का पूर्ण उल्लेख नहीं है। मोटे रूप में अयोध्या से प्रयाग, प्रयाग से चित्रकूट, चित्रकूट से पंचवटी, पंचवटी से किष्किन्धा और वहाँ से रामेश्वरम् फिर श्रीलंका का उल्लेख आता है। बीच-बीच में पड़ने वाले पर्वतों एवं नदियों के उल्लेख से मार्ग का अनुमान लगाया जा सकता है। पूर्ण रूप से राम वनगमन पथ की खोज हेतु अभी शोध की आवश्यकता है।

इस कृति में राम वनगमन पथ में वर्णित वृक्ष प्रजातियों पर विचार किया गया है। ऋषि वाल्मीकि राम के समकालीन थे इसलिए वाल्मीकि रामायण में वर्णित प्रजातियों को आधार माना गया है। तुलसीकृत रामचरितमानस की लोकप्रियता को देखते हुए उसमें वर्णित प्रजातियों को भी संज्ञान में लिया गया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इसे सात खण्डों में बाँटा गया है–

1. अयोध्या से प्रयाग
2. प्रयाग से चित्रकूट
3. चित्रकूट से दण्डकारण्य

4. दण्डकारण्य से पंचवटी
5. पंचवटी से किष्किन्धा
6. किष्किन्धा से सेतुबन्ध
7. श्रीलंका

इन सात खण्डों में पड़ने वाली वृक्ष प्रजातियों का अलग-अलग अध्यायों में वर्णन किया गया है। उन वृक्ष प्रजातियों के वानस्पतिक नाम एवं उनकी सामान्य जानकारी भी यथास्थान दी गयी है। यदि हम राम वनगमन पथ पर उस समय पायी जाने वाली प्रजातियों का रोपण कर सकें तो यह एक अभूतपूर्व कार्य होगा।

इस कृति का सृजन अयोध्या शोध संस्थान के निदेशक, डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह की प्रेरणा से किया गया है जिसके लिए मैं उनका ऋणी हूँ। मैं उन सभी महानुभावों को धन्यवाद देता हूँ जिनसे इस कृति के सृजन में सहयोग मिला।

—डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह
भारतीय वन सेवा
कार्यालय प्रमुख वन संरक्षक,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

अनुक्रम

खण्ड-1 : अयोध्या से प्रयाग

साल 17
आम 19
अशोक 20
कल्पवृक्ष, पारिजात 21
बरगद, भंडीर 22
चन्दन 23
रक्तचन्दन 23
अगर 24
नारियल 24
देवदारु 25
चम्पा 25
नागकेसर 26
पुंनाग 27
महुआ 27
कटहल 28
असन 28
लोध 29
कदम्ब (नीप) 29
अर्जुन (ककुभ) 30
छितवन, सप्तपर्ण 31
अतिमुक्तक 31
मन्दार 32
केला 33
प्रियंगु 34
बकुल (मौलसिरी) 34
जामुन 35
अनार 35
कोविदार (कचनार) 36
बेल 36
खैर 37
पलाश (टेसू) 37
बहेड़ा 38
पीपल 39
इंगुदी 39
तिलक 40
ताड़ (ताल) 40
तमाल 41
आँवला 42
मालती या चमेली 42
कुश 43
सरकण्डा, मूँज घास या सरपत 43
असिपत्र, ईख 44
नीम 44

मल्लिका (बेला) 45
शीशम, शिंशपा 45
कमल 47
सरसों 47
करीर या करील 47
वञ्जुल, वेतस (बेंत) 48
सुपारी 48
रेंड़ 49
तुलसी 49
दूब घास 49
हलदी 50

खण्ड-2 : प्रयाग से चित्रकूट

साल 53
बाँस 54
आम 58
जामुन 59
असन 60
लोध 60
प्रियाल (चिरौंजी) 60
कटहल 61
धव (धौरा), बाकली 62
अंकोल 62
भव्य/चालता/नीम 63
बेल 64
तेन्दू 64
अरिष्ट, नीम, रीठा 66
वरण 66
महुआ 67
तिलक 67
तिनिश (स्यन्दन) 68
बेर 69
आँवला 69
कदम्ब (नीप) 70
वञ्जुल, वेतस (बेंत) 70
धामन या धन्वन (इन्द्रजौ) 71
अनार 72
चम्पा 72
मालती या चमेली 72
पुत्रजीवक, पुत्रंजीव, कुमारबीज, जलपित्री 73
नागकेसर (पुनांग) 73
भोज पत्र 73
कोविदार (कचनार) 74
गर्जन 74
ताड़ (ताल) 75
चन्दन 76
इंगुदी 76
देवदारु 76
तमाल 77
रक्तचन्दन 77
पीपल 78
बहेड़ा 78
कुश 78
बरगद 79
भिलावा 79
खस 80

कमल 80
सल्लकी, सलई 81
पाकड़ 81

खण्ड-3 : चित्रकूट से दण्डकारण्य

नीवार (जलकदम्ब) 85
कटहल 86
साल 86
अशोक 87
तिनिश (स्यन्दन) 87
चिलबिल 88
महुआ 88
बेल 89
तेन्दू 89
पिप्पली, प्रियांगु 90
कुश 90
केला 91
कमल 91

खण्ड-4 : दण्डकारण्य से पंचवटी

साल 95
तमाल 96
ताड़ (ताल) 96
खजूर 97
कटहल 97
नीवार (जलकदम्ब) 98
तिनिश (स्यन्दन) 98
नागकेसर (पुनांग) 99
आम 99
अशोक 100
तिलक 101
केतक (केवड़ा) 102
चन्दन 103
कदम्ब (नीप) 103
पर्णास (वन तुलसी) 104
लकुच (बड़हल) 105
धव (धौरा), बाकली 105
बाँस 106
गर्जन 107
खैर 107
शमी 107
पाटल (पाड़र) 108
पलाश (टेसू) 109
कुश 109
सरकण्डा, मूँज घास या सरपत 110
कुन्द 111
कनेर या करवीर 111
असिपत्र, ईख 112
अर्जुन (ककुभ) 112
जामुन 113
कुरव 113
अनार 113
बकुल (मौलसिरी) 114
चम्पा 114
केला 115
कमल 115
बेल 115

खण्ड-5 : पंचवटी से किष्किन्धा

जामुन 119
प्रियाल (चिरौंजी) 120
कटहल 120
बरगद (भंडीर) 121
पाकड़ 122
तेन्दू 122
पीपल 123
कनेर या करवीर 123
आम 124
धव (धौरा), बाकली 126
नागकेसर (पुनांग) 126
तिलक 128
करञ्ज (नक्तमाल) 130
नील, अशोक, नीलाशोक 131
बिजौरा 131
कदम्ब (नीप) 132
चन्दन 134
भिलावा 135
अशोक 135
रक्तचन्दन 137
मन्दार 138
बकुल (मौलसिरी) 138
उद्दाल, लिसोड़ा (बहुवार) 139
नीम 140
लोध 141
मालती या चमेली 141
कुन्द 142
वञ्जुल, वेतस (बेंत) 143
छितवन, सप्तपर्ण 143
कतक (निर्मली) 144
मल्लिका (बेला) 145
पलाश (टेसू) 145
केतक (केवड़ा) 145
सिन्दुवार 146
वासन्ती, चमेली 147
चिलबिल 147
महुआ 148
चम्पा 148
अंकोल 149
कुरंट या वज्रदंती 149
सेमल (चूर्णक या शाल्मली) 149
पाटल (पाड़र) 150
कोविदार (कचनार) 150
मुचकुन्द, कार्निकारा 151
अर्जुन (ककुभ) 151
शिरीष (सीरस) 152
शीशम, शिंशपा 153
तिनिश (स्यन्दन) 153
हिन्ताल 154
गजपुष्पी 154
केला 154
सर्ज 155
अतिमुक्तक 155
सरल या चीड़ 156
अमलतास 157

कुटज 158
असन 158
बन्धु-जीव 159
गर्जन, अश्वकर्ण 160
ताड़ (ताल) 160
तमाल 160
कल्पवृक्ष, पारिजात 161
कमल 161
पद्मक 161
जवास 162
बबूल 162

खण्ड-6 : किष्किन्धा से सेतुबन्ध

साल 165
ताड़ (ताल) 165
तमाल 166
नागकेसर (पुनांग) 166
अशोक 166
धव (धौरा), बाकली 167
चम्पा 167
कनेर या करवीर 168
अगर 168
चन्दन 169
केतक (केवड़ा) 169
सिन्दुवार 170
वासन्ती लता, चमेली 170
चिलबिल 170
महुआ 170
वञ्जुल, वेतस (बेंत) 171
बकुल (मौलसिरी) 171
रंजक 171
तिलक 172
आम 172
पाटल (पाड़र) 173
कोविदार (कचनार) 173
मुचुलिन्द 173
अर्जुन (ककुभ) 174
शीशम, शिंशपा 174
कुटज 175
नीलाशोक 175
हिन्ताल 176
तिनिश (स्यन्दन) 176
सेमल (चूर्णक या शाल्मली) 176
कदम्ब (नीप) 177
सरल या चीड़ 177
अंकोल 178
नारियल 178
करीर या करील 179
कमल 179
पद्मक 179
गोल मिर्च 180
बेर 180

खण्ड-7 : श्रीलंका

सरल या चीड़ 183
कनेर या करवीर 183

खजूर	184	खस	197
मुचुलिन्द	184	कल्पवृक्ष, पारिजात	198
कुटज	185	रक्तचन्दन	198
केतक (केवड़ा)	185	ताड़ (ताल)	198
पिप्पली, प्रियांगु	186	देवदारु या नीलाशोक	199
कदम्ब (नीप)	186	अश्वकर्ण, गर्जन	199
छितवन, सप्तपर्ण	187	तिलक	200
असन	188	अर्जुन (ककुभ)	200
कोविदार (कचनार)	188	जपा, गुड़हल	201
अशोक	188	बरगद (भंडीर)	201
साल	191	सेमल (चूर्णक या शाल्मली)	201
उद्दाल, लिसोड़ा (बहुवार)	193	कमल	202
नागकेसर (पुनांग)	193	पद्मक	202
आम	193	क्षौम (अलसी)	202
शीशम, शिंशपा	194	गूलर	203
चन्दन	194	बाँस	203
बकुल (मौलसिरी)	195	बेंत	203
पलाश (टेसू)	195	***सन्दर्भ ग्रन्थ***	***204***

खण्ड-1

अयोध्या से प्रयाग

अयोध्या उत्तर प्रदेश के फ़ैज़ाबाद जनपद में एवं प्रयाग उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जनपद में स्थित है। अयोध्या से प्रयाग तक की वृक्ष प्रजातियों में कोई अन्तर नहीं है। जो प्रजातियाँ अयोध्या में पायी जाती हैं वे प्रयाग में भी पायी जाती हैं। अतः अयोध्या से प्रयाग तक की प्रजातियों का वर्णन एक साथ किया जा रहा है।

1. साल (Shorea)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए साल शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Shorea robusta' है। इसे संस्कृत में अश्वकर्ण तथा हिन्दी में साल, साखू, सखवा आदि कहा जाता है। हिन्दू और बौद्ध धर्म में इसका विशेष महत्त्व है। कहा जाता है कि गौतम बुद्ध के जन्म के समय उनकी माँ महामाया साल के वृक्ष को पकड़े हुए थीं। यह दक्षिण एशिया की प्रमुख प्रकाष्ठ प्रजाति है जो समुद्रतल से 200 से 1200 मी. की ऊँचाई तक पाया जाता है। यह नम, लोमी एवं अच्छे जल निकास वाली मृदा में अच्छा विकास करता है। भारत में यह यमुना के पूर्व उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र से बिहार, बंगाल, असम, उड़ीसा एवं झारखण्ड तक पाया जाता है। हरियाणा के मोरनी पहाड़ी एवं केलसर वन क्षेत्र में साल के वन विद्यमान हैं। पूर्वी घाट के वन क्षेत्रों में भी साल के वृक्ष पाये जाते हैं। बिहार के सिंहभूमि ज़िले एवं नेपाल का साल प्रकाष्ठ सबसे अच्छा माना जाता है।

साल भारत की प्रमुख प्रकाष्ठ प्रजाति है। इसका घनत्व 3880 से 1050 कि.ग्रा. प्रति घनमीटर होता है। जहाँ भार सहन करने की आवश्यकता है, वहाँ यह अत्यन्त उपयोगी प्रजाति है। रेलवे स्लीपर, बीम, पुलों के निर्माण, ट्रक की बॉडी आदि में इसका व्यापक प्रयोग किया जाता है। जहाँ पर मज़बूती की आवश्यकता है तथा पालिश का विशेष महत्त्व नहीं है, वहाँ यह सर्वोत्तम प्रकाष्ठ है। दरवाज़े और खिड़कियों के फ्रेम के निर्माण में इसका प्रयोग होता है।

वाल्मीकि काल में अयोध्या से प्रयाग तक का क्षेत्र पूर्णतः साल वन क्षेत्र था। रावण वध के उपरान्त हनुमान जी पुष्पक विमान को छोड़कर स्वयं अयोध्या से प्रयाग आये। मार्ग में उन्हें भयानक साल वन क्षेत्र के दर्शन हुए–

सौपष्यद् रामतीर्थं च नदीं बालुकिनीं तथा।
वरूथीं गोमतीं चैव भीमं शालवनं तथा॥ (6/125/26)

मार्ग में उन्हें परशुराम तीर्थ, बालुकिनी, वरूथी, गोमती नदी और भयानक साल वन के दर्शन हुए।

भरत जी से मिलने के बाद हनुमान जी ने व्याकुल भरत जी को वानरों के आने की सूचना वानरों द्वारा साल वन को आन्दोलित करने से दी–

रजोवर्ष समुद्भूतं पश्य सालवनं प्रति।
मन्ये सालवनं रम्यं लोलयन्ति प्लवंगमाः ॥ (6/127/29)

उधर साल वन की ओर देखिए, कैसी धूल की वर्षा हो रही है? मैं समझता हूँ कि वानर लोग साल वन को आन्दोलित कर रहे हैं।

अयोध्या में घने वन क्षेत्र का उल्लेख वाल्मीकि जी ने कई बार किया है–

वधूनाटकसंश्चौश्च संयुक्तां सर्वतः पुरीम्।
उद्यानाम्रवणोपेतां महतीं सालमेखलाम् ॥ (1/5/12)

उस पुरी में ऐसी बहुत-सी नाटक मण्डलियाँ थीं, जिनमें केवल स्त्रियाँ ही नृत्य एवं अभिनय करती थीं। उस नगरी में चारों ओर उद्यान तथा आमों के बगीचे थे। लम्बाई और चौड़ाई की दृष्टि से वह पुरी बहुत विशाल थी तथा साखू के वन उसे सब ओर से घेरे हुए थे।

राम वनगमन के उपरान्त ननिहाल से अयोध्या आते समय साल वन क्षेत्र को पार कर अयोध्या पहुँचने का उल्लेख है–

एकसाले स्थाणुमतीं विनते गोमतीं नदीम्।
कलिंगनगरे चापि प्राप्य सालवनं तदा ॥ (2/71/16)

फिर एक साल नगर के पास स्थाणुमती और विनत ग्राम के निकट गोमती नदी को पार करके वे तुरन्त ही कलिंग नगर के पास साल वन में जा पहुँचे।

भरत-कैकेयी मिलन के समय भी साल के वृक्ष का उदाहरण दिया गया है, जो अयोध्या में साल वृक्ष की उपस्थिति का प्रमाण है–

तमार्तं देवसंकाशं समीक्ष्य पतितं भुवि।
निकृत्तमिव सालस्य स्कन्धं परशुना वने ॥ (2/72/22)
माता मातङ्गसंकाशं चन्द्रार्कसदृशं सुतम्।
उत्थापयित्वा शोकार्त वचनं चेदमब्रवीत् ॥ (2/72/23)

देवतुल्य भरत शोक से व्याकुल हो वन में फरसे से काटे गये साखू के तने की भाँति पृथ्वी पर पड़े थे, मतवाले हाथी के समान पुष्ट तथा चन्द्रमा या सूर्य के समान तेजस्वी अपने शोकाकुल पुत्र को इस तरह भूमि पर पड़ा देख माता कैकेयी ने उन्हें उठाया और इस प्रकार कहा–

बिहार के सिंहभूमि एवं दून घाटी में साल का प्राकृतिक पुनर्जनन पाया जाता है किन्तु देश के अन्य वन क्षेत्रों में इसका पुनर्जनन एक गम्भीर समस्या बनता जा रहा है। यह सत्य है कि प्राचीन काल में अयोध्या से प्रयाग तक सघन साल वन क्षेत्र विद्यमान थे किन्तु वर्तमान में अयोध्या (फ़ैज़ाबाद) से प्रयाग (इलाहाबाद) तक साल वन नहीं हैं। अयोध्या के पास के तराई क्षेत्र गोण्डा एवं बहराइच में साल वन क्षेत्र हैं किन्तु वहाँ भी साल का अच्छा पुनर्जनन नहीं है।

अयोध्या से प्रयाग तक साल वन क्षेत्र या साल के पौधे लगाने हेतु विशेष प्रयास करना होगा।

2. आम (Mango Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए आम्र एवं चूत शब्द का प्रयोग किया गया है। आम को उड़िया में 'अम्बो', मारवाड़ी में 'अम्बा', तमिल में 'मंगा', तेलुगु में 'ममिदी', गुजराती में 'आमरी', बंगला में 'आम', संस्कृत में 'आम्र' तथा कन्नड़ में 'माबू' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Mangifera indica' है। यह भारत का राष्ट्रीय फल है। आम पूरे भारत में पाया जाता है। अपने रंग-रूप, आकार-प्रकार एवं मिठास के कारण इसे 'फलों का राजा' कहा जाता है। इसके फल में विटामिन ए तथा विटामिन सी भरपूर मात्र में पाया जाता है। मीठे एवं स्वादिष्ट फलों के साथ यह शीतल छाया भी प्रदान करता है।

अपने गुणों के कारण आम को फलों का राजा कहा गया है। इसके फल से चटनी, अचार एवं मुरब्बा बनाया जाता है। इसकी लकड़ी प्लाइवुड, पैकिंग केस एवं दरवाज़े, खिड़कियाँ बनाने के काम आती है।

अयोध्या में चारों ओर आम के बगीचे थे–

वधूनाटकसंश्चौश्च संयुक्तां सर्वतः पुरीम्।
उद्यानाम्रवणोपेतां महतीं सालमेखलाम् ॥ (1/5/12)

उस पुरी में ऐसी बहुत-सी नाटक मण्डलियाँ थीं, जिनमें केवल स्त्रियाँ ही नृत्य एवं अभिनय करती थीं। उस नगरी में चारों ओर उद्यान तथा आमों के बगीचे थे। लम्बाई और चौड़ाई की दृष्टि से वह पुरी बहुत विशाल थी तथा साखू के वन उसे सब ओर से घेरे हुए थे।

अयोध्या में विशाल अशोक वाटिका थी जिसमें आम के विशाल वृक्ष थे–

चन्दनागुरुचूतैश्च तुङ्गकालेयकैरपि।
देवदारुवनैश्चापि समन्तादुपशोभिताम् ॥ (7/42/2)

चन्दन, अगुरु, आम, तुंग (नारियल), कालेयक (रक्तचन्दन) तथा देवदारु वन उसकी सब ओर से शोभा बढ़ा रहे थे।

कोकिलैर्भृङ्गराजैश्च नानावर्णैश्च पक्षिभिः।
शोभितां शतशश्चित्रां चूतवृक्षावतंसकैः ॥ (7/42/8)

कोकिल, भृंगराज आदि रंग-बिरंगे पक्षी उस वाटिका की शोभा थे, जो आम्र की डालियों के अग्रभाग पर बैठकर वहाँ विचित्र सुषमा की सृष्टि कर रहे थे।

इसके अतिरिक्त अयोध्या में आपसी वार्ता में आम का उल्लेख है–

आम्रं छित्त्वा कुठारेण निम्बं परिचरेत् तु कः।
यश्चैनं पयसा सिंचेन्नैवास्य मधुरो भवेत् ॥ (2/35/16)

भला आम को कुल्हाड़ी से काटकर उसकी जगह नीम का सेवन कौन करेगा? जो आम की जगह नीम को ही दूध से सींचता है, उसके लिए भी यह नीम मीठा फल देने वाला नहीं हो सकता (अतः वरदान के बहाने श्रीराम को वनवास देकर कैकेयी के चित्त को सन्तुष्ट करना राजा के लिए कभी सुखद परिणाम का जनक नहीं हो सकता)।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार प्राचीन काल में शुभ अवसरों पर वृक्षारोपण की परम्परा थी। श्रीराम के विवाह के उपरान्त अयोध्या में आम का रोपण किया गया–

सफल पूगफल कदलि रसाला।
रोपे बकुल कदम्ब तमाला ॥ (1/344)

श्रीराम के राज्याभिषेक के निर्णय के उपरान्त गुरु वशिष्ठ ने वृक्षारोपण का आदेश दिया–

सफल रसाल पूगफल केरा।
रोपहु वीथिन्ह पुर चहुँ फेरा ॥ (2/6)

अयोध्या में सुन्दर आम के बाग थे जहाँ श्रीराम विश्राम हेतु जाया करते थे–

हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई।
गये जहाँ सीतल अँवराई ॥ (7/49)

अयोध्या से प्रयाग (इलाहाबाद से फ़ैज़ाबाद) तक के राम वनगमन पथ पर पहले देशी आम के वृक्ष पर्याप्त मात्र में विद्यमान थे। वर्तमान में कलमी आम के बाग तो बहुत लगाये गये हैं किन्तु देशी आम धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं। राम वनगमन पथ पर अच्छी प्रकार के देशी आम के वृक्ष अवश्य लगाकर उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए जिससे पथिकों एवं स्थानीय लोगों को सुस्वादु फल के साथ छाया भी मिल सकेगी।

3. अशोक (Mast Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए अशोक शब्द का प्रयोग किया गया है। अशोक को उड़िया में 'ओशोको', तमिल में 'असोगाम', तेलुगु में 'कन्केली', गुजराती में 'अशोपालावा', बंगला में 'असोक', संस्कृत में 'असोक', मलयालम में 'असोकम', तथा कन्नड़ में 'अक्सुन्कर' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Saraca indica' है। संस्कृत विद्वान इसे 'हेमपुष्प' नाम से भी जानते हैं। अशोक सदाबहार वृक्ष है। यह समस्त भारत में पाया जाता है। इसका वृक्ष बड़ा सीधा एवं झोपड़ाकार होता है तथा यह पूरे वर्ष भर हराभरा रहता है। इसकी पतली-पतली टहनियों पर 3 से 6 जोड़े पत्ते रहते हैं। इसकी नयी टहनियाँ नीचे की ओर झुकी होती हैं। नयी टहनियों के पत्ते ताँबे जैसे सुन्दर लाल दिखते हैं। पुष्प सघन गुच्छों में आते हैं जो सुन्दर नारंगी रंग के होते हैं। भारत के मैदानी भागों, पहाड़ी क्षेत्रों, घाटियों, नदियों के किनारे एवं राजमार्गों के किनारे खाली भूमि पर यह पाया जाता है। यह एक प्रमुख शोभाकारी वृक्ष है।

अयोध्या में श्रीराम का भवन अशोक वाटिका से घिरा था। रावण वध के उपरान्त उस भवन को सुग्रीव को रहने हेतु दिया गया–

तच्च मद्भवनम् श्रेष्ठं साशोकवनिकं महत्।
मुक्तावैदूर्यसंकीर्णं सुग्रीवाय निवेदय ॥ (6/128/45)

भरत! मेरा जो अशोक वाटिका से घिरा हुआ मुक्ता एवं वैदूर्य मणियों से जटित विशाल भवन है, वह सुग्रीव को दे दो।

अयोध्या में सुन्दर अशोक वाटिका थी जिसमें अनेक सुन्दर वृक्ष विद्यमान थे–

स विसृज्य ततो रामः पुष्पकं हेमभूषितम्।
प्रविवेश महाबाहुरशोकवनिकां तदा ॥ (7/42/1)

सुवर्णभूषित विमान को विदा करके महाबाहु श्रीराम ने अशोकवनिका (अन्तःपुर के विहार योग्य उपवन) में प्रवेश किया।

चम्पकाशोकपुंनागमधूकपनसासनैः ।
शोभितांपारिजातैश्चविधूमज्वलनप्रभैः॥ (7/42/3)

चम्पा, अशोक, पुंनाग, महुआ, कटहल, असन तथा धूमरहित अग्नि के समान प्रकाशित होने वाले पारिजात से वह वाटिका सुशोभित थी।

कैकेयी के भवन में भी अशोक वाटिका का उल्लेख है–

शुकबर्हिसमायुक्तं क्रौञ्चहंसरुतायुतम् ॥ (2/10/12)
वादित्रस्वसंघुष्टं कुब्जावामनिकायुतम् ।
लतागृहैश्चित्रगृहैश्चम्पकाशोकशोभितैः ॥ (2/10/13)

उस भवन में तोते, मोर, क्रौञ्च और हंस आदि पक्षी कलरव कर रहे थे, वहाँ वाद्यों का मधुर घोष गूँज रहा था, बहुत-सी कुब्जा और बौनी दासियाँ भरी हुई थीं, चम्पा और अशोक से सुशोभित बहुत से लताभवन और चित्र मन्दिर उस महल की शोभा बढ़ा रहे थे।

इससे स्पष्ट है कि उस समय अशोक वाटिका स्थापित करने का प्रचलन था। शोभाकार वृक्ष के रूप में अयोध्या से प्रयाग तक अशोक के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

4. कल्पवृक्ष, पारिजात (Monkey-Bread Tree)

पारम्परिक रूप से Adansonia digitata प्रजाति को कल्पवृक्ष या पारिजात कहा जाता है। इसे अंग्रेज़ी में Monkey-bread tree कहते हैं। इसके पुष्प बड़े, भारी तथा सफ़ेद रंग के होते हैं। इसके फल 15 से 20 से.मी. तक के होते हैं। इसकी पत्तियाँ हाथ की अँगुलियों की तरह होती हैं। इसका फल 15 से 20 से.मी. तक लम्बा होता है। इसका फल खाया जाता है तथा इससे शरबत बनाया जाता है।

कहीं-कहीं पर कल्पवृक्ष को पारिजात या हरसिंगार (Night Jasmine) भी कहा गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Nyctanthes arbor-tristis' है। किन्तु वाल्मीकि रामायण में वर्णित पारिजात Adansonia digitata है।

वाल्मीकि रामायण में अयोध्या में पारिजात का उल्लेख है–

चम्पकाशोकपुंनागमधूकपनसासनैः ।
शोभितांपारिजातैश्चविधूमज्वलनप्रभैः॥ (7/42/3)

चम्पा, अशोक, पुंनाग, महुआ, कटहल, असन तथा धूमरहित अग्नि के समान प्रकाशित होने वाले पारिजात से वह वाटिका सुशोभित थी।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार वनगमन का लाभ बताते हुए श्रीराम ने कल्पतरु का उल्लेख किया है–

सेवहिं अरडु कलपतरु त्यागी ॥ (2/42)

अयोध्या के समीपवर्ती जनपद बाराबंकी से लगभग 45 कि.मी. दूर बडोसराय कस्बे से 2 किमी दूरी पर बरोलिया नामक ग्राम में विशाल पारिजात का वृक्ष है जो पाँच हज़ार वर्ष से भी अधिक पुराना है। यद्यपि वर्तमान में हमारे देश में पारिजात के अधिक वृक्ष नहीं हैं किन्तु बाराबंकी एवं कुछ अन्य स्थानों के इन वृक्षों से स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में हमारे देश में पारिजात के वृक्ष थे।

पारिजात के वृक्ष उगाना एवं उनकी सुरक्षा अपेक्षाकृत कठिन है। किन्तु विशेष प्रयास करके

पारिजात को उन स्थानों पर लगाया जा सकता है जहाँ देखभाल की विशेष व्यवस्था है। लखनऊ के आसपास कुछ स्थानों पर पारिजात के वृक्षों को रोपित किया गया है। मेरे द्वारा भी लखनऊ के आसपास के कुछ मन्दिरों में पारिजात के वृक्ष लगवाये गये हैं जो सफलतापूर्वक बढ़ रहे हैं। अतः अयोध्या से प्रयाग के बीच भी जहाँ पर देखभाल की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो वहाँ पर विशेष प्रयास करके पारिजात लगाया जा सकता है।

5. बरगद, भंडीर (Banyan Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए न्यग्रोध एवं भण्डीर शब्द का प्रयोग किया गया है। बरगद को कन्नड़ में 'गोडिमर', गुजराती में 'वड', तमिल में 'आलमर', तेलुगु में 'वटी', बंगला में 'बड़गाछ', मराठी में 'वडा', मलयालम में 'वाटाम' तथा संस्कृत में 'वट' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Ficus bengalensis' है। इसका पौराणिक नाम 'न्यग्रोध' है। यह विशाल आकार का दीर्घायु वृक्ष है। इसकी जटा और शाखाएँ मिलकर स्वतन्त्र वृक्ष बन जाते हैं। पत्ते चौड़े गोलाकार और मोटापन लिए होते हैं। फल छोटे मध्यम आकार के और पकने पर चमकीले लाल रंग के होते हैं। यह भारत में सर्वत्र पाया जाता है। इसकी हवाई जड़ें धरती तक जाती हैं तथा मिट्टी से मिलकर अलग तने का रूप ले लेती हैं। मुख्य तना धीरे-धीरे सूख जाता है और उसका स्थान अनेक नये तने ले लेते हैं। इसकी शाखाएँ एवं पत्ते पशुओं का चारा हैं। यह दीर्घायु वृक्ष है तथा इसकी छाया असाधारण है। पहले गाँव में बरगद की छाया में सभाएँ होती थीं।

अयोध्या से प्रयाग के मार्ग के वन क्षेत्र में वट (बरगद) के वृक्ष विद्यमान थे। श्रीराम ने केवट से जटा बनाने हेतु बरगद का दूध मँगाया–

सोऽहं गृहीत्वा नियमं तपस्विजनभूषणम्।
हितकामः पितुर्भूयः सीताया लक्ष्मणस्य च॥ (2/52/67)
जटाः कृत्वा गमिष्यामि न्यग्रोधक्षीरमानय।
तत्क्षीरं राजपुत्रय गुहः क्षिप्रमुपाहरत्॥ (2/52/68)

अतः फल-मूल का आहार और पृथ्वी पर शयन आदि नियमों को ग्रहण करके मैं सीता और लक्ष्मण की अनुमति लेकर पिता का हित करने की इच्छा से सिर पर तपस्वी जनों के आभूषण रूप जटा धारण करके यहाँ से वन को जाऊँगा। मेरे केशों को जटा का रूप देने के लिए तुम बड़ का दूध ला दो। गुह ने तुरन्त ही बड़ का दूध लाकर श्रीराम को दिया।

अयोध्या से प्रयाग के मार्ग के वन क्षेत्र में श्रीराम ने वट (बरगद) के वृक्ष के नीचे निवास किया–

ततस्तत्र समासीनौ नातिदूरे निरीक्ष्य ताम्।
न्यग्रोधे सुकृतां शय्यां भेजाते धर्मवत्सलौ॥ (2/53/33)

तदनन्तर वहाँ बैठे हुए धर्मवत्सल सीता और श्रीराम ने थोड़ी ही दूर पर वटवृक्ष के नीचे लक्ष्मण द्वारा सुन्दर ढंग से निर्मित हुई शय्या देखकर उसी का आश्रय लिया (अर्थात् वे दोनों वहाँ जाकर सो गये।)।

बरगद का वृक्ष अत्यन्त विशाल होता है इसलिए जहाँ पर पर्याप्त स्थान हो वहाँ इसे लगाया जाना चाहिए।

6. चन्दन (Sandalwood)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए चन्दन शब्द का प्रयोग किया गया है। यह कर्नाटक एवं तमिलनाडु आदि राज्यों में 4000 फीट तक की ऊँचाई तक पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Santalum album' है। इसकी ऊँचाई 20 से 30 फीट तक होती है। यह अर्धपराश्रयी स्वरूप का होता है। यह आसपास की झाड़ी, घास एवं वृक्षों से कुछ अंशों में पोषक द्रव्यों का शोषण करता है। इसकी छाल काला रंग लिए भूरे रंग की तथा लकड़ी तेल युक्त एवं सारा भाग पीलापन लिए भूरे रंग का तथा सुगन्धित होता है। इसके प्राप्त होने वाले तेल के कारण यह अत्यन्त मँहगी तथा महत्त्वपूर्ण प्रजाति है।

अयोध्या के अशोक वन में चन्दन के वृक्ष थे–

चन्दनागुरुचूतैश्च तुङ्गकालेयकैरपि।
देवदारुवनैश्चापि समन्तादुपशोभिताम् ॥ (7/42/2)

चन्दन, अगुरु, आम, तुंग (नारियल), कालेयक (रक्तचन्दन) तथा देवदारु वन उसकी सब ओर से शोभा बढ़ा रहे थे।

श्रीराम को वनवास से वापस लाने हेतु वन जाते समय भरत जी ने मार्ग में चन्दन मिश्रित जल छिड़कवाया–

ससुधाकुट्टिमतलः प्रपुष्पितमहीरुहः।
मत्तोद्घुष्टद्विजगणः पताकाभिरलंकृतः ॥ (2/80/13)
चन्दनोदकसंसिक्तो नानाकुसुमभूषितः।
बह्वशोभत सेनायाः पन्थाः सुरपथोपमः ॥ (2/80/14)

इस प्रकार सेना का वह मार्ग देवताओं के मार्ग की भाँति अधिक शोभा पाने लगा। उसकी भूमि पर चूना-सुर्खी और कंकरीट बिछाकर उसे कूट-पीटकर पक्का कर दिया गया था। उसके किनारे-किनारे फूलों से सुशोभित वृक्ष लगाये गये थे। वहाँ के वृक्षों पर मतवाले पक्षी चहक रहे थे। सारे मार्ग को पताकाओं से सजा दिया गया था, उस पर चन्दनमिश्रित जल का छिड़काव किया गया था तथा अनेक प्रकार के फूलों से वह सड़क सजायी गयी थी।

यद्यपि प्राकृतिक रूप से चन्दन अयोध्या से प्रयाग के बीच नहीं पाया जाता किन्तु इस क्षेत्र में कहीं-कहीं पर चन्दन के वृक्ष लगाये गये हैं। अतः अयोध्या से प्रयाग के बीच भी जहाँ पर देखभाल की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो वहाँ पर विशेष प्रयास करके चन्दन लगाया जा सकता है।

7. रक्तचन्दन (Red Sandal wood)

इसका वानस्पतिक नाम 'Pterocarpus santalinus' है। यह मध्यम आकार का वृक्ष है। इसकी शाखाएँ कोमल, पत्रक 5 से.मी. से 10 से.मी. तथा फूल छोटे होते हैं। फलियों में गुंजा जैसे लाल बीज होते हैं। लाल चन्दन के टुकड़े को जल से घिसने पर लाल रंग निकलता है।

अयोध्या के अशोक वन में रक्तचन्दन के वृक्ष थे–

चन्दनागुरुचूतैश्च तुङ्गकालेयकैरपि।
देवदारुवनैश्चापि समन्तादुपशोभिताम् ॥ (7/42/2)

चन्दन, अगुरु, आम, तुंग (नारियल), कालेयक (रक्तचन्दन) तथा देवदारु वन उसकी सब ओर से शोभा बढ़ा रहे थे।

यद्यपि प्राकृतिक रूप से रक्तचन्दन अयोध्या से प्रयाग के बीच नहीं पाया जाता किन्तु इस क्षेत्र में कहीं-कहीं पर चन्दन के वृक्ष लगाये गये हैं। अतः अयोध्या से प्रयाग के बीच भी जहाँ पर देख भाल की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो वहाँ पर विशेष प्रयास करके रक्तचन्दन लगाया जा सकता है।

8. अगर (Eagle Wood, Aloe Wood)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए अगुरु शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे हिन्दी में अगर या काला अगर, बंगला में अगरुचन्दन, मराठी में अगर एवं गुजराती में अगर कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Aquilaria agallocha' है। यह पूर्वी भारत मुख्यतः सिक्किम, पश्चिम बंगाल, अरुणांचल प्रदेश तथा आसाम में पाया जाता है। इसका वृक्ष विशाल तथा लकड़ी मुलायम एवं पीलापन लिए सफ़ेद होती है। इसके पुष्प सफ़ेद रंग के होते हैं तथा गुच्छों में आते हैं। फल अण्डाकार एवं मृदु रोम से भरे होते हैं।

इसके काष्ठ से आसवन (distillation) द्वारा 0.09 से 2.19 प्रतिशत तक तेल निकाला जाता है। इसका प्रयोग दवाओं, सुगन्ध प्रदान करने तथा इत्र आदि बनाने के काम आता है। वाष्प शील तेलों को अवाष्प शील बनाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

अयोध्या के अशोक वन में अगर के वृक्ष थे–

चन्दनागुरुचूतैश्च तुङ्गकालेयकैरपि।
देवदारुवनैश्चापि समन्तादुपशोभिताम् ॥ (7/42/2)

चन्दन, अगुरु, आम, तुंग (नारियल), कालेयक (रक्तचन्दन) तथा देवदारु वन उसकी सब ओर से शोभा बढ़ा रहे थे।

यद्यपि प्राकृतिक रूप से अगर अयोध्या से प्रयाग के बीच नहीं पाया जाता किन्तु जहाँ पर देखभाल की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो वहाँ पर विशेष प्रयास करके अगर लगाया जा सकता है।

9. नारियल (Coconut)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए नारिकेल एवं तुङग शब्द का प्रयोग किया गया है। नारियल को मराठी में 'नारल', तमिल में 'तेन्नमारम', तेलुगु में 'नारिकेलमु', गुजराती में 'नारियल', बंगला में 'नारिकेल', संस्कृत में 'नारिकेल', मलयालम में 'तेंगा', तथा कन्नड़ में 'टेंगू' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Cocos nucifera' है। यह समुद्रतट के आस-पास मुख्यतः केरल, आन्ध्र प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, तमिलनाडु एवं दमन दीव में बहुतायत में पाया जाता है। भारतीय संस्कृति एवं रीति-रिवाज में नारियल का बड़ा महत्त्व है। यह शुभ माना जाता है तथा पूजा-पाठ एवं मांगलिक अवसरों पर इसका विशेष महत्त्व है। इसका फल नारियल ऊँचाई पर गुच्छों में मज़बूत डंठल के साथ लगता है। कच्चा फल

हरा, बाहरी भाग चिकना एवं अन्दर की गिरी मज़बूत कवच से सुरक्षित रहती है। पानी सूखने के साथ गिरी परिपक्व हो जाती है तथा छिलका उतारकर नारियल के गोले के रूप में प्रयुक्त होती है।

अयोध्या के अशोक वन में नारियल के वृक्ष थे–

चन्दनागुरुचूतैश्च तुङ्गकालेयकैरपि।
देवदारुवनैश्चापि समन्तादुपशोभिताम् ॥ (7/42/2)

चन्दन, अगुरु, आम, तुंग (नारियल), कालेयक (रक्तचन्दन) तथा देवदारु वन उसकी सब ओर से शोभा बढ़ा रहे थे।

वर्तमान में नारियल केवल समुद्र तट पर ही पाया जाता है। उत्तर भारत में इसका रोपण सफल नहीं है।

10. देवदारु

वाल्मीकि रामायण के अनेक श्लोकों में देवदारु का उल्लेख आया है। वर्तमान काल में जिस वृक्ष को देवदार कहा जाता है, उसका वानस्पतिक नाम 'Cedrus deodara' है। यह हमारे देश के कश्मीर, उत्तराखण्ड एवं हिमांचल प्रदेश में 1500 से 3200 मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है। हिमालय क्षेत्र में 1500 मीटर ऊँचाई के नीचे भारत के किसी अन्य क्षेत्र में इसके पाये जाने की कोई सम्भावना नहीं दिखती है।

अशोक की एक और प्रजाति भारत के प्रायः सभी क्षेत्रों में पायी जाती है जिसका वानस्पतिक नाम 'Polyalthia longifolia' है। इसका वृक्ष सीधा खड़ा होता है। इसकी शाखायें सघन नहीं होतीं। इसकी छाल पतली और लकड़ी पीलापन लिए सफ़ेद होती है। पत्ते 15 से 25 से.मी. तक लम्बे लहरदार, धार वाले तथा चमकीले होते हैं। इसे कहीं-कहीं पर हिन्दी में एवं बंगला में देवदारु कहा जाता है। इसे आजकल भी वाटिकाओं में लगाया जाता है। अतः वाल्मीकि रामायण में वर्णित देवदारु अशोक की यही प्रजाति है। वाल्मीकि रामायण में देवदारु का उल्लेख निम्नानुसार आया है–

अयोध्या के अशोक वन में देवदारु के वृक्ष थे–

चन्दनागुरुचूतैश्च तुङ्गकालेयकैरपि।
देवदारुवनैश्चापि समन्तादुपशोभिताम् ॥ (7/42/2)

चन्दन, अगुरु, आम, तुंग (नारियल), कालेयक (रक्तचन्दन) तथा देवदारु वन उसकी सब ओर से शोभा बढ़ा रहे थे।

अशोक की यह शोभाकार प्रजाति अयोध्या से प्रयाग के बीच में लगाये जाने चाहिए।

11. चम्पा (Michelia Champaka)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए चम्पक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Michelia champaka or Magnolia champaka' है। यह भारत के मैदानी, पूर्वी तथा पश्चिमी हिमालय क्षेत्रों में पाया जाता है। इसके वृक्ष मध्यम से छोटे आकार के होते हैं। इसके पुष्प ग्रीष्म ऋतु

में एकल, बड़े तथा औसतन 5 से 6 से.मी. व्यास के हल्के पीले रंग के होते हैं। इस वृक्ष के पुष्प का समय मार्च से मई तक का होता है। इसकी लकड़ियों से खूबसूरत फर्नीचर, पेंसिल तथा बॉबिन बनाये जाते हैं। चम्पा के तेल का उपयोग साबुन बनाने में होता है तथा इसके पुष्पों से इत्र निकाला जाता है। पुष्प का प्रयोग डाई बनाने में भी किया जाता है। वाल्मीकि रामायण में इसके लिए चम्पक शब्द का प्रयोग किया गया है।

अयोध्या में कैकेयी के भवन में चम्पा का वर्णन आया है–

शुकबर्हिसमायुक्तं क्रौञ्चहंसरुतायुतम् ॥ (2/10/12)
वादित्रवसंघुष्टं कुब्जावामनिकायुतम्।
लतागृहैश्चित्रगृहैश्चम्पकाशोकशोभितैः ॥ (2/10/13)

उस भवन में तोते, मोर, क्रौञ्च और हंस आदि पक्षी कलरव कर रहे थे, वहाँ वाद्यों का मधुर घोष गूँज रहा था, बहुत-सी कुब्जा और बौनी दासियाँ भरी हुई थीं, चम्पा और अशोक से सुशोभित बहुत से लताभवन और चित्रमन्दिर उस महल की शोभा बढ़ा रहे थे।

अयोध्या की अशोक वाटिका में चम्पा के वृक्ष थे–

चम्पकाशोकपुंनागमधूकपनसासनैः।
शोभितां पारिजातैश्च विधूमज्वलनप्रभैः ॥ (7/42/3)

चम्पा, अशोक, पुंनाग, महुआ, कटहल, असन तथा धूमरहित अग्नि के समान प्रकाशित होने वाले पारिजात से वह वाटिका सुशोभित थी।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीराम के वियोग में भरत की स्थिति को स्पष्ट करते हुए चम्पा का उल्लेख किया है–

तेहिं पुर बसत भरत बिनु रागा।
चंचरीक जिमि चंपक बागा ॥ (2/324)

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि चम्पा का वृक्ष उस समय का प्रमुख शोभाकारी वृक्ष था तथा इसके फूलों का उपयोग शृंगार हेतु प्रमुखता से किया जाता था।

अयोध्या से प्रयाग के बीच में सुन्दर फूलों एवं शोभाकारी वृक्षों के रूप में चम्पा को लगाया जाना चाहिए।

12. नागकेसर (Cobra's Saffron)

कतिपय विद्वानों के अनुसार नागकेसर एवं पुंनाग एक ही प्रजाति है किन्तु वस्तुतः दोनों अलग प्रजातियाँ हैं। नागकेसर भारत में पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह पूर्वी हिमालय, असम एवं दक्षिण भारत में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Mesua ferrea' है। इसका वृक्ष छोटा एवं सुन्दर होता है तथा सदा हरा-भरा रहता है। इसकी छाल सीधी, चिकनी एवं राख के रंग की होती है। इसके पत्ते 3 से 5 इंच तक लम्बे, भालाकार एवं तीक्ष्णाग्र युक्त होते हैं। इनकी ऊपरी सतह चमकीली एवं नीचे का भाग श्वेताभ होता है। शिराएँ सघन तथा स्पष्ट होती हैं। नये पत्ते लाल होते हैं। फूल वसन्त ऋतु में आते हैं तथा 1 से 3 इंच के घेरे में सुगन्धित तथा श्वेत रंग के होते हैं। इन्हीं फूलों के भीतर केसरिया रंग के नरकेसर के गुच्छ को नागकेसर कहते हैं। यही असली पीला नागकेसर है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में नागकेसर के वृक्ष थे–

लोध्रनीपार्जुनैर्नागैः सप्तपर्णातिमुक्तकैः।
मन्दारकदलीगुल्मलताजालसमावृताम् ॥ (7/42/4)

लोध, कदम्ब, अर्जुन, नागकेसर, छितवन, अतिमुक्तक, मन्दार, कदी तथा गुल्मों और लताओं के समूह उसमें सब ओर व्याप्त थे।

13. पुंनाग (Ball Tree)

कतिपय विद्वानों के अनुसार नागकेसर एवु पुंनाग एक ही प्रजाति है किन्तु वस्तुतः दोनों अलग प्रजातियाँ हैं। पुंनाग 8 से 10 मीटर ऊँचाई वाला एक शोभाकारी वृक्ष है। इसका वानस्पतिक नाम (Calophyllum inophyllum) है। यह भारत के समुद्रीतट पर पाया जाता है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में पुंनाग के वृक्ष थे–

कर्णिकारवनैर्दीप्तैः कदम्बबकुलैस्तथा।
चम्पकाशोकपुंनागमधूकपनसासनैः।
शोभितां पारिजातैश्च विधूमज्वलनप्रभैः ॥ (7/42/3)

चम्पा, अशोक, पुंनाग, महुआ, कटहल, असन तथा धूमरहित अग्नि के समान प्रकाशित होने वाले पारिजात से वह वाटिका सुशोभित थी।

अयोध्या से प्रयाग के मार्ग में इसे कुछ स्थानों पर लगाया जाना चाहिए।

14. महुआ (Butter Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए मधूक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Madhuca indica' है। पर्वतीय क्षेत्रों को छोड़कर यह लगभग पूरे भारत में पाया जाती है। यह एक विशाल धीरे-धीरे बढ़ने वाला वृक्ष है। मार्च एवं अप्रैल में फूल आने प्रारम्भ होते हैं तथा जून से अगस्त के बीच फल विकसित हो जाते हैं। महुआ के फूल को सुखाकर एवं आटा बनाकर खाया जाता है। इसका फूल जंगली भालू को विशेष पसन्द है। इसके बीजों से तेल निकलता है जिसका 'घी' की तरह प्रयोग किया जाता है। इसे आदिवासी विशेष पसन्द करते हैं। इसके फूलों से शराब बनाई जाती है। इसकी लकड़ी मज़बूत होती है तथा दरवाज़े एवं खिड़की बनाने के काम आती है। आदिवासी क्षेत्रों का यह विशेष भोजन है तथा वे इसे विशेष पसन्द करते हैं।

अयोध्या की अशोक वाटिका में महुआ के वृक्ष थे–

चम्पकाशोकपुंनागमधूकपनसासनैः।
शोभितां पारिजातैश्च विधूमज्वलनप्रभैः ॥ (7/42/3)

चम्पा, अशोक, पुंनाग, महुआ, कटहल, असन तथा धूमरहित अग्नि के समान प्रकाशित होने वाले पारिजात से वह वाटिका सुशोभित थी।

पहले अयोध्या से प्रयाग तक महुआ के बड़े बाग थे। मार्ग में प्रतापगढ़ जनपद महुआ से भरा था। महुआ धीरे बढ़ने वाली प्रजाति है, इसलिए अब कोई इसे नहीं लगा रहा है। महुआ के अधिकतर

बाग समाप्त हो गये हैं। जो बचे हैं वह भी समाप्त होने के कगार पर हैं। अतः अयोध्या से प्रयाग के बीच में विशेष प्रयास करके महुआ को लगाकर उसे बचाने का प्रयास करना चाहिए, ताकि यह महत्त्वपूर्ण प्रजाति बची रहे।

15. कटहल (Jackfruit)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए पनस शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Artocarpus heterophyllus' है। यह वृक्ष अपने फल के लिए व्यापक रूप से लगाया जाता है। इसका फल मार्च-अप्रैल में आता है तथा अगस्त-सितम्बर तक पक जाता है। पका कटहल फल खाया जाता है। कच्चे फल की सब्ज़ी एवं अचार बनता है। अधिक पका फल जानवरों को खिलाया जाता है। इसकी छाया घनी होती है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में कटहल के वृक्ष थे–

चम्पकाशोकपुंनागमधूकपनसासनैः।
शोभितां पारिजातैश्च विधूमज्वलनप्रभैः॥ (7/42/3)

चम्पा, अशोक, पुंनाग, महुआ, कटहल, असन तथा धूमरहित अग्नि के समान प्रकाशित होने वाले पारिजात से वह वाटिका सुशोभित थी।

कटहल का वृक्ष अपने फल हेतु देश के मैदानी भागों में सर्वत्र लगाया जाता है। स्थान-स्थान पर अयोध्या से प्रयाग के बीच में इसे लगाया जा सकता है।

16. असन (Indian Laural)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए असन शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Terminalia tomentosa' है। यह एक विशाल पर्णपाती वृक्ष है। इसकी छाल लगभग 2.5 से.मी. मोटी कालापन लिए भूरी होती है। यह लगभग पूरे भारत में 1,000 मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है। यह नम भूमि पर पाया जाता है। यह वृक्ष 40 मीटर तक ऊँचाई प्राप्त करता है। इसकी पत्तियाँ 15 से.मी. तक लम्बी होती हैं जो प्रायः चारे के लिए काटी जाती हैं। इसकी छाल से चरपरा गोंद निकलता है। इससे प्राप्त गोंद धूनी के रूप में जलाया जाता है तथा सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माण में प्रयोग किया जाता है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में असन के वृक्ष थे–

चम्पकाशोकपुंनागमधूकपनसासनैः।
शोभितां पारिजातैश्च विधूमज्वलनप्रभैः॥ (7/42/3)

चम्पा, अशोक, पुंनाग, महुआ, कटहल, असन तथा धूमरहित अग्नि के समान प्रकाशित होने वाले पारिजात से वह वाटिका सुशोभित थी।

अयोध्या से प्रयाग के बीच स्थान-स्थान पर इसे लगाया जा सकता है।

17. लोध (Symplocos Bark)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए लोध्र एवं शुक्लद्रुम शब्द का प्रयोग किया गया है। यह भारत के दक्षिण एवं पूर्वी भाग में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Symplocos racemosa' है। इसका वृक्ष 20 फीट तक ऊँचा होता है। छाल खुरदरी तथा गहरे भूरे रंग की होती है। पत्ते 3 से 7 इंच लम्बे अण्डाकार होते हैं। अक्टूबर-नवम्बर में पीले सुगन्धित फूल आते हैं।

अयोध्या की अशोक वाटिका में लोध के वृक्ष थे–

लोध्रनीपार्जुनैर्नागैः सप्तपर्णातिमुक्तकैः।
मन्दारकदलीगुल्मलताजालसमावृताम् ॥ (7/42/4)

लोध, कदम्ब, अर्जुन, नागकेसर, छितवन, अतिमुक्तक, मन्दार, कदली (केला) तथा गुल्मों और लताओं के समूह उसमें सब ओर व्याप्त थे।

आयुर्वेदिक महत्त्व का यह वृक्ष वर्तमान में पूर्वोत्तर भारत में पाया जाता है। किन्तु इसे अयोध्या से प्रयाग के बीच कहीं-कहीं पर लगाने का प्रयास करना चाहिए।

18. कदम्ब (नीप) (Cadamba Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए प्रियक, नीप एवं कदम्ब शब्द का प्रयोग किया गया है। कदम्ब को संस्कृत में कदम्ब, नीप एवं इलिप्रिय आदि कहते हैं। इसे देश के सभी स्थानों पर उगाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Anthocephalus cadamba' है। यह विशाल पर्णपाती वृक्ष है जो पश्चिम बंगाल, उड़ीसा एवं आन्ध्र प्रदेश में मुख्य रूप से पाया जाता है। यह 45 मीटर तक ऊँचा एक प्रमुख छायादार वृक्ष है। इसके तने का व्यास 1 मीटर तक होता है। इसके पत्ते लगभग 15 से 30 से.मी. लम्बे होते हैं। पुष्पगुच्छ मई से जुलाई तक गहरे पीले रंग के होते हैं। इनका व्यास 4.5 से.मी. तक होता है। कच्चे फल हरे रंग के तथा पकने पर हलके नारंगी रंग के हो जाते हैं।

दार्जिलिंग में इसका उपयोग चाय के बक्से बनाने हेतु किया जाता है। इसका प्रकाष्ठ भवन निर्माण में प्रयोग किया जाता है। इसका रोपण सड़कों के किनारे छायादार एवं शोभाकार वृक्ष के रूप में होता है। इसका उपयोग पेन्सिल निर्माण में किया जाता है। यह भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ी प्रजाति है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में कदम्ब के वृक्ष थे–

लोध्रनीपार्जुनैर्नागैः सप्तपर्णातिमुक्तकैः।
मन्दारकदलीगुल्मलताजालसमावृताम् ॥ (7/42/4)

लोध, कदम्ब, अर्जुन, नागकेसर, छितवन, अतिमुक्तक, मन्दार, कदली (केला) तथा गुल्मों और लताओं के समूह उसमें सब ओर व्याप्त थे।

प्रियङ्गुभिः कदम्बैश्च तथा च बकुलैरपि।
जम्बूभिर्दाडिमैश्चैव कोविदारैश्च शोभिताम् ॥ (7/42/5)

प्रियंगु, कदम्ब, बकुल, जामुन, अनार और कोविदार आदि वृक्ष उस उपवन को सुशोभित करते थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार प्राचीन काल में शुभ अवसरों पर वृक्षारोपण की परम्परा थी। श्रीराम के विवाह के उपरान्त अयोध्या में कदम्ब का रोपण किया गया–

सफल पूगफल कदलि रसाला।
रोपे बकुल कदम्ब तमाला ॥ (1/344)

अयोध्या की अशोक वाटिका में नीप और कदम्ब का उल्लेख अलग-अलग आया है किन्तु विद्वानों के मतानुसार दोनों एक हैं। आजकल पथ वृक्षारोपण में कदम्ब को लगाया जा रहा है। अयोध्या से प्रयाग के बीच व्यापक रूप से कदम्ब लगाया जाना चाहिए।

19. अर्जुन (ककुभ) (Arjuna Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए अर्जुन एवं ककुभ शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में ककुभ एवं हिन्दी में अर्जुन कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Terminalia arjuna' है। यह लगभग पूरे देश में उप हिमालय क्षेत्र तक पाया जाता है। यह मुख्यतः हिमालय की तराई, मध्य भारत, महाराष्ट्र एवं तमिलनाडु के जंगलों में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। इसे सड़कों के किनारे भी लगाया जाता है। अर्जुन नदियों के किनारे, कटाव वाली भूमि पर तथा सूखे नदी नालों के किनारे पाया जाता है। नदियों के किनारे की एलुवियल लोम मृदा इसकी वृद्धि हेतु सर्वाधिक उपयोगी है। उन क्षेत्रों में जहाँ पानी का ठहराव चार से पाँच माह तक रहता है, वहाँ अर्जुन सफलतापूर्वक चलता है। मध्यम ऊसर भूमि में भी इसका उत्पादन हो जाता है। इसकी छोटी शाखाएँ नीचे की ओर लटकी होती हैं। फूल अप्रैल से जुलाई तक आते रहते हैं तथा फल फरवरी से मई तक पकते हैं। यह 18 से 25 मीटर ऊँचा विशाल वृक्ष है। इसकी छाल बाहर से श्वेताभ तथा अन्दर से चिकनी, मोटी एवं हलके गुलाबी रंग की होती है जो परतों में निकलती है। इसकी पत्तियाँ लगभग अभिमुख 7.5 से 20 से.मी. तक लम्बी, आयताकार या अण्डाकार होती हैं। पुष्प पीताभ तथा फल देखने में कमरख की तरह होते हैं।

इसकी लकड़ी मज़बूत होती है तथा इसका प्रयोग मकान निर्माण एवं बैलगाड़ी के पहिये आदि बनाने में किया जाता है। इसका प्रकाष्ठ गाढ़े भूरे रंग का होता है। इसका घनत्व 870 कि.ग्रा. प्रति घन मीटर है। इसकी छाल में 20 से 24 प्रतिशत तक टैनिन होता है। इस टैनिन से बना चमड़ा, जूतों के ऊपरी चमड़े तथा तलों के लिए बहुत उपयोगी है। इसकी छाल हृदय रोग के लिए उत्तम औषधि है। यह हृदय की तीव्र धड़कन को शान्त करती तथा हृदय को विश्राम प्रदान करती है। इसकी छाल से हृदय रोग, अतिसार एवं पेचिश की औषधि बनती है। इसे सड़कों के किनारे छाया के लिए लगाया जाता है। अर्जुन के वृक्ष पर 'टसर' के कीड़े पाले जाते हैं। इसकी पत्तियों पर टसर के ककून तैयार किये जाते हैं। 'टसर' के कीड़ों के पालन हेतु इसका व्यापक रोपण किया जाता है। टसर हेतु इसका रोपण दूरी 1.20 से 1.50 तथा 1.20 से 2.00 मीटर तक रखना चाहिए जिससे तीसरे वर्ष में डालियाँ एक-दूसरे को छूने लगें। तीसरे वर्ष से इन पौधों पर टसर के कीड़े छोड़े जा सकते हैं।

अयोध्या की अशोक वाटिका में अर्जुन के वृक्ष थे–

लोध्रनीपार्जुनैर्नागैः सप्तपर्णातिमुक्तकैः।
मन्दारकदलीगुल्मलताजालसमावृताम् ॥ (7/42/4)

लोध, कदम्ब, अर्जुन, नागकेसर, छितवन, अतिमुक्तक, मन्दार, कदली (केला) तथा गुल्मों और लताओं के समूह उसमें सब ओर व्याप्त थे।

अयोध्या से प्रयाग के बीच में जहाँ नीची भूमि हो, वहाँ पर अर्जुन का रोपण करना चाहिए।

20. छितवन, सप्तपर्ण (Devil's Tree, Scholar's Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए सप्तपर्ण एवं सप्तच्छद शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में सप्तपर्ण एवं हिन्दी में सतौना या छितवन भी कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Alstonia scholaris' है। यह पश्चिमी समुद्र के तटीय वनों में अधिक पाया जाता है। इसका वृक्ष विशाल, सदाहरित एवं सीधा होता है। इसकी नवीन छाल भूरे रंग की तथा पुरानी छाल खुरदरी एवं फटी होती है। इसकी छाल पर प्रायः अनेक गोल सफ़ेद धब्बे पाये जाते हैं। पत्तियाँ चक्रीय क्रम में होती हैं तथा प्रत्येक चक्र में 5 से 7 पत्तियाँ होती हैं। पत्तियाँ चमड़ीली, 10 से 20 से.मी. लम्बी तथा 2.5 से 3.75 से.मी. चौड़ी होती हैं। पत्तियाँ आयताकार, भालाकार तथा चमकीले हरे रंग की होती हैं। पत्तियों तथा तने से दूध जैसा पदार्थ निकलता है जो जहरीला होता है। फूल अक्टूबर-नवम्बर में आते हैं, सुगन्धित होते हैं तथा हरापन लिए सफ़ेद होते हैं। फलियाँ दो-दो एक साथ, नीचे लटकी हुई तथा 30 से.मी. तक लम्बी होती हैं। बीज पतले तथा चपटे होते हैं जिसके चारों ओर रुई लगी होती है। पकने पर फल स्वयं फट जाते हैं तथा बीज बिखर जाते हैं।

इसका उपयोग स्लेट बनाने में किया जाता है। चाय के बक्से, फर्नीचर आदि बनाने में इसका उपयोग किया जाता है। इसकी छाल दीता नाम से प्रसिद्ध है और यह पुराने अतिसार तथा पेचिश में लाभकारी है।

अयोध्या के अशोक वाटिका में छितवन के वृक्ष थे—

लोध्रनीपार्जुनैर्नागैः सप्तपर्णातिमुक्तकैः।
मन्दारकदलीगुल्मलताजालसमावृताम् ॥ (7/42/4)

लोध, कदम्ब, अर्जुन, नागकेसर, छितवन, अतिमुक्तक, मन्दार, कदली (केला) तथा गुल्मों और लताओं के समूह उसमें सब ओर व्याप्त थे।

वर्तमान में देश के लगभग सभी भागों में छितवन का वृक्ष लगाया जाता है। अयोध्या से प्रयाग के बीच छितवन को लगाया जाना चाहिए।

21. अतिमुक्तक

संस्कृत में इसे माधवी, वासन्ती, अतिमुक्त, विमुक्त आदि तथा हिन्दी में इसे सामान्यतया माधवी लता कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Hiptage madablota' है। यह मुख्य रूप से पूर्वी एवं दक्षिणी भारत में पायी जाती है। इसकी लता बहुत विस्तार से फैलने वाली होती है तथा निकटवर्ती वृक्ष को शीघ्र ही ढक लेती है। इसके पत्ते अण्डाकार, लगभग 8 से 15 से.मी. तक लम्बे तथा 6-7 से.मी. चौड़े होते हैं। इसके पुष्प श्वेत एवं सुगन्धित होते हैं।

वाल्मीकि रामायण में अतिमुक्तक का प्रयोग लता के लिए न होकर वृक्ष के लिए हुआ है। संस्कृत विद्वानों द्वारा अतिमुक्तक शब्द से दो प्रजातियाँ बताई गयी हैं—सन्दन तथा काला तेन्दू। इन प्रजातियों के सम्बन्ध में विवरण निम्न प्रकार है—

सन्दन

इसका वानस्पतिक नाम 'Ougenia ougensis या Ougenia dalbergioides' है। यह एक महत्त्वपूर्ण चारा एवं प्रकाष्ठ प्रजाति है। यह एक मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 14 मीटर तक तथा व्यास 40 से 50 से.मी. तक होता है। इसकी पत्तियाँ चिकनी तथा हल्की होती हैं। इसके पुष्प फरवरी से मई तक हल्के गुलाबी रंग से सफ़ेद रंग तक के गुच्छों के रूप में निकलते हैं।

इसका तना अकसर तिरछा परन्तु कुछ क्षेत्रों में पेड़ सीधा होता है। इसकी छाल गुलाबी-भूरे रंग से गहरी नीली-सिलेटी रंग की होती है। यह प्रजाति मध्य तथा उत्तरी भारत में तथा दक्षिणी भारत के कुछ क्षेत्रों में पायी जाती है एवं उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश की महत्त्वपूर्ण प्रजाति होती है।

काला तेन्दू

यह वृक्ष मध्य प्रदेश के नम तथा आर्द्रता वाले क्षेत्रों में बहुतायत में पाया जाता है। यह सदाबहार वृक्ष दिखने में बहुत आकर्षक होता है। इसकी पत्तियाँ औसतन 15 से.मी. लम्बी, आयताकार, लगभग 5 से.मी. चौड़ाई में तथा गहरे हरे रंग की होती हैं। नयी पत्तियाँ गुलाबी तथा आकर्षक होती हैं। नर पुष्प 2 से 7 तक समूह में होते हैं। मादा पुष्प एकल तथा नर पुष्पों की अपेक्षा बड़े होते हैं। फल करीब 3 से 4 से.मी. तक तथा पकने पर पीले रंग के होते हैं। इसकी लकड़ी सख्त, मज़बूत तथा फर्नीचर बनाने के काम आती है। इसके बिना पके फलों में टेनिन अत्यधिक मात्रा में पाया जाता है जो टेनिन चमड़ा तथा बाँस की टोकरियों में प्रयोग किया जाता है। इसके फलों का द्रव्य बुक-बाइंडिंग में गोंद के रूप में प्रयोग किया जाता है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में अतिमुक्तक के वृक्ष थे—

लोध्रनीपार्जुनैर्नागैः सप्तपर्णातिमुक्तकैः।
मन्दारकदलीगुल्मलताजालसमावृताम् ॥ (7/42/4)

लोध, कदम्ब, अर्जुन, नागकेसर, छितवन, अतिमुक्तक, मन्दार, केला तथा गुल्मों और लताओं के समूह उसमें सब ओर व्याप्त थे।

अयोध्या से प्रयाग के बीच तीनों अतिमुक्तक को लगाया जाना चाहिए।

22. मन्दार (Indian Coral Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए पारिभद्रक एवं मन्दार शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Erythrina variegata' है। इसे धौलढाक भी कहते हैं। इसकी ऊँचाई 15 मीटर तक होती है। इसकी शाखाओं के छोर पर गहरे लाल रंग के फूल खिलते है। फलों में पाँच पंखुड़ी होती है। नीले आकाश के नीचे गहरे लाल रंग के फूलों का गुच्छा अत्यन्त मनोरम लगता है। इसकी शाखाओं पर चहचहाती चिड़ियों का संगीत एवं भौंरों का गुंजार आकर्षक लगता है। इसकी जड़ें

नाइट्रोजन फिक्सेसन का कार्य करती हैं। इसका व्यापक उपयोग पान की खेती, चाय के बागानों आदि में फसलों को धूप से बचाने के लिए किया जाता है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में मन्दार के वृक्ष थे–

लोध्रनीपार्जुनैर्नागैः सप्तपर्णातिमुक्तकैः।
मन्दारकदलीगुल्मलताजालसमावृताम् ॥ (7/42/4)

लोध, कदम्ब, अर्जुन, नागकेसर, छितवन, अतिमुक्तक, मन्दार, कदली (केला) तथा गुल्मों और लताओं के समूह उसमें सब ओर व्याप्त थे।

अयोध्या से प्रयाग के बीच स्थान-स्थान पर मन्दार के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

23. केला (Banana Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए कदली शब्द का प्रयोग किया गया है। यह देश के प्रायः हर भाग में पाया जाता है। हिमालय की पहाड़ियों पर यह लगभग 4000 फीट तक पाया जाता है। यह देश का प्रमुख फल है। इसके पत्ते बहुत बड़े तथा लम्बे होते हैं जो प्रायः हवा से फट जाते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Musa sapientum' है। भारत में इसकी अनेक जातियाँ पायी जाती हैं जिसमें लाल केला, चाटिम केला, चम्पक केला, चीनिया आदि प्रमुख हैं। इसके पके फल में शर्करा, विटामिन सी एवं अनेक खनिज द्रव्य पाए जाते हैं।

राम वनगमन का समाचार सुनकर माता कौशल्या की स्थिति कटे हुए कदली की भाँति बतायी गयी है–

तामदुःखोचितां दृष्ट्वा पतितां कदलीमिव।
रामस्तूत्थापयामास मातरं गतचेतसम् ॥ (2/20/33)

जिन्होंने जीवन में कभी दुःख नहीं देखा था–जो दुःख भोगने के योग्य थीं ही नहीं, उन्हीं माता कौशल्या को कटी हुई कदली की भाँति अचेत अवस्था में भूमि पर पड़ी देख श्रीराम ने हाथ का सहारा देकर उठाया।

अयोध्या की अशोक वाटिका में केला के वृक्ष थे–

लोध्रनीपार्जुनैर्नागैः सप्तपर्णातिमुक्तकैः।
मन्दारकदलीगुल्मलताजालसमावृताम् ॥ (7/42/4)

लोध, कदम्ब, अर्जुन, नागकेसर, छितवन, अतिमुक्तक, मन्दार, कदली (केला) तथा गुल्मों और लताओं के समूह उसमें सब ओर व्याप्त थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार प्राचीन काल में शुभ अवसरों पर वृक्षारोपण की परम्परा थी। श्रीराम के विवाह के उपरान्त अयोध्या में केला का रोपण किया गया–

सफल पूगफल कदलि रसाला।
रोपे बकुल कदम्ब तमाला ॥ (1/344)

श्रीराम के राज्याभिषेक के निर्णय के उपरान्त गुरु वशिष्ठ ने वृक्षारोपण का आदेश दिया–

सफल रसाल पूगफल केरा।
रोपहु वीथिन्ह पुर चहुँ फेरा ॥ (2/6)

अयोध्या से प्रयाग के बीच मुख्यतः धार्मिक स्थान एवं मार्ग में पड़ने वाले मन्दिर परिसर आदि में केला के वृक्ष लगाये जा सकते हैं।

24. प्रियंगु

इसका वानस्पतिक नाम 'Callicarpa macrophyllya' है। यह हिमालय की तराई में कश्मीर से असम तक तथा पश्चिम बंगाल एवं बिहार में खुले मैदान में पाया जाता है। यह मज़बूत गुल्म है जिसकी शाखाएँ अनियमित रूप से फैली होती हैं। इसकी पत्तियाँ 25 से.मी. तक लम्बी तथा अण्डाकार होती हैं। वर्षा ऋतु में पुष्प आते हैं। पुष्प छोटे एवं हलके गुलाबी रंग के होते हैं। इसके फल शीत काल में बाज़ार में फूलप्रियंगु नाम से बिकते हैं।

अयोध्या की अशोक वाटिका में प्रियंगु के वृक्ष थे–

प्रियङ्गुभिः कदम्बैश्च तथा च बकुलैरपि।
जम्बूभिर्दाडिमैश्चैव कोविदारैश्च शोभिताम्॥ (7/42/5)

प्रियंगु, धूलिकदम्ब, बकुल, जामुन, अनार और कोविदार आदि वृक्ष उस उपवन को सुशोभित करते थे।

शोभाकार प्रजाति के रूप में इसे अयोध्या से प्रयाग के बीच लगाना चाहिए।

25. बकुल (मौलसिरी) (Elengi Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए बकुल शब्द का प्रयोग किया गया है। इसकी ऊँचाई 12 से 18 मीटर तक होती है। यह अत्यन्त घना, सदाहरित, छाते जैसे छत्र वाला वृक्ष है। इसका वानस्पतिक नाम 'Mimusops elengi' है। इसके फूल अप्रैल में एवं फल जून माह में आते हैं। इसकी पत्तियाँ गहरे हरे रंग की 5 से 14 से.मी. लम्बी तथा 2.5 से 6 से.मी. तक चौड़ी होती हैं। इसकी छाल गहरे भूरे रंग की होती है तथा फटी होती है। इसकी सैप वुड सफ़ेदी लिए तथा हार्ट वुड लाल रंग की होती है। अनेक स्थानों पर इसे खेतों में उगाया जाता है। यह शोभाकारी वृक्ष है तथा इसे अपनी शोभा के लिए अनेक स्थानों पर लगाया जाता है। इसकी पत्तियाँ गहरे हरे रंग की होती हैं। इसमें मार्च से जुलाई तक फूल आते हैं। इसके फल कच्चेपन में हरे रंग के तथा पकने पर नारंगी लाल रंग के होते हैं। इसके फूलों का प्रयोग परफ्यूम में किया जाता है। इसके फल खाये जाते हैं तथा बीज से तेल निकाला जाता है। इसका उपयोग भवन निर्माण, कैबिनेट निर्माण एवं बैलगाड़ी आदि में किया जाता है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में बकुल के वृक्ष थे–

प्रियङ्गुभिः कदम्बैश्च तथा च बकुलैरपि।
जम्बूभिर्दाडिमैश्चैव कोविदारैश्च शोभिताम्॥ (7/42/5)

प्रियंगु, धूलिकदम्ब, बकुल, जामुन, अनार और कोविदार आदि वृक्ष उस उपवन को सुशोभित करते थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार प्राचीन काल में शुभ अवसरों पर वृक्षारोपण की परम्परा थी। श्रीराम के विवाह के उपरान्त अयोध्या में मौलश्री का रोपण किया गया–

सफल पूगफल कदलि रसाला।
रोपे बकुल कदम्ब तमाला॥ (1/344)

मौलश्री के वृक्ष उत्तर प्रदेश में अनेक स्थानों पर शोभाकारी वृक्ष के रूप में लगाये गये हैं। अयोध्या से प्रयाग के बीच शोभाकारी वृक्ष के रूप में इसे लगाया जा सकता है।

26. जामुन (Black plum or Java plum)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए जम्बू शब्द का प्रयोग किया गया है। जामुन को मराठी में 'जामन', तमिल में 'नेरेदम', तेलुगु में 'निरीदु', गुजराती में 'जामली', बंगला में 'जाम', संस्कृत में 'जंबु', मलयालम में 'पेरिन्नारल', तथा कन्नड़ में 'नेराले' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Syzygium cumini' है। जामुन का वृक्ष लगभग पूरे देश में पाया जाता है। नदी के किनारे, कटाव वाली भूमि पर, तालाबों के किनारे एवं दलदली भूमि पर इसे उगाया जाता है। यह छाया में भी पनप जाता है। इसकी लकड़ी खिड़की एवं दरवाज़े तथा नाव आदि बनाने के काम आती है। इसका फल आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मधुमेह के लिए यह अत्यन्त लाभप्रद है। इससे सिरका बनाया जाता है। जामुन के फूलों से अच्छा शहद बनता है। इसकी छाल चमड़ा पकाने तथा रँगने के काम आती है।

प्रयाग में भरद्वाज मुनि के आश्रम में जामुन के वृक्ष थे–

शिंशपाऽऽवमलकी जम्बूर्याश्चान्याः कानने लताः।
मालती मल्लिका जातिर्याश्चान्याः कानने लताः।
प्रमदाविग्रहं कृत्वा भरद्वाजाश्रमेऽवसन्॥ (2/91/51)

शिंशपा, आमलकी और जम्बू आदि स्त्रीलिंग वृक्ष तथा मालती, मल्लिका और जाति आदि वन की लताएँ नारी का रूप धारण करके भरद्वाज मुनि के आश्रम में आ बसीं।

अयोध्या की अशोक वाटिका में जामुन के वृक्ष थे–

प्रियङ्गुभिः कदम्बैश्च तथा च बकुलैरपि।
जम्बूभिर्दाडिमैश्चैव कोविदारैश्च शोभिताम्॥ (7/42/5)

प्रियंगु, धूलिकदम्ब, बकुल, जामुन, अनार और कोविदार आदि वृक्ष उस उपवन को सुशोभित करते थे।

अयोध्या से प्रयाग के मार्ग में पहले जामुन के बड़े वृक्ष थे। इस मार्ग पर पुनः जामुन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

27. अनार (Pomegranate)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए दाडिम एवं बीजक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे दाड़िम भी कहा जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Punica granatum' है। यह फल हेतु पूरे देश में लगाया जाता है। इसका वृक्ष छोटा एवं झाड़दार होता है। इसका फूल गहरे लाल रंग का होता है तथा फल

गोल और मोटे छिलके वाला होता है। यह एक प्रमुख फल है जिसका प्रयोग जूस बनाने के लिए विशेष रूप से होता है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में अनार के वृक्ष थे–

प्रियङ्गुभिः कदम्बैश्च तथा च बकुलैरपि।
जम्बूभिर्दाडिमैश्चैव कोविदारैश्च शोभिताम्॥ (7/42/5)

प्रियंगु, धूलिकदम्ब, बकुल, जामुन, अनार और कोविदार आदि वृक्ष उस उपवन को सुशोभित करते थे।

अयोध्या से प्रयाग के बीच आश्रम या मन्दिर परिसर में अनार लगाया जाना चाहिए।

28. कोविदार (कचनार) (Orchid Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए कोविदार शब्द का प्रयोग किया गया है। कोविदार को हिन्दी में कचनार कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Bauhinia variegata' है। यह लगभग 10 से 12 मीटर तक ऊँचा होता है। फरवरी से अप्रैल तक यह लगभग पर्णविहीन रहता है तथा इसी समय फूल भी आते हैं। इसके फूल सफ़ेद, गुलाबी अथवा चमकीले बैगनी रंग के होते हैं। इसके पत्ते लगभग 7-8 से.मी. लम्बे, उतने ही चौड़े तथा द्विखण्डित होते हैं। इसकी फली लम्बी, चिपटी तथा लगभग 30 से.मी. तक लम्बी होती है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में कचनार के वृक्ष थे–

प्रियङ्गुभिः कदम्बैश्च तथा च बकुलैरपि।
जम्बूभिर्दाडिमैश्चैव कोविदारैश्च शोभिताम्॥ (7/42/5)

प्रियंगु, धूलिकदम्ब, बकुल, जामुन, अनार और कोविदार आदि वृक्ष उस उपवन को सुशोभित करते थे।

उत्तर प्रदेश में शोभाकार प्रजाति के रूप में कचनार को लगाया जाता है। अयोध्या से प्रयाग के बीच भी शोभाकार वृक्ष के रूप में इसे लगाया जाना चाहिए।

29. बेल (Bael Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए विल्व शब्द का प्रयोग किया गया है। बेल को मराठी में 'बेल', तमिल में 'बिल्वम', तेलुगु में 'मारेडू', गुजराती में 'बिल', बंगला में 'बेल', संस्कृत में 'बिल्व', मलयालम में 'विल्वम', तथा कन्नड़ में 'बिलपने' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Aegle marmelos' है। यह लगभग पूरे भारत में पाया जाता है। इसका विशेष धार्मिक महत्त्व है इसलिए यह मन्दिरों के पास लगाया जाता है। इसका वृक्ष 15 से 30 मीटर ऊँचा, पत्ते स्वाद में तीखे होते हैं। फल 5 से 15 से.मी. व्यास के होते हैं। इनका खोल कड़ा तथा पकने पर हरा एवं सुनहरा पीला हो जाता है। इसका पका फल खाया जाता है। फल का अचार एवं मुरब्बा एवं शर्बत भी बनता है। पेट की बीमारियों हेतु यह विशेष लाभप्रद है। इसके पत्ते भगवान शिव को चढ़ाए जाते हैं।

महाराज दशरथ के यज्ञ में बेल का प्रयोग किया गया–

प्राप्ते यूपोच्छ्रये तस्मिन् षड् बैल्वाः खादिरास्तथा।
तावन्तो बिल्वसहिताः पर्णिनश्च तथा परे॥ (1/14/22)

जब यूप खड़ा करने का समय आया, तब बेल की लकड़ी के छह यूप गाड़े गये। उतने ही खैर के यूप खड़े किये गये तथा पलाश के भी उतने ही यूप थे, जो बिल्वनिर्मित यूपों के साथ खड़े किये गये थे।

प्रयाग में भरद्वाज मुनि के आश्रम में बेल के वृक्ष का उल्लेख है–

बिल्वा मार्दङ्गिका आसञ् शम्याग्राहा बिभीतकाः।
अश्वत्था नर्तकाश्चासन् भरद्वाजस्य तेजसा॥ (2/91/49)

भरद्वाज मुनि के तेज़ से बेल के वृक्ष मृदङ्ग बजाते, बहेड़े के पेड़ शम्या नामक ताल देते और पीपल के वृक्ष वहाँ नृत्य करते थे।

अयोध्या से प्रयाग के बीच मुख्यतः आश्रम एवं मन्दिर परिसर में बेल के वृक्ष लगाने चाहिए।

30. खैर (Cutch)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए खदिर शब्द का प्रयोग किया गया है। खैर को उड़िया में 'खोइल', तमिल में 'कारंगल्ली', तेलुगु में 'काचू', गुजराती में 'खेर, खेदेरियो', बंगला में 'खायेर', संस्कृत में 'खदिर', मलयालम में 'खदिरम', तथा कन्नड़ में 'काचू' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Acacia catechu' है। यह मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है। शाखाएँ पतली, काँटों से युक्त, गहरे भूरे या जामुनी रंग की होती हैं। यह उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं सिक्किम में 1500 मीटर ऊँचाई तक पाया जाता है। पान हेतु इसका सर्वाधिक प्रयोग होता है। यह चमड़ा एवं कपड़ा रंगने तथा रंग बनाने के काम आता है। इसकी लकड़ी अत्यन्त कठोर मानी जाती है।

महाराज दशरथ के यज्ञ में खैर का प्रयोग किया गया–

प्राप्ते यूपोच्छ्रये तस्मिन् षड् बैल्वाः खादिरास्तथा।
तावन्तो बिल्वसहिताः पर्णिनश्च तथा परे॥ (1/14/22)

जब यूप खड़ा करने का समय आया, तब बेल की लकड़ी के छह यूप गाड़े गये। उतने ही खैर के यूप खड़े किये गये तथा पलाश के भी उतने ही यूप थे, जो बिल्वनिर्मित यूपों के साथ खड़े किये गये थे।

अयोध्या से प्रयाग के बीच कहीं-कहीं पर खैर का वृक्ष लगाया जा सकता है।

31. पलाश (टेसू) (Flame of the forest)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए पर्णिन, पलाश एवं किंशुक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में किंशुक तथा हिन्दी में ढाक, पलाश, टेसू आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Butea monosperma' है। इसे ढाक भी कहा जाता है। यह लगभग पूरे भारत में पाया जाता है। इसकी

पत्तियाँ दिसम्बर-जनवरी में झड़ जाती हैं तथा मार्च-अप्रैल में फूल आने प्रारम्भ होते हैं। पत्ती विहीन फूलों से भरा वृक्ष जंगल में आग की लपटों जैसा प्रतीत होता है। इसके फूल आकर्षक होते हैं तथा दूर से सुग्गे की चोंच की तरह होने के कारण इसे किंशुक भी कहा जाता है।

महाराज दशरथ के यज्ञ में खैर का प्रयोग किया गया—

प्राप्ते यूपोच्छ्रये तस्मिन् षड् बैल्वाः खादिरास्तथा।
तावन्तो बिल्वसहिताः पर्णिनश्च तथा परे॥ (1/14/22)

जब यूप खड़ा करने का समय आया, तब बेल की लकड़ी के छह यूप गाड़े गये। उतने ही खैर के यूप खड़े किये गये तथा पलाश के भी उतने ही यूप थे, जो बिल्वनिर्मित यूपों के साथ खड़े किये गये थे।

राम वनगमन के उपरान्त शोकग्रस्त दशरथ की कौशल्या से वार्ता में पलाश का उदाहरण आता है—

कष्चिदाम्रवणं छित्त्वा पलाशांश्च निषिंचति।
पुष्पं दृष्वा फले गृध्नुः स शोचति फलागमे॥ (2/63/8)

कोई मनुष्य पलाश का सुन्दर फूल देखकर मन-ही-मन यह अनुमान करके कि इसका फल और भी मनोहर तथा सुस्वादु होगा, फल की अभिलाषा से आम के बगीचे को काटकर वहाँ पलाश के पौधे लगाता और सींचता है, वह फल लगने के समय पश्चात्ताप करता है (क्योंकि उससे अपनी आशा के अनुरूप फल वह नहीं पाता है)।

सोऽहमाम्रवणं छित्त्वा पलाशांश्च न्यषेचयम्।
रामं फलागमे त्यक्त्या पश्चाच्छोचामि दुर्मतिः॥ (2/63/10)

मैंने भी आम का वन काटकर पलाशों को ही सींचा है, इस कर्म के फल की प्राप्ति के समय अब श्रीराम को खोकर मैं पश्चात्ताप कर रहा हूँ। मेरी बुद्धि कैसी खोटी है?

अयोध्या से प्रयाग के बीच शोभाकारी वृक्ष के रूप में पलाश का वृक्ष लगाया जाना चाहिए।

32. बहेड़ा (Beleric Myrobalan)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए विभीतक शब्द का प्रयोग किया गया है। बहेड़ा को मराठी में 'बेहेड़ा', तमिल में 'अक्कदम', तेलुगु में 'विभीतकमु', गुजराती में 'बेहेड़ा', बंगला में 'बहेरा', संस्कृत में 'बिभतक', मलयालम में 'थानी', तथा कन्नड़ में 'तारि' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Terminalia belerica' है। बहेड़े का वृक्ष 25 से 35 मीटर तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते अप्रैल में निकलते हैं तथा फरवरी-मार्च में गिर जाते हैं। शुष्क एवं बंजर भूमि को छोड़कर यह प्रायः पूरे भारत में मिलता है। आयुर्वेद की प्रसिद्ध औषधि 'त्रिफला' में इसका सर्वाधिक प्रयोग होता है।

प्रयाग में भरद्वाज मुनि के आश्रम में बहेड़ा के वृक्ष का उल्लेख है—

बिल्वा मार्दङ्गिका आसञ् शम्याग्राहा बिभीतकाः।
अश्वत्था नर्तकाश्चासन् भरद्वाजस्य तेजसा॥ (2/91/49)

भरद्वाज मुनि के तेज़ से बेल के वृक्ष मृदङ्ग बजाते, बहेड़े के पेड़ शम्या नामक ताल देते और पीपल के वृक्ष वहाँ नृत्य करते थे।

अयोध्या से प्रयाग के बीच कहीं-कहीं पर बहेड़ा का वृक्ष लगाया जा सकता है।

33. पीपल (Bodhi Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए अश्वत्थ शब्द का प्रयोग किया गया है। पीपल को कन्नड़ में 'अरली', गुजराती में 'पीपरो', तमिल में राईचेट्टु', तेलुगु में 'अश्वत्थमु', बंगला में 'अशोथगाँछ', मराठी में 'पिपल', मलयालम में 'अरायाल' तथा संस्कृत में 'अश्वत्थ' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Ficus religiosa' है। यह अत्यन्त धार्मिक महत्त्व का वृक्ष है। यह पूरे भारत में पाया जाता है। मन्दिरों एवं धर्मशालाओं में यह मुख्य रूप से रोपा जाता है। यह विशाल आकार का वृक्ष है। इसकी पत्तियाँ हृदयाकार तथा तीखी नोक वाली, तना चिकना, शाखाएँ भी चिकनी तथा फल छोटे गोल और छोटी शाखाओं पर लगते हैं। पीपल रोपित करना अत्यन्त धार्मिक कृत्य माना जाता है। यह पर्यावरणीय एवं धार्मिक महत्त्व की प्रजाति है। यह हिन्दू एवं बौद्ध, दोनों धर्मों में पवित्र माना जाता है।

इसके पेड़ का आकार बहुत बड़ा होता है। जाड़े के अन्त में थोड़े समय के लिए इसमें पतझड़ हो जाता है। मार्च-अप्रैल में नयी पत्तियाँ निकलती हैं। प्रारम्भ में पत्तियों का रंग लाल होता है। छाल भूरी व चिकनी होती है। यह छाया देने वाला वृक्ष है। इसकी पत्तियाँ हाथी, भेड़ एवं बकरी के चारे के रूप में प्रयोग की जाती हैं। इसकी पत्तियों के सूखने के बाद उस पर अच्छे चित्र बनाए जाते हैं।

प्रयाग में भरद्वाज मुनि के आश्रम में पीपल के वृक्ष का उल्लेख है—

बिल्वा मार्दङ्गिका आसन्‌ शम्याग्राहा बिभीतकाः।
अश्वत्था नर्तकाश्चासन्‌ भरद्वाजस्य तेजसा॥ (2/91/49)

भरद्वाज मुनि के तेज़ से बेल के वृक्ष मृदङ्ग बजाते, बहेड़े के पेड़ शम्या नामक ताल देते और पीपल के वृक्ष वहाँ नृत्य करते थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीराम के वियोग में दशरथ के मन को पीपल के पत्ते के समान बताया है—

पीपर पात सरिस मन डोला।(2/45)

पीपल के पर्यावरणीय महत्त्व को देखते हुए इसे अयोध्या से प्रयाग के बीच लगाया जाना चाहिए।

34. इंगुदी (Desert Date)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए इङ्गुदी शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे हिन्दी में हिंगन, हिंगोल आदि कहा जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Balanites roxburghaii या Balanites aegyptiaca' है। यह भारत के शुष्क प्रदेशों मुख्यतः राजस्थान में पाया जाता है। इसके वृक्ष काँटेदार एवं 3 मीटर से 6 मीटर तक ऊँचे होते हैं। पत्तियाँ 2 से 3 से.मी. लम्बी होती हैं। पत्तियों के पार्श्व में मज़बूत काँटे होते हैं। फरवरी मार्च में फूल आते हैं। फूल पीले रंग के तथा सुगन्धित होते हैं। फल अण्डाकार 2.5 से.मी. से 5 से.मी. लम्बे, 3 से.मी. तक चौड़े तथा एकबीजीय होते हैं। फल कच्चेपन में हरे तथा पकने पर हलके भूरे हो जाते हैं।

फल में सैपोनिन होने से इसका उपयोग सिल्क के रेशों को साफ करने के लिए किया जाता है। गुठली में छेद कर अन्दर से साफ करके सुँघनी रखने की नसदानी बनाने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। यह एक अच्छी ईंधन प्रजाति है।

अयोध्या से प्रयाग के बीच में इंगुदी के वृक्ष थे–

अविदूरादयं नद्या बहुपुष्पप्रवालवान्।
सुमहानिङ्गुदीवृक्षो वसामोऽत्रैव सारथे॥ (2/50/28)

सारथे! गंगाजी के समीप ही जो यह बहुत-से फूलों और नये-नये पल्लवों से सुशोभित महान् इङ्गुदी का वृक्ष है, इसी के नीचे आज रात में हम निवास करेंगे।

लक्ष्मणश्च सुमन्त्रश्च बाढमित्येव राघवम्।
उक्त्वा तमिङ्गुदी वृक्षं तदोपययतुर्हयैः॥ (2/50/30)

तब लक्ष्मण और सुमन्त्र भी श्रीरामचन्द्रजी से बहुत अच्छा कहकर अश्वों द्वारा उस इङ्गुदी वृक्ष के समीप गये।

अयोध्या से प्रयाग के बीच कहीं-कहीं पर इंगुदी का वृक्ष लगाया जा सकता है।

35. तिलक

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए तिलक शब्द का प्रयोग किया गया है। यह भारत के शुष्क जंगली क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Wendlandia exerta' है। यह नालों के ढालों पर अधिक पाया जाता है। इसके वृक्ष झुके हुए तथा छोटे होते हैं। इसके पुष्प सुगन्धित एवं श्वेत होते हैं। मार्च-अप्रैल में पुष्पित वृक्ष सफ़ेद चाँदनी से ढका प्रतीत होता है।

भरद्वाज मुनि के आश्रम में तिलक के वृक्ष थे–

ततः सरलतालाश्च तिलकाः सतमालकाः।
प्रॉष्टास्तत्र सम्पेतुः कुब्जा भूत्वाथ वामनाः॥ (2/91/50)

तदनन्तर देवदारु, ताल, तिलक और तमाल नामक वृक्ष कुबड़े और बौने बनकर बड़े हर्ष के साथ भरत की सेवा में उपस्थित हुए।

अयोध्या से प्रयाग के बीच में कहीं-कहीं पर तिलक के वृक्ष लगाना चाहिए।

36. ताड़ (ताल) (Palmyra Palm)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए ताल शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में ताल एवं हिन्दी में ताड़ कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Borassus flabellifer' है। यह मुख्य रूप से दक्षिण भारत, पश्चिम बंगाल एवं अन्य शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका वृक्ष 100 फीट तक ऊँचा होता है। इसके तने की गोलाई 3 से 7 फीट तक होती है। इसके पुरुष एवं स्त्री जाति के अलग-अलग वृक्ष होते हैं। स्त्री जाति के वृक्ष पर नारियल के समान फल लगते हैं तथा पुरुष जाति के वृक्षों पर

बाल आते हैं। इसके फल बड़े तथा रेशेदार होते हैं जिसके भीतर तीन खण्ड होते हैं जिसमें प्रत्येक में बीज होता है। इसके फल का ताजा रस नीड़ा तथा बाद में ताड़ी कहलाता है। इसको पकाकर गुड़ तथा मिश्री प्राप्त की जाती है।

भरद्वाज आश्रम में ताड़ के वृक्ष थे–

ततः सरलतालाश्च तिलकाः सतमालकाः।
प्रहृष्टास्तत्र सम्पेतुः कुब्जा भूत्वाथ वामनाः ॥ (2/91/50)

तदनन्तर देवदारु, ताल, तिलक और तमाल नामक वृक्ष कुबड़े और बौने बनकर बड़े हर्ष के साथ भरत की सेवा में उपस्थित हुए।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने राम वनगमन के समय दशरथ की स्थिति का वर्णन करते समय ताल के वृक्ष का उल्लेख किया है–

बिवरन भयउ निपट नरपालू।
दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू ॥ (2/29)

अयोध्या से प्रयाग के बीच कही-कहीं पर ताड़ के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

37. तमाल (Indian Gamboge Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए तमाल एवं श्याम शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Garcinia morella' है। इसका वृक्ष छोटा और पर्णहरित होता है। इस वृक्ष की छाल में घाव करने से एक पीले रंग का तरल राल जैसा पदार्थ प्राप्त होता है जिसे गम्बोज कहते हैं। यह भूरे पीले रंग के टुकड़ों में प्राप्त होता है। जल के साथ इसका घोल बनाकर उसमें अमोनिया मिलाने से यह गहरे नारंगी रंग का हो जाता है जिसे गोटगनबा कहते हैं।

भरद्वाज मुनि के आश्रम में तमाल के वृक्ष थे–

ततः सरलतालाश्च तिलकाः सतमालकाः।
प्रहृष्टास्तत्र सम्पेतुः कुब्जा भूत्वाथ वामनाः ॥ (2/91/50)

तदनन्तर देवदारु, ताल, तिलक और तमाल नामक वृक्ष कुबड़े और बौने बनकर बड़े हर्ष के साथ भरत की सेवा में उपस्थित हुए।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार प्राचीन काल में शुभ अवसरों पर वृक्षारोपण की परम्परा थी। श्रीराम के विवाह के उपरान्त अयोध्या में तमाल का रोपण किया गया–

सफल पूगफल कदलि रसाला।
रोपे बकुल कदम्ब तमाला ॥ (1/344)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने वनगमन के समय श्रीराम की तुलना तमाल के वृक्ष से की है–

तरुन तमाल बरन तन सोहा। (2/115)

प्रयाग से अयोध्या के बीच कहीं-कहीं पर तमाल का रोपण किया जाना चाहिए।

38. आँवला (Indian Gooseberry)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए आमलक शब्द का प्रयोग किया गया है। यह उत्तर भारत के प्रायः सभी क्षेत्रों में पाया जाता है। यह वन क्षेत्रों में जंगली रूप में पाया जाता है तथा इसे खेतों में भी उगाते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Emblica officinalis' है। यह विटामिन सी का भण्डार है। इसके पत्ते छोटे होते हैं तथा फूल हरापन लिए पीले रंग के गुच्छों में होता है। वसन्त ऋतु में इसके पत्ते झड़ जाते हैं तथा उसी समय फूल आते हैं। फल डालियों से सटे हुए गोल एवं चमकदार होते हैं। कच्चे फल हरे एवं पकने पर हलका पीलापन लिए हरे रंग के हो जाते हैं। इसका मुरब्बा एवं अचार आदि बनाया जाता है। आजकल इसके फलों के लड्डू एवं बर्फी भी बनायी जाती है।

भरद्वाज मुनि के आश्रम में आँवले के वृक्ष का उल्लेख है–

शिंशपाऽऽमलकी जम्बूर्याश्चान्याः कानने लताः।
मालती मल्लिका जातिर्याश्चान्याः कानने लताः।
प्रमदाविग्रहं कृत्वा भरद्वाजा श्रमेऽवसन्॥ (2/91/51)

शिंशपा, आमलकी और जम्बू आदि स्त्रीलिंग वृक्ष तथा मालती, मल्लिका और जाति आदि वन की लताएँ नारी का रूप धारण करके भरद्वाज मुनि के आश्रम में आ बसीं।

वर्तमान में अयोध्या से प्रयाग के बीच प्रतापगढ़ जनपद देश में आँवले का प्रमुख केन्द्र है। इस क्षेत्र में आँवला व्यापक रूप से लगाया जाता है।

39. मालती या चमेली (Malati)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए मालती शब्द का प्रयोग किया गया है। चमेली को संस्कृत में मालती भी कहते हैं। दक्षिण भारत में गन्धमालती नामक एक लता पायी जाती है। इसे संस्कृत में गन्धमालती, गन्धकोकिला तथा बंगला में मालती कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Aganosma caryophyllata' है। यह विस्तार में फैलने वाली तथा आरोही होती है। इसके पत्ते लट्वाकार 3 से 4 इंच लम्बे एवं 2 से 3 इंच चौड़े होते हैं। इसके पुष्प बड़े, श्वेत तथा सुगन्धित होते हैं।

भरद्वाज मुनि के आश्रम में मालती या चमेली के पौधे थे–

शिंशपाऽऽमलकी जम्बूर्याश्चान्याः कानने लताः।
मालती मल्लिका जातिर्याश्चान्याः कानने लताः।
प्रमदाविग्रहं कृत्वा भरद्वाजा श्रमेऽवसन्॥ (2/91/51)

शिंशपा, आमलकी और जम्बू आदि स्त्रीलिंग वृक्ष तथा मालती, मल्लिका और जाति आदि वन की लताएँ नारी का रूप धारण करके भरद्वाज मुनि के आश्रम में आ बसीं।

अयोध्या से प्रयाग के बीच में शोभाकार पौधे रूप में मालती या चमेली को लगाया जाना चाहिए।

40. कुश (Holly Grass)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए दर्भ एवं कुश शब्द का प्रयोग किया गया है। यह मूज की जाति की मूज से छोटे प्रकार की घास है। इसका वानस्पतिक नाम 'Eragrostis cynosuroides या Desmostachya bipinnata' है। यह खुले घास के मैदानों में पाया जाता है। यह हिन्दू धर्म में पवित्र मानी जाती है तथा इसका उपयोग पूजा पाठ में किया जाता है।

श्रीराम वनगमन के समय माता कौशल्या उन्हें आशीर्वाद देते समय कुश का प्रयोग करती हैं–

समित्कुशपवित्राणि वेद्यश्चायतनानि च।
स्थण्डिलानि च विप्राणां शैला वृक्षाः क्षुपा ह्रदाः।
पतङ्गाः पन्नगाः सिंहास्त्वां रक्षन्तु नरोत्तम॥ (2/25/7)

नरश्रेष्ठ! समिधा, कुशा, पवित्री, वेदियाँ, मन्दिर, ब्राह्मणों के देवपूजन सम्बन्धी स्थान, पर्वत, वृक्ष, क्षुप (छोटी शाखावाले वृक्ष), जलाशय, पक्षी, सर्प और सिंह वन में तुम्हारी रक्षा करें।

सीताजी से वन क्षेत्र का वर्णन करते समय श्रीराम कुश का उल्लेख करते हैं–

द्रुमाः कण्टकिनश्चैव कुशाः काशाश्च भामिनि।
वने व्याकुलशाखाग्रास्तेन दुःखमतो वनम्॥ (2/28/22)

भामिनी! वन में काँटेदार वृक्ष कुश और कास होते हैं, जिनकी शाखाओं के अग्रभाग सब ओर फैले हुए होते हैं; इसलिए वन विशेष कष्टदायक होता है।

सीता कुश के सम्बन्ध में उत्तर देती हैं–

कुशकाशशरेषीका ये च कण्टकिनो द्रुमाः।
तूलाजिनसमस्पर्शा मार्गे मम सह त्वया॥ (2/30/12)

रास्ते में जो कुश-कास, सरकण्डे, सींक और काँटेदार वृक्ष मिलेंगे, उनका स्पर्श मुझे आपके साथ रहने से रूई और मृगचर्म के समान सुखद प्रतीत होगा।

प्रायः यह घास सभी स्थानों पर पायी जाती है। अनुपलब्ध होने पर पवित्र घास के रूप में इसे कहीं-कहीं पर लगाया जा सकता है।

41. सरकण्डा, मूँज घास या सरपत (Munj Grass)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए शर, बाण एवं शरपत्र शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में बाण तथा हिन्दी में रामसर, सरपत, कण्डा, सरकण्डा आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Saccharum munja' है। यह प्रायः नदियों के किनारे गुच्छों में पायी जाती है। यह लगभग 18 फीट तक ऊँचाई प्राप्त कर लेता है। इसके पत्ते 5 से 7 फीट लम्बे बहुत पतले तथा नुकीले होते हैं। डंठल के अन्त में बैगनी तथा पीलापन लिए सफ़ेद फूल आते हैं। इसका भी घूआ निकलता है जो 30 से.मी. से 90 से.मी. तक लम्बा होता है। पत्तियों का उपयोग छप्पर बनाने के लिए किया जाता है। इससे निकाले गये रेशों का बहुत उपयोग होता है।

श्रीराम के समझाने पर वन जाने के सम्बन्ध में अपना पक्ष रखती हुई सीता कुश एवं सरकण्डा के सम्बन्ध में उत्तर देती हैं–

कुशकाशशरेषीका ये च कण्टकिनो द्रुमाः।
तूलाजिनसमस्पर्शा मार्गे मम सह त्वया॥ (2/30/12)

रास्ते में जो कुश-कास, सरकण्डे, सींक और काँटेदार वृक्ष मिलेंगे, उनका स्पर्श मुझे आपके साथ रहने से रूई और मृगचर्म के समान सुखद प्रतीत होगा।

42. असिपत्र, ईख (Sugar Cane)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए इक्षुकण्ड एवं खड्गपत्र शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में इक्षु, भूमिरस आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Saccharum officinarium' है। इसकी खेती भारत के सभी उष्ण प्रदेशों में की जाती है। यह शर जाति का क्षुप है जिसके डंठल में मीठा रस होता है। इसका काण्ड 1.8 से 3.6 मीटर तक ऊँचा होता है। इसके तने पर 6 या 7 अंगुल पर गाँठें होती हैं। इसकी पत्तियाँ 90 से.मी. से 120 से.मी. लम्बी तथा 5 से 7.5 से.मी. चौड़ी होती हैं। पत्तियाँ जानवरों के लिए उत्तम चारा हैं। पत्तियाँ गरीबों का छप्पर बनाने के काम आती हैं। इससे चीनी, गुड़, खाँड़ आदि बनाया जाता है।

अयोध्या के जल की विशेषता बताते हुए उसकी तुलना ईख से की गयी है–

गृहगाढामविच्छिद्रां समभूमौ निवेशिताम्।
शालितण्डुलसम्पूर्णामिक्षुकाण्डरसोदकाम्॥ (1/5/17)

पुरवासियों के घरों से आबादी इतनी घनी हो गयी थी कि कहीं थोड़ा-सा भी आकाश नहीं दिखाई देता था। उसे समतल भूमि पर बसाया गया था। वह नगरी जड़हन धान के चावलों से भरपूर थी। वहाँ का जल इतना मीठा या स्वादिष्ट था, मानों ईख का रस हो।

वर्तमान में अयोध्या के आसपास ईख की खेती की जाती है।

43. नीम (Margosa, Neem Tree, Indian Lilac)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए निम्ब एवं पारिभद्रक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसके वृक्ष पूरे देश में पाये जाते हैं। इसे संस्कृत में निम्ब कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Azadirachta Indica' है। इसके वानस्पतिक नाम में Indica इसलिए आया है कि यह भारत में बहुत अधिक पाया जाता है। यह 40 से 50 फीट ऊँचा, अनेक शाखाओं-प्रशाखाओं से युक्त, सघन एवं छायादार होता है। वसन्त ऋतु में पुराने पत्ते गिर जाते हैं और नये पत्ते निकलने के साथ सफ़ेद रंग के फूलों के गुच्छे निकलते हैं। फल खिरनी के समान होते हैं जिसमें एक बीज होता है। इसे ग्रामीण क्षेत्रों में घरों के आसपास बहुत लगाया जाता है। अपने चिकित्सीय गुणों के कारण इसे घर का वैद्य कहा जाता है। इसके फलों से मारगोसा आयल प्राप्त किया जाता है। नीम में कीटनाशक क्षमता होती है। इसकी लकड़ी का उपयोग इमारतों, फर्नीचर आदि के लिए किया जाता है। इसकी पत्तियों और बीज से एक कीटनाशक 'अजैडिरैक्टीन' निकाला जाता है।

अयोध्या में मन्त्री सुमन्त ने कैकेयी को समझाते हुए नीम का उल्लेख किया–

आम्रं छित्त्वा कुठारेण निम्बं परिचरेत् तु कः।
यश्चैनं पयसा सिंचैन्नवास्य मधुरो भवेत्॥ (2/35/16)

भला आम को कुल्हाड़ी से काटकर उसकी जगह नीम का सेवन कौन करेगा? जो आम की जगह नीम को ही दूध से सींचता है, उसके लिए भी यह नीम मीठा फल देने वाला नहीं हो सकता (अतः वरदान के बहाने श्रीराम को वनवास देकर कैकेयी के चित्त को सन्तुष्ट करना राजा के लिए कभी सुखद परिणाम का जनक नहीं हो सकता)।

नीम के वृक्ष अयोध्या से प्रयाग तक सर्वत्र पाये जाते हैं। इसके गुणों को देखते हुए अयोध्या से प्रयाग तक सर्वत्र इसे लगाया जाना चाहिए।

44. मल्लिका (बेला) (Arabian Jasmine)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए मल्लिका शब्द का प्रयोग किया गया है। भावप्रकाशनिघण्टु में मल्लिका को बेला का एक प्रकार बताया गया है। संस्कृत में इसे श्रीपदी, वार्षिकी, मुक्तबन्धना आदि कहते हैं। बेला भारत के सभी स्थानों पर उद्यानों में लगाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Jasminum sambac' है। यह 0.5 से 3 मीटर तक ऊँचाई प्राप्त करता है। इसका पौधा झाड़ीदार होता है। इसके पुष्प अत्यन्त सुगन्धित, श्वेत, एकाकी या 3 एक साथ होते हैं। बेला अनेक प्रकार के होते हैं जिसमें मोतिया बेला, हजारा बेला तथा मोगरा आदि मुख्य हैं।

भरद्वाज मुनि के आश्रम में बेला के पौधे थे–

शिंशपाऽऽमलकी जम्बूर्याश्चान्याः कानने लताः।
मालती मल्लिका जातिर्याश्चान्याः कानने लताः।
प्रमदाविग्रहं कृत्वा भरद्वाजा श्रमेऽवसन्॥ (2/91/51)

शिंशपा, आमलकी और जम्बू आदि स्त्रीलिंग वृक्ष तथा मालती, मल्लिका और जाति आदि वन की लताएँ नारी का रूप धारण करके भरद्वाज मुनि के आश्रम में आ बसीं।

अयोध्या से प्रयाग के बीच में आश्रम या मन्दिर परिसर में फूलों के लिए बेला को लगाया जाना चाहिए।

45. शीशम, शिंशपा (Sissoo)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए शिंशपा शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Dalbergia sissoo' है। यह उष्णकटिबन्धीय जलवायु में उत्पन्न होने वाली प्रजाति है। यह अधिकतम 49 डिग्री से.ग्रे. से न्यूनतम .4 डिग्री से.ग्रे. तक तापमान में उगता है। उपहिमालय क्षेत्र में यह 1500 मीटर तक की ऊँचाई से लेकर गांगेय क्षेत्र तक प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। नदी के किनारे के क्षेत्र जहाँ वर्षा का पानी भर जाता है अथवा जिस क्षेत्र को नदी छोड़ देती है, वहाँ पर सबसे पहले शीशम ही उगता है। रेतीली भूमि, जहाँ पानी न रुकता हो और नमी हो, इसके लिए सर्वाधिक अनुकूल होती है। यह कड़ी मटियार भूमि में अच्छा नहीं चल पाता।

बीहड़ की कटी-फटी मृदा में यह अच्छी तरह बढ़ता है। इस प्रजाति की सर्वोत्तम वृद्धि नेपाल के सीमावर्ती तराई क्षेत्र में है। नदी, नालों के किनारे बाढ़ की ताजी रेतीली तथा कँकरीली मिट्टी में यह खैर के साथ मिलता है। पानी के साथ बीज बहकर चला आता है तथा पानी सूखने के बाद शीशम झुण्ड में उगा मिलता है।

इसके 3 से 4 मी. लम्बे पौधे भी सफलता से रोपित किये जा सकते हैं। यह बहुत तेज़ी से बढ़ने वाली प्रजाति है जो 25 से 30 वर्षों में 10 से 15 मी. तक ऊँचाई हासिल कर लेती है। इसकी छाल रूखी होती है तथा छोटे-छोटे टुकड़ों में उखड़ती रहती है। पत्तियाँ हलके हरे रंग की तथा कम्पाउण्ड होती हैं। पत्तियों की लम्बाई 2.5 से 7 से.मी. तथा चौड़ाई 2.5 से.मी. होती है। पत्तियाँ गोल या अण्डाकार होती हैं तथा सिरा नुकीला होता है। इसके पुष्प मार्च-अप्रैल में आने लगते हैं तथा वृक्ष छोटे-छोटे सफ़ेद पीले फूलों से भर जाता है। इसकी फली जुलाई तक आ जाती है तथा जाड़े तक पक जाती है।

इसका पतझड़ नवम्बर से दिसम्बर तक हो जाता है तथा मार्च-अप्रैल में नयी पत्तियाँ आने लगती हैं। पत्तियाँ पीली होकर नवम्बर में गिरने लगती हैं तथा दिसम्बर जनवरी में वृक्ष प्रायः नंगा रहता है। जनवरी के अन्त तक नयी पत्तियों के निकलने से इसका रंग सुनहरा हो जाता है। इसको धूप की अत्यधिक आवश्यकता होती है। यह कठोर और मज़बूत वृक्ष है। यह सूखे और पाले को बर्दाश्त कर लेता है।

सागौन के बाद शीशम भारत का सबसे अच्छा प्रकाष्ठ है। इसकी लकड़ी बहु उपयोगी होती है। इस पर पालिश अच्छी आती है और इसका रेशा महीन होता है। इसकी लकड़ी हर प्रकार के निर्माण कार्य जैसे—दरवाज़े, खिड़की के फ्रेम, सभी प्रकार के फर्नीचर जैसे सोफ़ा, मेज़, कुर्सी, चारपाई के पाये तथा बिजली के स्विच बोर्ड आदि के निर्माण में प्रयोग की जाती है। रेलगाड़ी एवं मालगाड़ी के डिब्बे बनाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है। शीशम की लकड़ी जहाज़ एवं खेल के अन्य सामान जैसे बैडमिंटन रैकेट के हैंडिल बनाने के काम आती है। मूर्तिकारी एवं नक़्क़ाशी में भी इसकी लकड़ी का प्रयोग किया जाता है। इसकी लकड़ी का उपयोग जलौनी के रूप में भी किया जाता है। इसका पत्तियों का उपयोग कहीं-कहीं पर चारे के लिए किया जाता है। इसकी कच्ची लकड़ी पर कीटाणुओं—मुख्यतः घुन का असर बहुत शीघ्र हो जाता है। इसलिए इसकी कच्ची लकड़ी फर्नीचर आदि के लिए ठीक नहीं होती है।

भरद्वाज मुनि के आश्रम में शीशम के वृक्ष थे—

शिंशपाऽऽमलकी जम्बूर्याश्चान्याः कानने लताः।
मालती मल्लिका जातिर्याश्चान्याः कानने लताः।
प्रमदाविग्रहं कृत्वा भरद्वाजा श्रमेऽवसन्॥ (2/91/51)

शिंशपा, आमलकी और जम्बू आदि स्त्रीलिंग वृक्ष तथा मालती, मल्लिका और जाति आदि वन की लताएँ नारी का रूप धारण करके भरद्वाज मुनि के आश्रम में आ बसीं।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार श्रीराम ने शृंगवेरपुर में शीशम के वृक्ष के नीचे विश्राम किया—

जहँ सिंसुपा पुनीत तरु रघुबर किय विश्राम। (2/198)

शीशम के वृक्ष अयोध्या से प्रयाग तक सर्वत्र पाये जाते हैं। इसके उपयोग को देखते हुए अयोध्या से प्रयाग तक सर्वत्र इसे लगाया जाना चाहिए।

46. कमल (Lotus)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए पद्म या कमल शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Nelumbo nucifera' है। कमल भारतीय जलाशयों में उत्पन्न होता है। इसकी पत्तियाँ गोल-गोल बड़ी तथा थाली के आकार की तथा 30 से.मी. से 90 से.मी. या 1 फीट से 3 फीट व्यास की होती है और बीच के पतले डंठल से जुड़ी रहती हैं। कमल का पुष्प प्रातःकाल सूर्योदय के साथ खिलता है तथा सायंकाल सूर्यास्त के बाद बन्द हो जाता है। पुष्प सफ़ेद या रक्तवर्ण के होते हैं। कमल की जड़ मोटी और छिद्रयुक्त होती है।

अयोध्या की अशोक वाटिका में कमल के पुष्प थे–

माणिक्यकृतसोपानाः स्फाटिकान्तरकुट्टिमाः।
फुल्लपद्मोत्पलवनाश्चक्रवाकोपशोभिताः॥ (7/42/11)

जिनमें माणिक्य की सीढ़ियाँ बनी थीं। सीढ़ियों के बाद कुछ दूर तक जल के भीतर की भूमि स्फटिक मणि से बँधी हुई थी। उन बावड़ियों के भीतर खिले हुए कमल और कुमुदों के समूह शोभा पा रहे थे, चक्रवाक भी उसकी शोभा बढ़ा रहे थे।

47. सरसों (Rape)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए सर्षप शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Brassica campestris' है। सरसों एक प्रसिद्ध तिलहन है। समस्त भारत में इसकी व्यापक खेती की जाती है। इसे मुख्यतः गेहूँ एवं चना आदि के साथ बोया जाता है। इसका तेल खाने, शरीर में लगाने एवं अन्य कार्यों में उपयोग किया जाता है। भारत में इसकी अनेक किस्में मुख्यतः काली सरसों, लाल सरसों, पीली सरसों तथा सफ़ेद सरसों का उपयोग किया जाता है।

अयोध्या में शुभकार्य में सरसों का प्रयोग किया जाता था–

घृतं श्वेतानि माल्यानि समिधैव सर्षपान्।
उपसम्पादयामास कौशल्या परमाङ्गना॥ (2/25/28)

श्रेष्ठ नारी महारानी कौशल्या ने घी, श्वेत पुष्प और माला समिधा तथा सरसों आदि वस्तुएँ ब्राह्मण के समीप रखवा दीं।

48. करीर या करील (Caper Plant)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए करीर शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में करीर, अपत्र या मरुरुह तथा हिन्दी में करील कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Capparis decidua' है। यह भारत के उष्ण प्रदेशों मुख्यतः राजस्थान, गुजरात, मध्य भारत एवं अन्य शुष्क क्षेत्रों में प्रमुखता से पाया जाता है। इसके चिकने, हरे एवं घनी शाखाओं वाले कँटीले शाख वाले

छोटे वृक्ष होते हैं। इसमें प्रायः पत्ते नहीं पाये जाते। कभी-कभी नवीन शाखाओं पर छोटे- छोटे नुकीले पत्ते आते हैं जो बाद में गिर जाते हैं। फरवरी-मार्च में पीले या गुलाबी फूल आते हैं जो 20 मि.मी. तक चौड़े होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में फल आते हैं जो 1.5 से 1.8 से.मी. व्यास के होते हैं। फल पकने पर लाल या गुलाबी हो जाते हैं। कलियों एवं कच्चे फलों का शाक एवं अचार बनाया जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने वन की कठिनाइयों को श्रीराम द्वारा सीता को समझाते समय करील का उल्लेख किया है–

नव रसाल वन बिहरन सीला।
सोह कि कोकिल बिपिन करीला ॥ (2/63)

49. वञ्जुल, वेतस (बेंत) (Cane)

इसे संस्कृत में वेतस, वानीर, वञ्जुल आदि कहते हैं। यह जलप्राय भूमि पर लगभग दो हज़ार फीट की ऊँचाई तक पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Calamus tenuis' है। इसकी लता सघन, आरोही तथा काँटेदार होती है। इसके पत्ते दो से चार फीट लम्बे तथा पक्षाकार होते हैं। इसके पत्ते 15 से 30 से.मी. तक लम्बे रेखाकार, भालाकार, नुकीले एवं तीन शिराओं से युक्त होते हैं। इसमें प्रायः 2 से.मी. तक सीधे एवं लम्बे काँटे होते हैं। इसके फल जाड़ें में पकते हैं।

इसकी एक अन्य प्रजाति जलबेंत है जिसे अंग्रेज़ी में Indian Willow कहते हैं। वाल्मीकि रामायण में इसके लिए भी निचुल, वेतस एवं वञ्जुल शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Salix tetrasperma' है। यह वृक्ष प्रायः नदी, नालों के किनारे पाया जाता है। यह हिमालय में 6000 फीट की ऊँचाई तक पाया जाता है। इसके पत्ते 3 से 6 इंच लम्बे, रेखाकार, मालाकार एवं चिकने होते हैं। इसके पुष्प सफ़ेदी लिए सुगन्धित मंजरियों में आते हैं। इसकी लचीली एवं पतली शाखाओं से टोकरियाँ बनाई जाती हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भरत जी की स्थिति का वर्णन करते समय बेंत का उल्लेख किया है–

बिलसत बेतस बनज निकासे ॥ (2/325)

50. सुपारी (Indian Nut, Betel Nut)

इसे संस्कृत में पूगफल आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Areca catechu' है। भारत सुपारी उत्पादन में विश्व में अग्रगण्य है। कर्नाटक, केरल, असम, मेघालय, तमिलनाडु आदि राज्यों में सुपारी प्रमुखता से उगाई जाती है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार प्राचीन काल में शुभ अवसरों पर वृक्षारोपण की परम्परा थी। श्रीराम के विवाह के उपरान्त अयोध्या में सुपारी का रोपण किया गया–

सफल पूगफल कदलि रसाला।
रोपे बकुल कदम्ब तमाला॥ (1/344)

श्रीराम के राज्याभिषेक के निर्णय के उपरान्त गुरु वशिष्ठ ने वृक्षारोपण का आदेश दिया–

सफल रसाल पूगफल केरा।
रोपहु वीथिन्ह पुर चहुँ फेरा॥ (2/6)

51. रेंड़ (Castor Oil Plant)

इसका वानस्पतिक नाम 'Ricinus communis' है। यह सम्पूर्ण भारत के शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका उपयोग औषधियाँ बनाने में किया जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार वनगमन का लाभ बताते हुए श्रीराम ने रेंड़ का उल्लेख किया है–

सेवहिं अरडु कलपतरु त्यागी॥ (2/42)

52. तुलसी (Common Sweet Basil)

इसका वानस्पतिक नाम 'Ocimum basilicum' है। यह देश के लगभग सभी भागों में पायी जाती है। इसका पौधा सीधा एवं 1 से 2 फीट तक ऊँचा होता है। इसकी शाखाएँ हरे अथवा पीलापन युक्त हरे रंग की होती हैं। पत्ते 1 से 2 इंच लम्बे तथा नुकीले होते हैं। शाखाओं के अन्त में फूलों की मंजरी लगती है। यह एक पवित्र पौधा है जिसे हिन्दू समाज घर में लगाता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार रामराज्य में प्रत्येक मन्दिर परिसर में तुलसी के उपवन थे–

तीर तीर देवन्ह के मन्दिर।
चहुँ दिसि तिन्ह के उपवन सुन्दर॥
तीर-तीर तुलसिका सुहाई।
बृन्द-बृन्द बहु मुनिन्ह लगाई॥ (7/49)

53. दूब घास (Indian Doab)

इसका वानस्पतिक नाम 'Cynodon dactylon' है। यह प्रायः सम्पूर्ण भारत में पायी जाती है। इसका प्रयोग मांगलिक कार्यों में किया जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार वनवास के उपरान्त श्रीराम के अयोध्या लौटने पर दूब का प्रयोग किया गया–

दधि दुर्बा रोचन फल फूला। (7/3)

54. हलदी (Turmeric)

इसका वानस्पतिक नाम 'Curcuma longa' है। इसे संस्कृत में दुर्वा कहते हैं। प्रायः सम्पूर्ण भारत में इसकी खेती की जाती है। इसका प्रयोग विवाह एवं अन्य मांगलिक कार्यों में किया जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार वनवास के उपरान्त श्रीराम के अयोध्या लौटने पर हलदी का प्रयोग किया गया–

दधि दुर्बा रोचन फल फूला। (7/3)

खण्ड-2

प्रयाग से चित्रकूट

प्रयाग से चित्रकूट के बीच की वनस्पति में कोई विशेष अन्तर नहीं है। वर्तमान में चित्रकूट का कुछ भाग उत्तर प्रदेश के कर्वी (चित्रकूट) एवं कुछ भाग मध्य प्रदेश के सतना ज़िले में है। चित्रकूट में अभी भी सघन वन क्षेत्र हैं। चित्रकूट के वन क्षेत्र की मुख्य प्रजातियाँ बाँस, तेन्दू, चिरौंजी, आँवला, महुआ, अर्जुन, जामुन, सेमल, कंजी, बेर, बेल, धव, असन, सेजा, ढाक, बहेड़ा, सीरस, काला शीशम, इमली आदि हैं।

भरद्वाज जी चित्रकूट की महिमा बताते हुए श्रीराम से कहते हैं कि चित्रकूट के वनों में कभी आग नहीं लगती। इससे स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में आग का प्रकोप नहीं था—

स पन्थाचित्रकूटस्य गतस्य बहुषो मया।
रम्यो मार्दवयुक्तश्च दावैश्चैव विवर्जितः॥ (2/55/9)

यह वही स्थान है जहाँ से चित्रकूट का रास्ता जाता है। मैं उस मार्ग से कई बार गया हूँ। वहाँ की भूमि कोमल और दृश्य रमणीय है। उधर कभी दावानल का भय नहीं होता है।

प्रयाग से चित्रकूट के बीच की वनस्पतियाँ निम्न प्रकार हैं—

1. साल (Shorea)

चित्रकूट में भरत के आने के समय लक्ष्मण ने साल वृक्ष पर चढ़कर उस दिशा में देखा—

स लक्ष्मणः संत्वरितः सालमारुह्य पुष्पितम्।
प्रेक्षमाणो दिशः सर्वाः पूर्वा दिशमवैक्षत॥ (2/96/11)

भगवान श्रीराम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण तुरन्त ही फूलों से भरे हुए एक शाल-वृक्ष पर चढ़ गये और सम्पूर्ण दिशाओं की ओर देखते हुए उन्होंने पूर्व दिशा की ओर दृष्टिपात किया।

थोड़ी देर बाद स्थिति का आकलन कर लक्ष्मण साल के वृक्ष से उतरे—

वृक्षाग्रादवरोह त्वं कुरु लक्ष्मण मद्वचः।
इतीव रामो धर्मात्मा सौमित्रि तमुवाच ह॥ (2/97/27)
अवतीर्य तु सालाग्रात् तस्मात् समितिंजयः।
लक्ष्मणः प्रांजलिर्भूत्वा तस्थौ रामस्य पार्श्वतः॥ (2/97/28)

लक्ष्मण! अब मेरी बात मानो और पेड़ से नीचे उतर आओ। धर्मात्मा श्रीराम के ऐसा कहने पर युद्ध में विजय प्राप्त करने वाले लक्ष्मण उस साल के वृक्ष के अग्रभाग से उतरे और श्रीराम के पास हाथ जोड़कर खड़े हो गये।

चित्रकूट में श्रीराम की पर्णशाला में साल का प्रयोग किया गया था—

सालतालाश्चकर्णानां पर्णैर्बहुभिरावृताम् ।
विशालां मृदुभिस्तीर्णां कुशैर्वेदिमिवाध्वरे ॥ (2/99/19)

वह शाल, ताल और अश्वकर्ण नामक वृक्षों के बहुत से पत्तों द्वारा छायी हुई थी; अतः यज्ञशाला में जिस पर कोमल कुश बिछाये गये हों, उस लम्बी-चौड़ी वेदी के समान शोभा पा रही थी।

प्रयाग से चित्रकूट के बीच साल लगाने का विशेष प्रयास किया जाना चाहिए।

2. बाँस (Bamboo)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए वंश, वेणु एवं कीचक शब्द का प्रयोग किया गया है। बचपन में खिलौने से लेकर अन्त समय में चिता तक मानव बाँस का लगातार प्रयोग करता रहता है। बाँस जैसी विविध उपयोग की दूसरी प्रजाति नहीं हैं। यह भारतीय जीवन पद्धति का अभिन्न अंग है। अपने उपयोग के कारण ही हमारे देश में इसे 'गरीब आदमी का काष्ठ', 'हरा सोना' एवं 'लोगों का साथी' आदि कहा जाता है। चीन में इसे 'लोगों का मित्र' तथा वियतनाम में 'भाई' कहा जाता है।

यह महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो तेज़ी से बढ़ता है तथा 4-5 वर्षों में ही उपयोग के योग्य हो जाता है। भारत में लगभग 90 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बाँस की लगभग 125 प्रजातियाँ पायी जाती हैं। देश में बाँस अरुणांचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, सिक्किम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, अण्डमान, छत्तीसगढ़ आदि के वन क्षेत्रों में सर्वाधिक पाया जाता है। उपयोगिता के कारण इसे उगाया जाता है। सामान्यतया गाँव में लोग अपने घर के आस-पास काफ़ी मात्रा में बाँस उगाते हैं ताकि वे अपनी प्रतिदिन की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से कर सकें। बाँस उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों में समुद्र तल से लेकर शीतोष्ण क्षेत्रों में 4000 मीटर की ऊँचाई तक पाये जाते हैं। यह घासकुल का पौधा है। इस पादप के मुख्यतः तीन भाग होते हैं। भूमि के अन्दर का रूपान्तरित तना राइजोम, जड़ तथा काण्ड। बाँस में भी दूसरी घासों की तरह एक जड़ समूह से कई तने निकलते हैं। तने का कुछ हिस्सा ज़मीन के अन्दर रहता है जिसे 'प्रकन्द या राइजोम' कहते हैं। हर वर्ष वर्षाकाल में राइजोम से नये कल्ले निकलते हैं। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, राइजोम बाहर की ओर बढ़ता जाता है और नये कल्ले आते जाते हैं। भूमि के ऊपर के भाग को काण्ड कहते हैं। सामान्य रूप से यही बाँस कहलाता है। प्रत्येक नाल में ठोस सन्धि या गाँठ (नोड) तथा खोखली पर्व (इण्टरनोड) होती हैं।

बाँस के फूलने का समय नवम्बर से फरवरी तक होता है। तदुपरान्त बीज पककर अप्रैल से जून तक गिर जाते हैं। पुष्पण व्यवहार के आधार पर बाँस को तीन वर्गों में बाँटा गया है–

(i) ऐसे बाँस जो प्रतिवर्ष लगभग इसी अवधि में पुष्पित होते हैं।

(ii) ऐसे बाँस जिसमें सामूहिक पुष्पण होता है तथा पुष्पण के बाद इनके पुंज सूख जाते हैं।

(iii) ऐसे बाँस जिसमें छिटपुट (स्पेरोडिक) पुष्पण होता है। इन प्रजातियों के पुंज की कुछ नालों में अलग-अलग आयु पुष्पण एवं बीजीकरण होता है।

बाँस में प्रतिवर्ष फूल नहीं आते। सामान्यतया इसके पूर्ण जीवनकाल (20 से 40 वर्ष) में केवल एक बार ही फूल आता है। क्षेत्र के छोटे-बड़े सभी बाँसों में एक ही समय पर फूल आता है तथा इसे ग्रिगेरियस फ्लावरिंग कहते हैं। फूल आने के बाद बाँस सूख जाता है। बाँस की मुख्य प्रजातियों का पुष्पण चक्र निम्न प्रकार है–

क्र.सं.	प्रजाति का नाम	पुष्पण चक्र (वर्षों में)
1.	बैम्बूसा अत्रा	वार्षिक
2.	बैम्बूसा कोपलेण्डी	40 वर्ष
3.	बैम्बूसा न्यूटेन्स–विधूली बाँस	35 वर्ष
4.	बैम्बूसा पालीमारफा–नारंगी बाँस	35 से 60 वर्ष
5.	बैम्बूसा टुल्डा–नाल बाँस	30 से 40 वर्ष
6.	बैम्बूसा बैम्बोस	32 से 45 वर्ष
7.	बैम्बूसा स्ट्रिआटा	वर्ष 1810 के पश्चात् पुष्पण नहीं पाया गया।
8.	बैम्बूसा अरुनडिनेसिया–कँटीला बाँस	30 से 40 वर्ष
9.	चिमोनोबैम्बूसा फलकेटा	20 से 30 वर्ष
10.	चिमोनोबैम्बूसा जौनसारेनिन्सस–सरूरा बाँस	45 से 55 वर्ष
11.	डैन्ड्राकेलेमस स्ट्रिक्टस–लाठी बाँस	20 से 65 वर्ष
12.	डैन्ड्राकेलेमस हेमिल्टोनाई–काग़ज़ी बाँस	30 से 40 वर्ष
13.	ऑक्सीटेनेन्थरा एबिनि	30 वर्ष
14.	मेलोकाना बेसिफेरा–मूली बाँस	45 वर्ष
15.	ओकलेन्ड्रा ट्रेवनकोरिका–इरूल बाँस	7 वर्ष
16.	आक्सीटेनेन्थेरा एबिसिनिका	30 वर्ष
17.	फायलोस्टैचिस बैम्बूसायडिस	60 वर्ष
18.	थैमोमोलेमस फलकेनेरी–देवरिगाल	28 से 30 वर्ष
19.	थैमोमोलेमस स्पेथीलोरस	16 से 17 वर्ष
20.	थायोस्टैचिस ओलीवरी	48 से 50 वर्ष

बाँस का विकास अन्य वृक्षों के समान नहीं होता। सबसे पहले भूमिगत गाँठ से राइजोम के द्वारा निकला तना (कल्म) बढ़ता है उसके बाद तेज़ी से इसकी ऊँचाई बढ़ती है। वर्षा से पहले बाँस के चारों ओर मिट्टी चढ़ाई जाती है। टोकरी बनाने के लिए तीन से चार वर्ष का बाँस उपयोगी होता है। मज़बूती के लिए 6 वर्ष का बाँस उपयोगी है। अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से दिसम्बर तक बाँस की कटाई करनी चाहिए।

भारत में पायी जाने वाली बाँस की मुख्य प्रजातियाँ निम्न प्रकार हैं–

1. बैम्बूसा बाल्कुआ–यह हल्के भूरे रंग वाला लम्बा बाँस है। इसकी ऊँचाई 15 से 23 मीटर तक तथा मोटाई या व्यास 8 से 17 से.मी. तक होता है। इस बाँस की अन्तर्गांठ 20 से 40 से.मी. तक लम्बी होती है। हमारे देश में यह बाँस मुख्यतः असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, अरुणांचल प्रदेश, पूर्वी उत्तर प्रदेश आदि में पाया जाता है। संश्लेषण करने पर यह बहुत मज़बूत और कीट प्रतिरोधी हो जाता है। इस बाँस का उपयोग मुख्यतः निर्माण कार्य, अगरबत्ती की तीलियाँ आदि बनाने में होता है।

2. बैम्बूसा बैम्बोस–यह गहरे हरे रंग की चमकदार नालों वाला कंटीला बाँस है। इसकी ऊँचाई 15 से 30 मीटर और व्यास 15 से 18 से.मी. तक होता है। अन्तर्गांठ सामान्यतया 20 से 40 से.मी. लम्बी होती है। इसमें 30 से 45 वर्षों में व्यापक पुष्पण होता है। यह बाँस भारत के सभी राज्यों में

तथा मुख्य रूप से आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा में पाया जाता है। इसे प्रायः रैटरों, सीढ़ियों, तम्बू के खम्भों, ताँगे के शेट, चटाइयों, टोकरियों आदि के निर्माण में प्रयोग किया जाता है। इसे काग़ज़ की लुगदी बनाने में भी प्रयोग किया जाता है। इसके बीज एवं कोमल प्ररोह का उपयोग खाने में भी किया जाता है।

3. बैम्बूसा न्यूटेन्स–इसकी ऊँचाई 6 से 15 मीटर और व्यास 5 से 10 से.मी. तक होता है। अन्तर्गांठ सामान्यतया 25 से 45 से.मी. लम्बी होती है। इसमें 4 से 14 वषो में व्यापक पुष्पण होता है। कभी-कभी छिटपुट पुष्पण भी होता है। यह बाँस यमुना नदी के पूर्वी क्षेत्रों से लेकर अरुणांचल प्रदेश तक लगभग 1200 मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है। इसे मुख्यतः काग़ज़ उद्योग में प्रयोग किया जाता है। इसका उपयोग खम्बों के लिए भी किया जाता है।

4. बैम्बूसा पैलिडा–इस बाँस का बीड़ घना होता है। इसकी ऊँचाई 12 से 20 मीटर और व्यास 4 से 7 से.मी. तक होता है। अन्तर्गांठ सामान्यतया 45 से 80 से.मी. लम्बी होती है। यह बाँस मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, सिक्किम, अरुणांचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, नागालैण्ड, त्रिपुरा और उड़ीसा में पाया जाता है। इस बाँस का उपयोग निर्माण और अन्य कार्य जैसे चटाई, टोकरियाँ बनाना आदि में किया जाता है।

5. बैम्बूसा टुल्डा–इस बाँस की नालें प्रायः 7 से 23 मीटर और व्यास 5 से 10 से.मी. तक होता है। अन्तर्गांठ सामान्यतया 40 से 70 से.मी. लम्बी होती है। प्राकृतिक रूप से यह बाँस पूर्वी भारत में समुद्र तल से 400 मी. की ऊँचाई पर व्यापक रूप से उगता है। यह उत्तर प्रदेश और कर्नाटक में भी उगाया जाता है। यह अत्यन्त उपयोगी बाँस है। इसकी मज़बूत नालों के कारण इसे भवन निर्माण कार्य, ढाँचा बनाने एवं छत बनाने के उपयोग में लाया जाता है। इसका उपयोग चटाइयाँ एवं टोकरियाँ बनाने तथा काग़ज़ की लुगदी बनाने में किया जाता है।

6. बैम्बूसा वुल्गैरिस–यह मध्यम आकार का एक मज़बूत बाँस है। इस बाँस की नालें प्रायः 8 से 20 मीटर और व्यास 4 से 10 से.मी. तक होता है। यह भारत में अनेक स्थानों पर उगाया जाता है। इसका उपयोग काग़ज़ बनाने में किया जाता है।

7. डेन्ड्रोकेलेमस एस्पर–यह एक विदेशी बाँस है। यह बाँस उष्ण कटिबन्धीय एशिया तथा मलेशिया, इण्डोनेशिया आदि में उगाया जाता है। इसे अब भारत में भी उगाया जाता है। यह बहुत मज़बूत बाँस है। इस बाँस की नालें प्रायः 20 से 30 मीटर और व्यास 10 से 20 से.मी. तक होता है। नीचे की अन्तर्गांठ 10 से 20 से.मी. तथा ऊपर की अन्तर्गांठ 30 से 50 से.मी. लम्बी होती है। इसका कोमल प्ररोह पौष्टिक भोज्य पदार्थ है। इसका डिब्बाबन्दी (कैनिंग) गुण अच्छा है। इस बाँस की नालें मज़बूत होती हैं तथा इसका उपयोग निर्माण कार्यों एवं पुल बनाने में किया जाता है। अन्तर्गांठों का एक सिरा बर्तन के रूप में खाना बनाने वाले बर्तन की तरह प्रयोग किया जाता है।

8. डेन्ड्रोकेलेमस जाईगेन्टियस–यह सबसे बड़ा बाँस है। यह बहुत मज़बूत बाँस है। इस बाँस की नालें प्रायः 24 से 35 मीटर और व्यास 20 से 30 से.मी. तक होता है। यह म्याँमार मूल का बाँस है। इसे भारत के उत्तर पूर्वी एवं कभी-कभी अन्य भागों में भी उगाया जाता है। इसका मुलायम प्ररोह अच्छा भोज्य पदार्थ है। यह भवन निर्माण, पानी की बाल्टियाँ, सन्दूक, नावों का मस्तूल एवं फूलदान बनाने के काम आता है। इसका उपयोग उत्तम श्रेणी का काग़ज़ बनाने में किया जाता है।

9. डेन्ड्रोकेलेमस हेमिल्टोनाई–यह बड़े आकार का बाँस है। यह प्रजाति मुख्यतः उत्तरपूर्वी तथा

उत्तर-पश्चिमी हिमालय में 600 से 1200 मी. की ऊँचाई पर पायी जाती है। इस बाँस की नालें प्रायः 25 मीटर तक लम्बी और व्यास 10 से 18 से.मी. तक होता है। अन्तर्गांठ सामान्यतया 30 से 50 से.मी. लम्बी होती है। इसकी नालों की दीवारें पतली होती हैं। इस बाँस का उपयोग निर्माण कार्यों, टोकरियाँ, चटाइयाँ, पानी व दूध के बर्तन तथा रेट आदि बनाने के काम में होता है।

10. डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस–यह प्रजाति पूरे भारत में 1000 मी. की ऊँचाई तक पायी जाती है। इसे सामान्यतः मैदानी क्षेत्रों एवं पहाड़ों की तलहटियों में उगाया जाता है। इस बाँस की नालें प्रायः 8 से 16 मीटर तक लम्बी और व्यास 2.5 से 8 से.मी. तक होता है। यह लगभग ठोस या अन्तर्गांठों युक्त मोटी दीवालों वाला होता है। यह बहुत मज़बूत बाँस है। भारतीय बाँसों में यह सर्वाधिक उपयोगी है। इस बाँस का उपयोग बंजर भूमि सुधार कार्यों, निर्माण कार्यों, टोकरियाँ, चटाइयाँ, फर्नीचर, कृषि उपकरण एवं औजारों के हत्थे आदि बनाने के काम में होता है।

11. मैलोकोना बैक्किफेरा–यह सदाबहार बाँस है। इसकी नालें 10 से 12 मीटर और व्यास 3 से 7 से.मी. तक होता है। अन्तर्गांठ सामान्यतया 20 से 50 से.मी. लम्बी होती है। यह बाँस मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल, मिजोरम, अरुणांचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, नागालैण्ड, त्रिपुरा और पूर्वी भारत के अन्य मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है। यह बहुत उपयोगी बाँस है। इस बाँस का उपयोग निर्माण और अन्य कार्य जैसे चटाई, टोकरियाँ, खाद्यान्न के कण्टेनर, छाते की डंडियाँ, हैट एवं खिलौने आदि बनाने में किया जाता है।

12. आक्लेन्ड्रा ट्रेवनकोरिका–इसकी नालें 2 से 6 मीटर और व्यास 2.5 से 5 से.मी. तक होता है। इसकी पतली दीवालों वाली अन्तर्गांठें होती हैं। यह बाँस मुख्य रूप से केरल एवं तमिलनाडु के पहाड़ी क्षेत्रों तथा टिन्नीवैली ज़िले में 1500 मी. की ऊँचाई तक पाया जाता है। यह काग़ज़ की लुगदी बनाने हेतु सर्वाधिक उपयोगी बाँस है। इसके अतिरिक्त इस बाँस का उपयोग चटाई, टोकरियाँ, अस्थाई झोंपड़ियाँ आदि बनाने में किया जाता है। यह जलमार्गों के साथ अबसे अच्छे मृदाबन्धक हैं।

जहाँ मज़बूती एवं लचीलापन दोनों चाहिए, वहाँ बाँस सर्वाधिक उपयोगी है। इसके सभी उपयोगों का वर्णन सम्भव नहीं है किन्तु कुछ परम्परागत उपयोग निम्न प्रकार हैं–कृषि उपकरण जैसे जुआ, तीर, पीठ में लगाने वाले टोकरे, टोकरियाँ, बिछौने, नावें, बोतलें, धनुष, पुल, झाड़, ब्रश, टोपी, कुर्सियाँ, चिक, चापस्टिक्स, ताबूत, कंघे, कण्टेनर्स, भोज्य पदार्थ, कार्डेज, रद्दी की टोकरियाँ, पंखे, बाड़, मछली फँसाने की लग्गी, ध्वज दण्ड, प्रकाष्ठ को तैराने हेतु सहायक उपकरण, बाँसुरी, फूलदान, भोजन की टोकरियाँ, जलाऊ लकड़ी, फर्नीचर, हैट, हस्तकला, हुक्के की नली, पतंग, सीढ़ियाँ, लैम्प, माचिस की तीलियाँ, चटाइयाँ, संगीत उपकरण, कील, आभूषण, खम्बे, पैन, रेआन पल्प, रूफिंग, स्केफोल्डिंग, स्कूप्स, सीड ड्रिल्स, जूते, शटल, खेल कूद का सामान, स्प्रेयर, स्टूल्स, स्टिक्स, टेबिल, थैचिंग, दीवारें तथा रेपर्स आदि। बाँस से काग़ज़ बनाने हेतु उत्तम लुग्दी तैयार होती है। अचार बनाने के लिए इसके कोपलों का प्रयोग किया जाता है। इसकी पत्तियाँ बहुत अच्छा चारा हैं।

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग में सघन बाँस के वन थे–

क्रोशमात्रं ततो गत्वा नीलं प्रेक्ष्य च काननम्।
सल्लकीबदरीमिश्रं रम्यं वंशैश्च यामुनैः॥ (2/55/8)

श्यामवट के एक कोस दूर जाने पर तुम्हें नीलवन का दर्शन होगा; वहाँ सल्लकी (चीड़) और बेर के भी पेड़ मिले हुए हैं। यमुना के तट पर उत्पन्न हुए बाँसों के कारण वह और भी रमणीय दिखाई देता है।

यमुना को पार करने के लिए बाँस की नाव बनाई गयी। इससे स्पष्ट है कि प्राचीन काल में लोग अनेक प्रकार से बाँस के उपयोग करते थे।

तौ काष्ठसंघाटमथो चक्रतुः सुमहापल्वम्।
शुष्कैर्वंशैः समाकीर्णमुशीरैश्च समावृतम्॥ (2/55/14)
ततो वैतसशाखाश्च जम्बुशाखाश्च वीर्यवान्।
चकार लक्ष्मणश्छित्त्वा सीतायाः सुखमासनम्॥ (2/55/15)

फिर उन दोनों भाइयों ने जंगल के सूखे काठ बटोरकर उन्हीं के द्वारा एक बहुत बड़ा बेड़ा तैयार किया। वह बेड़ा सूखे बाँसों से व्याप्त था और उसके ऊपर खस बिछाया गया था। तदनन्तर पराक्रमी लक्ष्मण ने बेंत और जामुन की टहनियों को काटकर सीता के बैठने के लिए एक सुखद आसन तैयार किया।

चित्रकूट के बाँस के वन क्षेत्र थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

चित्रकूट क्षेत्र में बाँस की अनेक प्रजाति मुख्यतः डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस प्रजाति के वन व्यापक रूप से पाये जाते हैं। अतः इस क्षेत्र में बाँस को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

3. आम (Mango Tree)

चित्रकूट के वन क्षेत्र में आम के वृक्ष पाये जाते थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम

प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने चित्रकूट के वन क्षेत्र में आम के वृक्ष का उल्लेख किया है–

नाथ देखिअहिं विटप विसाला।
पाकरि जंबु रसाल तमाला॥ (2/237)

प्रयाग से चित्रकूट मार्ग पर देशी आम के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

4. जामुन (Black plum or Java plum)

यमुना पार करने हेतु बाँस से निर्मित नाव पर आसन बनाने हेतु जामुन की टहनियों का प्रयोग किया गया–

तौ काष्ठसंघाटमथो चक्रतुः सुमहापल्वम्।
शुष्कैर्वंशैः समाकीर्णमुशीरैश्च समावृतम्॥ (2/55/14)
ततो वैतसशाखाश्च जम्बुशाखाश्च वीर्यवान्।
चकार लक्ष्मणश्छित्त्वा सीतायाः सुखमासनम्॥ (2/55/15)

फिर उन दोनों भाइयों ने जंगल के सूखे काठ बटोरकर उन्हीं के द्वारा एक बहुत बड़ा बेड़ा तैयार किया। वह बेड़ा सूखे बाँसों से व्याप्त था और उसके ऊपर खस बिछाया गया था। तदनन्तर पराक्रमी लक्ष्मण ने बेंत और जामुन की टहनियों को काटकर सीता के बैठने के लिए एक सुखद आसन तैयार किया।

चित्रकूट के वन में जामुन के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने चित्रकूट के वन क्षेत्र में जामुन के वृक्ष का उल्लेख किया है–

नाथ देखिअहिं विटप विसाला।
पाकरि जंबु रसाल तमाला॥ (2/237)

प्रयाग से चित्रकूट मार्ग पर जामुन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

5. असन (Indian Laural)

चित्रकूट के वन में असन के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट के बीच स्थान-स्थान पर में इसे लगाया जा सकता है।

6. लोध (Symplocos Bark)

चित्रकूट के वन में लोध के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

आयुर्वेदिक महत्त्व का यह वृक्ष वर्तमान में पूर्वोत्तर भारत में पाया जाता है। किन्तु इसे प्रयाग से चित्रकूट के बीच कहीं-कहीं पर लगाने का प्रयास करना चाहिए।

7. प्रियाल (चिरौंजी) (The Cuddapah Almond)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए प्रियाल शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Buchanania latifolia' है। पौराणिक साहित्य में इसे प्रियाल कहा गया है। यह विन्ध्याचल क्षेत्र में

व्यापक रूप से पायी जाती है। यह हिमालय की उपघाटियों में लगभग 900 मीटर की ऊँचाई तक पायी जाती है। इसकी छाल मगर की खाल की तरह होती है। इसमें हरे रंग के फूल जनवरी में आना प्रारम्भ होते हैं तथा अप्रैल-मई में फल पकने लगते हैं। इसके अन्दर का बीज अत्यन्त कड़ा होता है। इस कड़े बीज के अन्दर का भाग छोटा चिपटा और गोल होता है। यही भाग चिरौंजी कहलाता है। यह आदिवासियों का प्रमुख आहार है। वे इसे सुखाकर एवं पीसकर खाते हैं। मिठाई बनाने में इसका अत्यधिक प्रयोग होता है। इसकी पत्तियों को चारे के काम लाया जाता है।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में चिरौंजी के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

चित्रकूट के वन क्षेत्रों में अभी भी चिरौंजी के वृक्ष व्यापक रूप से पाये जाते हैं। अतः इस क्षेत्र में चिरौंजी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

8. कटहल (Jackfruit)

चित्रकूट के वन क्षेत्र में कटहल के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट के बीच एवं चित्रकूट में मुख्यतः आश्रमों पर कटहल के वृक्ष लगाये जा सकते हैं।

9. धव (धौरा), बाकली (Axle Wood)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए धव शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Anogeissus latifolia' है। यह मुख्यतः आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार एवं उत्तर प्रदेश में पाया जाता है। फरवरी में पत्ते गिरते हैं तथा मार्च तक वृक्ष पर्णविहीन रहता है। सितम्बर से जनवरी तक फूल आते हैं तथा दिसम्बर से मार्च तक फल पकते हैं। इसकी छाल सफ़ेदी लिए भूरे रंग की होती है।

बाकली के नये पत्तों में सबसे अधिक टैनिन (लगभग 55 प्रतिशत) पाया जाता है परन्तु नये पत्ते निकलने और वर्षा ऋतु प्रारम्भ होने के बीच समय कम रहता है जिससे इसको इकट्ठा करने में कठिनाई होती है।

इसकी लकड़ी बहुत लचकदार तथा मज़बूत होती है। इसका घनत्व 930 कि.ग्रा. प्रति घन मीटर है। यह गाड़ी के धुरे तथा विभिन्न उपकरणों की मुट्ठियाँ बनाने के काम आती है। इसीलिए इसे Axle wood कहा गया है। इसे पानी के जहाज़ निर्माण में भी प्रयोग किया जाता है। इस पर फिनिशिंग अच्छी आती है। यह एक अच्छी ईंधन प्रजाति है। इसका चारकोल भी अच्छा माना जाता है।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में धव के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग में एवं चित्रकूट के वन क्षेत्रों में धव के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

10. अंकोल (Sage Leaved Alangium)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए अंकोल शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे अंकोट, ढेरा, टेरा आदि भी कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Alangium lamarckii thwaites' है। यह मध्य और दक्षिण भारत, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि में पाया जाता है। इसका वृक्ष छोटा, काँटेदार एवं सघन होता है। इसके पत्ते कनेर के पत्ते के समान लम्बे होते हैं। इसका फूल श्वेत रंग का होता है। कच्चे फल नीले एवं पके फल जामुनी लाल होते हैं। बीज गुठलीदार और बड़े होते हैं।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में ढेरा के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)

काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि ।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः ॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः ।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग में एवं चित्रकूट के वन क्षेत्रों में अंकोल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

11. भव्य/चालता/नीम (Elephant Apple)

वाल्मीकि रामायण की गीता प्रेस की टीका में भव्य का अर्थ नीम दिया गया है किन्तु भव्य शब्द का प्रयोग चालता के लिए ही किया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Dillenia indica' है। यह हिमालय तराई के सदाहरित जंगलों (कुमायूँ और गढ़वाल) से लेकर असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश एवं दक्षिण भारत में पाया जाता है। यह सदाहरित वृक्ष है किन्तु कभी-कभी ग्रीष्म ऋतु में कुछ वृक्षों में पतझड़ भी हो जाता है। इसकी पत्तियाँ 20 से 30 से.मी. लम्बी तथा आयताकार, भालाकार, किनारों पर आरावत् तीक्ष्ण दन्तुर और अग्र पर सहसा नुकीली या कभी-कभी लम्बे नोकवाली होती हैं। इसके पुष्प सफ़ेद रंग के तथा काफ़ी बड़े 15 से.मी. से 20 से.मी. तक होते हैं। फूल जून-जुलाई में आते हैं। फल गोलाकार तथा व्यास 7.5 से.मी. से 12.5 से.मी. होता है। फल जाड़ों में पकता है।

इसका प्रकाष्ठ नाव की निचली परत बनाने के काम आता है। पत्तियों तथा छाल में टैनिन पाया जाता है।

चित्रकूट के वनों में भव्य के वृक्ष थे—

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः ।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः ॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि ।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः ॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः ।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग में एवं चित्रकूट के वन क्षेत्रों में चालता एवं नीम, दोनों के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

12. बेल (Bael Tree)

चित्रकूट में बेल के फलों को श्रीराम द्वारा लक्ष्मण को दिखाया गया। इस श्लोक से विदित होता है कि उस समय चित्रकूट में सघन वन क्षेत्र थे जहाँ जैविक दबाव नहीं था–

पश्य भल्लातकान् बिल्वान् नरैरनुपसेवितान्।
फलपुष्पैरवनतान् नूनं शक्ष्याम जीवितुम्॥ (2/56/7)

देखो, ये भिलावे और बेल के पेड़ अपने फूलों और फलों के भार से झुके हुए हैं। दूसरे मनुष्यों का यहाँ तक आना सम्भव न होने से ये उनके द्वारा उपयोग में नहीं लाये गये हैं; अतः निश्चय ही इन फलों से हम जीवन-निर्वाह कर सकेंगे।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में बेल के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट तक मुख्यतः मन्दिर परिसर में बेल के वृक्ष लगाने चाहिए।

13. तेन्दू (Coromandel Ebony)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए तिन्दुक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Diospyros melanoxylon' है। Diospyros शब्द ग्रीक के Dios (Divine) तथा Pyros (Fruit) से बना है जिसका अर्थ है देवताओं का फल। यह मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है जो प्राकृतिक रूप से पठारी क्षेत्रों में पाया जाता है। यह मुख्यतः उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात एवं महाराष्ट्र में पाया जाता है। यह उष्ण क्षेत्र की प्रजाति है जो 48 डिग्री से.ग्रे. तापक्रम वाले क्षेत्रों में पायी जाती है। यह अनेक प्रकार की मृदा एवं चट्टानों पर उग आता है। पहाड़ियों पर मृदा क्षरण वाले क्षेत्रों में इसकी वृद्धि कम होती है। नम घाटियों में जहाँ अच्छी मृदा है वहाँ यह वृक्ष पूर्ण वृद्धि प्राप्त करता है। इसे प्रकाश की आवश्यकता होती है। जलभराव वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह नहीं चल पाता है।

यह 25 मीटर तक ऊँचाई तथा 1.5 मी. तक गोलाई प्राप्त करता है। यह वृक्ष थोड़े समय के लिए पर्णविहीन होता है किन्तु पत्तियाँ पूरी तरह नहीं गिरतीं। पत्तियाँ 35 से.मी. तक लम्बी होती हैं। पुष्प अप्रैल से मई तक आते हैं। फल एक वर्ष बाद अप्रैल से जून तक पकते हैं। फल 2.5 से

4.0 से.मी. व्यास का तथा पका फल पीला एवं स्वाद में मीठा होता है। प्रत्येक फल में 3 से 8 तक बीज होते हैं। बीज भूरे रंग के होते हैं।

तेन्दू के वृक्षों में प्रति वर्ष मार्च-अप्रैल में नयी पत्तियाँ आती हैं। प्रारम्भ में पत्ते मुलायम एवं भूरे रंग के होते हैं। ये पत्ते तेज़ गरमी के साथ पहले हरे और बाद में हरे से गहरे हरे तथा कड़े हो जाते हैं। इन्हीं हलके हरे रंग के मुलायम पत्तों का संग्रहण बीड़ी बनाने के लिए किया जाता है। तेन्दू के पत्तों का उपयोग बीड़ी के अतिरिक्त विशेष प्रकार की सिगार बनाने में किया जाता है। तेन्दू पत्ते की गुणवत्ता अथवा उसका बाज़ार मूल्य पत्तों के रंग, आकार तथा कोमलता के अनुसार बीड़ी बनाने के लिए उसकी उपयुक्तता पर निर्भर करता है। पत्ते में रोंयें जितने कम हों, नसें जितनी पतली हों, आकार गोलाई लिए हुए जितना बड़ा हो और पत्ता जितना कोमल हो, बीड़ी बनाने हेतु वह उतना ही अच्छा माना जाता है। पत्ते के वांछित रंग तथा कोमलता के लिए इसके तोड़ने का समय महत्त्वपूर्ण है। लाल (लहरिया अथवा कच्चा) पत्ता नहीं तोड़ा जाना चाहिए क्योंकि इस प्रकार का पत्ता कच्चा होता है जो तोड़ने पर चूर हो जाता है तथा बीड़ी बनाने लायक नहीं रह जाता। नये पत्तों में जिस समय लाली समाप्त हो जाय और हरापन आ जाय, वह तोड़ने योग्य हो जाता है। इसके लगभग 15 दिन बाद जैसे ही पत्ते का रंग गहरा हरा होने लगे तथा पत्ता मोटा होने लगे, वह बीड़ी बनाने योग्य नहीं रह जाता। मई का महीना पत्ता तोड़ने हेतु सबसे उपयुक्त होता है।

तेन्दू आदिवासियों एवं गरीबों को ग्रीष्म ऋतु में उस समय जीविका प्रदान करता है, जब उनके पास कोई कार्य नहीं रहता। तेन्दू वृक्षों की प्रूनिंग फरवरी-मार्च में की जाती है तथा लगभग 45 दिन बाद पत्तों का संग्रहण किया जाता है। पत्तियों को 50 से 100 के बण्डल में इकट्ठा किया जाता है तथा लगभग एक सप्ताह तक उसे धूप में सुखाया जाता है। पानी की बौछार से इन पत्तों को मुलायम बनाया जाता है तथा फिर इसे जूट के थैलों में भर दिया जाता है। जूट के थैलों को लगभग दो दिनों तक धूप में रखकर फिर बीड़ी निर्माताओं के पास भेजा जाता है।

इसके फल की गूदी को सन के साथ मिलाकर नाव के छेद भरने का काम किया जाता है। इसका प्रमुख उपयोग पत्तियों से बीड़ी बनाने में है।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में तेन्दू के वृक्ष पाये जाते थे—

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में तेन्दू के वृक्ष बहुतायत में पाये जाते हैं। स्थानीय लोगों को तेन्दू पत्ता से रोज़गार मिलता है। अतः इस क्षेत्र में तेन्दू को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

14. अरिष्ट, नीम, रीठा (Margosa, Neem tree, Indian Lilac)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए निम्ब एवं पारिभद्रक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसके वृक्ष पूरे देश में पाये जाते हैं। इसे संस्कृत में निम्ब कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Azadirachta Indica' है। इसके वानस्पतिक नाम में Indica इसलिए आया है कि यह भारत में बहुत अधिक पाया जाता है। यह 40 से 50 फीट ऊँचा, अनेक शाखाओं-प्रशाखाओं से युक्त, सघन एवं छायादार होता है। वसन्त ऋतु में पुराने पत्ते गिर जाते हैं और नये पत्ते निकलने के साथ सफ़ेद रंग के फूलों के गुच्छे निकलते हैं। फल खिरनी के समान होते हैं जिसमें एक बीज होता है। इसे ग्रामीण क्षेत्रों में घरों के आस-पास बहुत लगाया जाता है। अपने चिकित्सीय गुणों के कारण इसे घर का वैद्य कहा जाता है। इसके फलों से मारगोसा आयल प्राप्त किया जाता है। नीम में कीट नाशन क्षमता होती है। इसकी लकड़ी का उपयोग इमारतों, फर्नीचर आदि के लिए किया जाता है। इसकी पत्तियों और बीज से एक कीटनाशक 'अजैडिरैक्टीन' निकाला जाता है।

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए अरिष्ठ शब्द का अर्थ नीम दिया गया है किन्तु विद्वानों के अनुसार अरिष्ट का प्रयोग रीठा के लिए किया जाता है। इसे संस्कृत में निम्ब कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Sapindus trifoliatus' है। इसके वृक्ष समस्त उत्तर भारत, पश्चिम बंगाल एवं असम आदि में पाये जाते हैं। इसके वृक्ष 9 मीटर तक ऊँचाई प्राप्त करते हैं। इसके पत्ते लम्बे एवं भालाकार होते हैं। फूल सफ़ेद या हलके गुलाबी रंग के होते हैं। फल गोलाकार एवं गूदेदार होते हैं। प्रत्येक फल में एक बीज होता है जो चिकना एवं काले रंग का होता है।

चित्रकूट के वन में अरिष्ट के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट के बीच रीठा एवं नीम लगाया जाना चाहिए।

15. वरण (Varun)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए वरण शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में वरुण, सेतु एवं हिन्दी में बरुन, बरना आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Crataeva nurvala' है। यह लगभग सभी स्थानों पर लगाया हुआ मिल जाता है। इसका वृक्ष मध्यम आकार का होता है, छाल

लगभग आधा इंच मोटी एवं सफ़ेद रंग की होती है। इसकी टहनियों पर सफ़ेद दाग होते हैं। इसके पत्तों को मसलने से तीव्र गन्ध आती है।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में वरुण के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट के बीच वरुण के वृक्ष लगाये जा सकते हैं।

16. महुआ (Butter Tree)

चित्रकूट के वन क्षेत्र में महुआ के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

वर्तमान में चित्रकूट के वनों में महुआ के वृक्ष व्यापक रूप से पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रयाग-चित्रकूट पथ पर महुआ के वृक्ष हैं। इसलिए इस क्षेत्र में महुआ का व्यापक रूप से रोपण करना चाहिए।

17. तिलक

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए तिलक शब्द का प्रयोग किया गया है। यह भारत के शुष्क जंगली क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Wendlandia exerta' है। यह नालों के ढालों पर

अधिक पाया जाता है। इसके वृक्ष झुके हुए तथा छोटे होते हैं। इसके पुष्प सुगन्धित एवं श्वेत होते हैं। मार्च-अप्रैल में पुष्पित वृक्ष सफ़ेद चाँदनी से ढका प्रतीत होता है।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में तिलक के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट मार्ग में तिलक के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

18. तिनिश (स्यन्दन)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए तिनिश शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे हिन्दी में सानन, सन्दन तथा संस्कृत में तिनिश, स्यन्दन आदि कहा जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Ougeinia dalbergioides' है। यह लगभग समस्त भारत में पाया जाता है। इसके वृक्ष छोटे तथा टेढ़े-मेढ़े होते हैं। इसके पुष्प श्वेत या गुलाबी तथा बहुत संख्या में आते हैं। इसकी फली 2 ये 4 इंच लम्बी होती है। इसकी लकड़ी गाड़ी के धुरों के लिए प्रयोग में आती है। इसकी लकड़ी में घाव करने से गोंद निकलता है।

चित्रकूट के वनों में स्यन्दन के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट मार्ग पर तथा चित्रकूट में स्यन्दन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

19. बेर (Indian Jujube)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए बदरी शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Zizyphus mauritiana' है। जंगली बेर के वृक्ष की आकृति, ऊँचाई तथा पत्तियों के आकार-प्रकार में भिन्नता पायी जाती है। भारत में यह लगभग सभी स्थानों पर पाया जाता है। स्थान के अनुसार फूल अप्रैल से अक्टूबर तक लगते हैं। फल गोल व गुठलीदार होते हैं। इसका फल खाने के काम आता है। फल को सुखाकर इसका आटा भी बनाते हैं। इसकी लकड़ी कोयला बनाने के काम आती है।

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग में बेर के वृक्ष थे–

क्रोशमात्रं ततो गत्वा नीलं प्रेक्ष्य च काननम्।
सल्लकीबदरीमिश्रं रम्यं वंशैश्च यामुनैः॥ (2/55/8)

श्यामवट के एक कोस दूर जाने पर तुम्हें नीलवन का दर्शन होगा; वहाँ सल्लकी (चीड़) और बेर के भी पेड़ मिले हुए हैं। यमुना के तट पर उत्पन्न हुए बाँसों के कारण वह और भी रमणीय दिखाई देता है।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में बेर के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

चित्रकूट से श्रीराम ने पिता के पिण्डदान में बेर का प्रयोग किया–

ऐङ्गुदं बदरैर्मिश्रं पिण्याकं दर्भसंस्तरे।
न्यस्य रामः सुदुःखार्तो रुदन् वचनमब्रवीत्॥ (2/103/29)

उन्होंने इंगुदी के गूदे में बेर मिलाकर उसका पिण्ड तैयार किया और बिछे हुए कुशों पर उसे रखकर अत्यन्त दुःख से आर्त हो रोते हुए यह बात कही।

चित्रकूट के वनों में बेर के वृक्ष व्यापक रूप से पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में बेर को व्यापक रूप से लगाया जाना चाहिए।

20. आँवला (Indian Gooseberry)

चित्रकूट के वनों में आँवला के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)

काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

चित्रकूट के वनों में आँवला के वृक्ष व्यापक रूप से पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में आँवला को व्यापक रूप से लगाया जाना चाहिए।

21. कदम्ब (नीप) (Cadamba Tree)

चित्रकूट के वन में कदम्ब के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

कदम्ब का रोपण शोभाकारी प्रजाति के रूप में अनेक स्थानों पर किया जा रहा है। प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग में कदम्ब के वृक्ष लगाने चाहिए।

22. वञ्जुल, वेतस (बेंत) (Cane)

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग में बेंत पाया जाता था–

तौ काष्ठसंघाटमथो चक्रतुः सुमहापल्वम्।
शुष्कैर्वंशैः समाकीर्णमुशीरैश्च समावृतम्॥ (2/55/14)
ततो वैतसशाखाश्च जम्बुशाखाश्च वीर्यवान्।
चकार लक्ष्मणश्छित्त्वा सीतायाः सुखमासनम्॥ (2/55/15)

फिर उन दोनों भाइयों ने जंगल के सूखे काठ बटोरकर उन्हीं के द्वारा एक बहुत बड़ा बेड़ा

तैयार किया। वह बेड़ा सूखे बाँसों से व्याप्त था और उसके ऊपर खस बिछाया गया था। तदनन्तर पराक्रमी लक्ष्मण ने बेंत और जामुन की टहनियों को काटकर सीता के बैठने के लिए एक सुखद आसन तैयार किया।

चित्रकूट के वन में बेंत थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

चित्रकूट के आस-पास बेंत लगाया जाना चाहिए।

23. धामन या धन्वन (इन्द्रजौ) (Dhaman)

इसका वानस्पतिक नाम 'Grewia tiliaefolia' है। यह मध्यम आकार का वृक्ष है। यह हिमालय के निचले भाग से लेकर मध्य भारत, उड़ीसा एवं तमिलनाडु तक पाया जाता है। इसमें सफ़ेद रंग के छोटे-छोटे फूलों के गुच्छे लगते हैं जिनके भीतर पीलापन झलकता है। इसके फल खाने लायक खट्टे होते हैं। इसकी छाल का उपयोग किया जाता है। इसके पत्तों को बाल धोने के काम लाया जाता है। इसके काष्ठ का उपयोग ब्रशों के निर्माण के लिए किया जाता है।

चित्रकूट के वन में धन्वन के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

चित्रकूट के आस-पास धामन लगाया जाना चाहिए।

24. अनार (Pomegranate)

चित्रकूट के वन में अनार के वृक्ष थे–

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः।
अंकोलैर्भव्यतिनिशैर्बिल्वतिन्दुकवेणुभिः॥ (2/94/8)
काश्मर्यारिष्टवरणैर्मधूकैस्तिलकैरपि।
बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः॥ (2/94/9)
पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः।
एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुष्यत्ययं गिरिः॥ (2/94/10)

आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल, धव, अंकोल, भव्य, तिनिश, बेल तिन्दुक, बाँस, काश्मरी (मधुपर्णिका), अरिष्ट (नीम), वरण, महुआ, तिलक, बेर, आँवला, कदम्ब, बेत, धन्वन (इन्द्रजौ), बीजक (अनार) आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है।

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग में एवं चित्रकूट क्षेत्र में आश्रम एवं मन्दिर परिसर में अनार लगाया जाना चाहिए।

25. चम्पा (Michelia Champaka)

चित्रकूट में स्थान-स्थान पर चम्पा के उद्यान थे। श्रीराम चित्रकूट में चम्पा के फूलों का वर्णन सीता जी से करते हैं–

केचित् क्षयनिभा देशाः केचिदुद्यानसंनिभाः।
केचिदेकशिला भान्ति पर्वतस्यास्य भामिनि॥ (2/94/22)

भामिनि! इस पर्वत के कई स्थान घर की भाँति दिखाई देते हैं (क्योंकि वे वृक्षों की घनी छाया से आच्छादित हैं) और कई स्थान चम्पा, मालती आदि फूलों की अधिकता के कारण उद्यान के समान सुशोभित होते हैं तथा कितने स्थान ऐसे हैं जहाँ बहुत दूर तक एक ही शिला फैली है। इस सबकी बड़ी शोभा होती है।

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग तथा चित्रकूट क्षेत्र में चम्पा के उद्यान स्थापित करना चाहिए।

26. मालती या चमेली (Malati)

चित्रकूट में स्थान-स्थान पर मालती या चमेली के उद्यान थे। श्रीराम चित्रकूट में मालती के फूलों का वर्णन सीता जी से करते हैं–

केचित् क्षयनिभा देशाः केचिदुद्यानसंनिभाः।
केचिदेकशिला भान्ति पर्वतस्यास्य भामिनि॥ (2/94/22)

भामिनि! इस पर्वत के कई स्थान घर की भाँति दिखाई देते हैं (क्योंकि वे वृक्षों की घनी छाया

से आच्छादित हैं) और कई स्थान चम्पा, मालती आदि फूलों की अधिकता के कारण उद्यान के समान सुशोभित होते हैं तथा कितने स्थान ऐसे हैं जहाँ बहुत दूर तक एक ही शिला फैली है। इस सबकी बड़ी शोभा होती है।

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग तथा चित्रकूट क्षेत्र में मालती या चमेली के उद्यान स्थापित करना चाहिए।

27. पुत्रजीवक, पुत्रंजीव, कुमारबीज, जलपित्री (Wild Olive Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए अगर शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Putranjiva roxburghii' है। यह पूरे भारत में पाया जाता है। इसका वृक्ष सदाहरित तथा मध्यम कद का होता है। इसकी शाखाएँ कमज़ोर होती हैं तथा नीचे की ओर झुकी रहती हैं। इसकी पत्तियाँ 6 से 8 से.मी. लम्बी होती हैं। इसके पुष्प एकलिंगी तथा हरे रंग के होते हैं। फूल मार्च में आते हैं।

यह गर्भ धारण में लाभकारी है, इसीलिए इसे पुत्रंजीवा कहा गया है। यह वीर्यवर्धक एवं हाथीपगा में उपयोगी है। यह एक प्रमुख छायादार वृक्ष है।

चित्रकूट के वनों की विशेषता सीताजी से बताते समय श्रीराम ने पुत्रंजीवा का उल्लेख किया है।

कुष्ठस्थगरपुंनागभूर्जपत्रोत्तरच्छदान्।
कामिनां स्वास्तरान् पश्य कुशेशयदलायुतान्॥ (2/94/24)

प्रिये! देखो, ये विलासियों के बिस्तर हैं, जिन पर उत्पल, पुत्रजीवक, पुन्नाग और भोजपत्र—इनके पत्ते ही चादर का काम देते हैं तथा इनके ऊपर सब ओर से कमलों के पत्ते बिछे हुए हैं।

चित्रकूट के आसपास के क्षेत्रों में पुत्रंजीवा को लगाया जाना चाहिए।

28. नागकेसर (पुनांग) (Cobra's Saffron)

चित्रकूट के वनों की विशेषता सीताजी से बताते समय श्रीराम ने पुन्नाग का उल्लेख किया है—

कुष्ठस्थगरपुंनागभूर्जपत्रोत्तरच्छदान्।
कामिनां स्वास्तरान् पश्य कुशेशयदलायुतान्॥ (2/94/24)

प्रिये! देखो, ये विलासियों के बिस्तर हैं, जिन पर उत्पल, पुत्रजीवक, पुन्नाग और भोजपत्र—इनके पत्ते ही चादर का काम देते हैं तथा इनके ऊपर सब ओर से कमलों के पत्ते बिछे हुए हैं।

चित्रकूट के आसपास के क्षेत्रों में नागकेसर को लगाया जाना चाहिए।

29. भोज पत्र (Himalayan Paper Birch, Indian Paper Birch)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए भूर्जपत्र शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Betula utilis' है। यह उत्तर-पश्चिम हिमालय क्षेत्र एवं टिहरी गढ़वाल क्षेत्र में 4500 मीटर की ऊँचाई पर पाया जाता है। यह लगभग 20 मीटर की ऊँचाई प्राप्त करता है। इसकी छाल सफ़ेदी

लिए हलकी भूरी होती है। इसकी पत्तियाँ 5 से 10 से.मी. लम्बी होती हैं। फूल मार्च से मई तक आते हैं तथा फल सितम्बर-अक्टूबर में पकते हैं।

इसकी छाल परतों में निकलती जाती है। यह प्राचीन काल में लिखने के लिए काग़ज़ का कार्य करती थी। भारत का लगभग पूरा प्राचीन साहित्य भोजपत्र पर ही लिखा गया। इसकी पत्तियाँ जानवरों के चारे के काम आती हैं। इसका प्रकाष्ठ छत निर्माण एवं पुल बनाने के काम आता है। यह एक अच्छी ईंधन प्रजाति है।

चित्रकूट के वनों की विशेषता सीताजी से बताते समय श्रीराम ने भोजपत्र का उल्लेख किया है–

कुष्ठस्थगरपुंनागभूर्जपत्रोत्तरच्छदान्।
कामिनां स्वास्तरान् पश्य कुशेशयदलायुतान्॥ (2/94/24)

प्रिये! देखो, ये विलासियों के बिस्तर हैं, जिन पर उत्पल, पुत्रजीवक, पुन्नाग और भोजपत्र–इनके पत्ते ही चादर का काम देते हैं तथा इनके ऊपर सब ओर से कमलों के पत्ते बिछे हुए हैं।

वर्तमान समय में भोजपत्र केवल पर्वतीय क्षेत्रों में अत्यधिक ऊँचाई पर पाया जाता है।

30. कोविदार (कचनार) (Orchid Tree)

अयोध्या से चित्रकूट जाते समय भरत जी द्वारा जिन रथों का प्रयोग किया गया था, उसके ध्वज पर कोविदार का चिन्ह अंकित था–

एश वै सुमहान्छ्रीमान् विटपी सम्प्रकाशते।
विराजत्युज्ज्वलस्कन्धः कोविदारध्वजो रथे॥ (2/96/18)

सामने की ओर यह जो बहुत बड़ा शोभासम्पन्न वृक्ष दिखाई देता है, उसके समीप जो रथ है, उस पर उज्ज्वल तने से युक्त कोविदार वृक्ष से चिन्हित ध्वज शोभा पा रहा है।

अपि नौ वशमागच्छेत् कोविदार ध्वजो रणे।
अपि द्रक्ष्यामि भरतं यत्कृते व्यसनं महत्॥ (2/96/21)
त्वया राघव सम्प्राप्तं सीतया च मया तथा।
यन्निमित्तं भवान् राज्याच्च्युतो राघव शाश्वतात्॥ (2/96/22)

रघुनन्दन! आज यह कोविदार के चिन्ह से युक्त ध्वज वाला रथ रणभूमि में हम दोनों के अधिकार में आ जायगा और आज मैं अपनी इच्छा के अनुसार उस भरत को भी सामने देखूँगा कि जिसके कारण आपको, सीता को और मुझे भी महान् संकट का सामना करना पड़ा है तथा जिसके कारण आप अपने सनातन राज्याधिकार से वंचित किये गये हैं।

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग में शोभाकार वृक्ष के रूप में कचनार का वृक्ष लगाया जाना चाहिए।

31. गर्जन

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए अश्वकर्ण शब्द का प्रयोग किया गया है। यद्यपि अनेक स्थानों पर अश्वकर्ण को एक प्रकार का साल वृक्ष कहा गया है परन्तु वास्तव में यह गर्जन वृक्ष है जिसका

वानस्पतिक नाम 'Dipterocarpus turbinatus' है। वाल्मीकि जी की दृष्टि में भी यह साल का पर्याय नहीं हो सकता क्योंकि श्लोक संख्या (3/15/16) से (3/15/18) तक वन क्षेत्र के वर्णन में तथा श्लोक संख्या (6/59/77) में साल एवं अश्वकर्ण का उल्लेख अलग-अलग आया है जिससे स्पष्ट है कि साल एवं अश्वकर्ण भिन्न प्रजाति है। डॉ. के.सी. चुनेकर एवं डॉ. गंगा सहाय पाण्डेय के भावप्रकाश निघण्टु में अश्वकर्ण को अजकर्ण कहा गया है। हिन्दी में इसका प्रचलित नाम गर्जन है। पूर्वोत्तर भारत मुख्यतः असम एवं अण्डमान में इसके विशाल वृक्ष पाये जाते हैं। इसके तेल का उपयोग औषधियों में किया जाता है।

वाल्मीकि रामायण में एक स्थान पर अश्वकर्ण का अर्थ साल दिया गया है।–

सिंहव्याघ्रवराहैश्च वारणैघपि शोभितम्।
धवाश्वकर्णककुभैर्बिल्वतिन्दुकपाटलैः॥ (1/24/15)
संकीर्ण बदरीभिश्च किं न्विदं दारुणं वनम्।

सिंह, व्याघ्र, सूअर और हाथी भी इस जंगल की शोभा बढ़ा रहे हैं। धव(धौरा), अश्वकर्ण (एक प्रकार के शालवृक्ष), ककुभ (अर्जुन), बेल, तिन्दुक (तेन्दू), पाटल (पाड़र) तथा बेर के वृक्षों से भरा हुआ यह भयंकर वन क्या है? इसका क्या नाम है?

श्रीराम की कुटिया में अश्वकर्ण के पत्तों का प्रयोग किया गया था–

सालतालाश्वकर्णानां पर्णैर्बहुभिरावृताम्।
विशालां मृदुभिस्तीर्णां कुशैर्वेदिमिवाध्वरे॥ (2/99/19)

वह शाल, ताल और अश्वकर्ण नामक वृक्षों के बहुत से पत्तों द्वारा छायी हुई थी; अतः यज्ञशाला में जिस पर कोमल कुश बिछाये गये हों, उस लम्बी-चौड़ी वेदी के समान शोभा पा रही थी।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से अश्वकर्ण के वृक्ष नहीं पाये जाते किन्तु प्रायोगिक तौर पर कहीं-कहीं इसे लगाया जा सकता है।

32. ताड़ (ताल) (Palmyra Palm)

श्रीराम की कुटिया में ताड़ के पत्तों का प्रयोग किया गया था–

सालतालाश्वकर्णानां पर्णैर्बहुभिरावृताम्।
विशालां मृदुभिस्तीर्णां कुशैर्वेदिमिवाध्वरे॥ (2/99/19)

वह शाल, ताल और अश्वकर्ण नामक वृक्षों के बहुत से पत्तों द्वारा छायी हुई थी; अतः यज्ञशाला में जिस पर कोमल कुश बिछाये गये हों, उस लम्बी-चौड़ी वेदी के समान शोभा पा रही थी।

भरद्वाज मुनि के आश्रम में ताल के वृक्ष थे–

ततः सरलतालाश्च तिलकाः सतमालकाः।
प्रॉष्टास्तत्र सम्पेतुः कुब्जा भूत्वाथ वामनाः॥ (2/91/50)

तदनन्तर देवदारु, ताल, तिलक और तमाल नामक वृक्ष कुबड़े और बौने बनकर बड़े हर्ष के साथ भरत की सेवा में उपस्थित हुए।

प्रयाग से चित्रकूट के बीच एवं चित्रकूट क्षेत्र में स्थान-स्थान पर ताड़ के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

33. चन्दन (Sandal Wood)

चित्रकूट में श्रीराम की दशा देखकर भरत जी चन्दन का स्मरण करते हैं–

चन्दनेन महार्हेण यस्यांगमुपसेवितम्।
मलेन तस्यांगमिदं कथमार्यस्य सेव्यते॥ (2/99/35)

जिनके अंगों की बहुमूल्य चन्दन से सेवा होती थी, उन्हीं मेरे पूज्य भ्राता का यह शरीर कैसे मल से सेवित हो रहा है।

यद्यपि चित्रकूट में प्राकृतिक रूप से चन्दन नहीं पाया जाता किन्तु आश्रम या मन्दिर परिसर में इसे लगाया जा सकता है।

34. इंगुदी (Desert Date)

चित्रकूट पहुँचकर भरत जी ने इंगुदी के वृक्ष के नीचे श्रीराम की शैया का निरीक्षण किया–

तत्प्रश्चत्वा निपुणं सर्व भरतः सह मन्त्रिभिः।
इंगुदीमूलमागम्य रामशय्यामवैक्षत॥ (2/88/1)

निषादराज की सारी बातें ध्यान से सुनकर मन्त्रियों सहित भरत ने इंगुदी वृक्ष की जड़ के पास आकर श्रीरामचन्द्र जी की शय्या का निरीक्षण किया।

चित्रकूट में श्रीराम ने इंगुदी के पिसे फल का प्रयोग करके पिता का पिण्डदान किया–

आनयेङ्गुदिपिण्याकं चीरमाहर चोत्तरम्।
जलक्रियार्थ तातस्य गमिष्यामि महात्मनः॥ (2/103/20)

भाई! तुम इंगुदी का पिसा हुआ फल और चीर एवं उत्तरीय ले आओ। मैं महात्मा पिता को जलदान देने के लिए चलूँगा।

ऐङ्गुदं बदरैर्मिश्रं पिण्याकं दर्भसंस्तरे।
न्यस्य रामः सुदुःखार्तो रुदन् वचनमब्रवीत्॥ (2/103/29)

उन्होंने इंगुदी के गूदे में बेर मिलाकर उसका पिण्ड तैयार किया और बिछे हुए कुशों पर उसे रखकर अत्यन्त दुःख से आर्त हो रोते हुए यह बात कही।

35. देवदारु

वाल्मीकि रामायण के अनेक श्लोकों में देवदारु का उल्लेख आया है। वर्तमान काल में जिस वृक्ष को देवदार कहा जाता है, उसका वानस्पतिक नाम 'Cedrus deodara' है। यह हमारे देश के कश्मीर, उत्तराखण्ड एवं हिमांचल प्रदेश में 1500 से 3200 मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है। हिमालय क्षेत्र में 1500 मीटर ऊँचाई के नीचे भारत के किसी अन्य क्षेत्र में इसके पाये जाने की कोई सम्भावना नहीं दिखती है। अशोक की एक और प्रजाति भारत के प्रायः सभी क्षेत्रों में पायी जाती है जिसका वानस्पतिक नाम 'Polyalthia longifolia' है। इसका वृक्ष सीधा खड़ा होता है। इसकी शाखाएँ

सघन नहीं होतीं। इसकी छाल पतली और लकड़ी पीलापन लिए सफ़ेद होती है। पत्ते 15 से 25 से.मी. तक लम्बे लहरदार, धार वाले तथा चमकीले होते हैं। इसे कहीं कहीं पर हिन्दी में एवं बंगला में देव दारु कहा जाता है।

भरद्वाज मुनि के आश्रम में देवदारु के वृक्ष थे–

ततः सरलतालाश्च तिलकाः सतमालकाः।
प्रॉष्टास्तत्र सम्पेतुः कुब्जा भूत्वाथ वामनाः॥ (2/91/50)

तदनन्तर देवदारु, ताल, तिलक और तमाल नामक वृक्ष कुबड़े और बौने बनकर बड़े हर्ष के साथ भरत की सेवा में उपस्थित हुए।

प्रयाग से चित्रकूट के बीच में कहीं-कहीं पर शोभाकार वृक्ष के रूप में अशोक की यह प्रजाति लगाना चाहिए।

36. तमाल (Indian Gamboge Tree)

भरद्वाज मुनि के आश्रम में तमाल के वृक्ष थे–

ततः सरलतालाश्च तिलकाः सतमालकाः।
प्रॉष्टास्तत्र सम्पेतुः कुब्जा भूत्वाथ वामनाः॥ (2/91/50)

तदनन्तर देवदारु, ताल, तिलक और तमाल नामक वृक्ष कुबड़े और बौने बनकर बड़े हर्ष के साथ भरत की सेवा में उपस्थित हुए।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने चित्रकूट के वन क्षेत्र में तमाल के वृक्ष का उल्लेख किया है–

नाथ देखिअहिं विटप विसाला।
पाकरि जंबु रसाल तमाला॥ (2/237)

प्रयाग से चित्रकूट के बीच में कहीं-कहीं पर शोभाकार वृक्ष के रूप में तमाल की यह प्रजाति लगाना चाहिए।

37. रक्तचन्दन (Red Sandal-Wood)

भरद्वाज मुनि के आश्रम में रक्त चन्दन का उल्लेख है–

तर्पिताः सर्वकामैश्च रक्तचन्दनरूशिताः।
अप्सरोगणसंयुक्ताः सैन्या वाचमुदीरयन॥ (2/91/58)

सम्पूर्ण मनोवांछित पदार्थों से तृप्त होकर लाल चन्दन से चर्चित हुए सैनिक अप्सराओं का संयोग पाकर निम्नांकित बातें कहने लगे।

यद्यपि चित्रकूट में प्राकृतिक रूप से लाल चन्दन नहीं पाया जाता किन्तु आश्रम या मन्दिर परिसर में इसे लगाया जा सकता है।

38. पीपल (Bodhi Tree)

भरद्वाज मुनि के आश्रम में पीपल के वृक्ष थे—

बिल्वा मार्दङ्गिका आसञ्शम्याग्राहा बिभीतकाः।
अश्वत्था नर्तकाघासन् भरद्वाजस्य तेजसा॥ (2/91/49)

भरद्वाज मुनि के तेज़ से बेल के वृक्ष मृदंग बजाते, बहेड़े के पेड़ शम्या नामक ताल देते और पीपल के वृक्ष वहाँ नृत्य करते थे।

पीपल के पर्यावरणीय महत्त्व को देखते हुए इसे प्रयाग से चित्रकूट के बीच लगाया जाना चाहिए।

39. बहेड़ा (Beleric Myrobalan)

प्रयाग में भरद्वाज मुनि के आश्रम में बहेड़ा के वृक्ष का उल्लेख है—

बिल्वा मार्दङ्गिका आसञ्शम्याग्राहा बिभीतकाः।
अश्वत्था नर्तकाघासन् भरद्वाजस्य तेजसा॥ (2/91/49)

भरद्वाज मुनि के तेज़ से बेल के वृक्ष मृदंग बजाते, बहेड़े के पेड़ शम्या नामक ताल देते और पीपल के वृक्ष वहाँ नृत्य करते थे।

चित्रकूट के वनों में बहेड़ा के वृक्ष व्यापक रूप से पाये जाते हैं। औषधीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण एवं स्थानीय प्रजाति होने के कारण चित्रकूट में इसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

40. कुश (Holly Grass)

चित्रकूट में श्रीराम की कुटिया बनाने में कुश का प्रयोग किया गया था—

सालतालाश्वकर्णानां पर्णैर्बहुभिरावृताम्।
विशालां मृदुभिस्तीर्णां कुशैर्वेदिमिवाध्वरे॥ (2/99/19)

वह शाल, ताल और अश्वकर्ण नामक वृक्षों के बहुत से पत्तों द्वारा छायी हुई थी; अतः यज्ञशाला में जिस पर कोमल कुश बिछाये गये हों, उस लम्बी-चौड़ी वेदी के समान शोभा पा रही थी।

चित्रकूट में श्रीराम द्वारा अपने पिता के पिण्डदान में कुश का प्रयोग किया गया—

ऐङ्गुदं बदरैर्मिश्रं पिण्याकं दर्भसंस्तरे।
न्यस्य रामः सुदुःखार्तो रुदन् वचनमब्रवीत्॥ (2/103/29)

उन्होंने इंगुदी के गूदे में बेर मिलाकर उसका पिण्ड तैयार किया और बिछे हुए कुशों पर उसे रखकर अत्यन्त दुःख से आर्त हो रोते हुए यह बात कही।

प्रायः यह घास सभी स्थानों पर पायी जाती है। अनुपलब्ध होने पर पवित्र घास के रूप में इसे कहीं-कहीं पर लगाया जा सकता है।

41. बरगद

भरद्वाज मुनि प्रयाग से चित्रकूट का मार्ग बताते हुए भरत से कहते हैं—

ततो न्यग्रोधमासाद्य महान्तं हरितच्छदम्।
परीतं बहुभिर्वृक्षैः श्यामं सिद्धोपसेवितम्॥ (2/55/6)
तस्मिन् सीताञ्जलिं कृत्वा प्रयुञ्जीताशिषां क्रियाम्।
समासाद्य च तं वृक्षं वसेद् वातिक्रमेत वा॥ (2/55/7)

तत्पश्चात् आगे जाने पर एक बहुत बड़ा बरगद का वृक्ष मिलेगा, जिसके पत्ते हरे रंग के हैं। वह चारों ओर से बहुसंख्यक दूसरे वृक्षों द्वारा घिरा हुआ है। उस वृक्ष का नाम श्यामवट है। उसकी छाया के नीचे बहुत-से सिद्ध पुरुष निवास करते हैं। वहाँ पहुँच कर सीता दोनों हाथ जोड़कर उस वृक्ष से आशीर्वाद की याचना करें। यात्री की इच्छा हो तो उस वृक्ष के पास जाकर कुछ काल तक वहाँ निवास करे अथवा वहाँ से आगे बढ़ जाय।

श्रीराम ने यमुना को पार कर वट वृक्ष का दर्शन किया—

ते तीर्णाः पल्वमुत्सृज्य प्रस्थाय यमुनावनात्।
श्यामं न्यग्रोधमासेदुः शीतलं हरितच्छदम्॥ (2/55/23)

पार उतरकर उन्होंने बेड़े को तो वहीं तट पर छोड़ दिया और यमुना तटवर्ती वन से प्रस्थान करके वे हरे-भरे पत्तों से सुशोभित शीतल छाया वाले श्यामवट के पास जा पहुँचे॥

वटवृक्ष से सीता ने प्रार्थना की—

न्यग्रोधं समुपागम्य वैदेही चाभ्यवन्दत।
नमस्तेऽस्तु महावृक्ष पारयेन्मे पतिर्व्रतम्॥ (2/55/24)

वट के समीप पहुँचकर विदेहनन्दिनी सीता ने उसे मस्तक झुकाया और इस प्रकार कहा—'महावृक्ष! आपको नमस्कार है। आप ऐसी कृपा करें, जिससे मेरे पतिदेव अपने वनवासविषयक व्रत को पूर्ण करें।'

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार चित्रकूट में श्रीराम की कुटिया वट वृक्ष के नीचे बनाई गयी—

जिन्ह तरुवरन मध्य बटु सोहा।
मंजु बिसाल देखि मन मोहा॥
नील सघन पल्लव फल लाला।
अविरल छाँह सुखद सब काला॥
बट छाया बेदिका बनाई।
सिय निज पानि सरोज सुहाई॥ (2/237)

बरगद के पर्यावरणीय महत्त्व को देखते हुए इसे प्रयाग से चित्रकूट के बीच लगाया जाना चाहिए।

42. भिलावा (The Marking-nut Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए भल्लातक एवं अग्निमुख शब्द का प्रयोग किया गया है। यह देश के गर्म भागों में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Semecarpus anacardium' है। इसका वृक्ष 30 से 40 फीट तक ऊँचा होता है। इसकी छाल 1 इंच तक मोटी तथा भूरी होती है। इसकी

छाल पर घाव करने से एक गाढ़ा रस निकलता है जो वार्निश बनाने के काम आता है। इसकी लकड़ी खाकी मिश्रित लाली एवं सफ़ेदी लिए भूरे रंग की होती है। जनवरी में पुराने पत्ते गिर जाते हैं। वसन्त ऋतु में नये पत्ते तथा फूल आते हैं। इसका फूल हरापन लिए सफ़ेद या पीला होता है। इसका फल खाया जाता है।

चित्रकूट के वन क्षेत्र में भिलावा के वृक्ष थे–

पश्य भल्लातकान् बिल्वान् नरैरनुपसेवितान्।
फलपुष्पैरवनतान् नूनं शक्ष्याम जीवितुम्॥ (2/56/7)

देखो, ये भिलावे और बेल के पेड़ अपने फूलों और फलों के भार से झुके हुए हैं। दूसरे मनुष्यों का यहाँ तक आना सम्भव न होने से ये उनके द्वारा उपयोग में नहीं लाये गये हैं; अतः निश्चय ही इन फलों से हम जीवन-निर्वाह कर सकेंगे।

प्रयाग से चित्रकूट के बीच भिलावा का वृक्ष लगाया जाना चाहिए।

43. खस (Khus)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए उशीर शब्द का प्रयोग किया गया है। यह लगभग पूरे देश में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Vetiveriaa zizanioides या Andropogon muricatus' है। यह अधिकतर खुले दलदल वाले स्थानों पर पाया जाता है। इसके पत्ते 1 से 2 फीट लम्बे सरकण्डे के समान होते हैं। इसकी जड़ सुगन्धित होती है तथा इसी को खस कहते हैं। ग्रीष्म ऋतु में इसका प्रयोग कूलर आदि में होता है। इसका इत्र बहुत सुगन्धित होता है।

यमुना पार करने हेतु पुल बनाते समय खस का प्रयोग किया गया–

तौ काष्ठसंघाटमथो चक्रतुः सुमहापल्वम्।
शुष्कैर्वंशैः समाकीर्णमुशीरैश्च समावृतम्॥ (2/55/14)
ततो वैतसशाखाश्च जम्बुशाखाश्च वीर्यवान्।
चकार लक्ष्मणश्छित्त्वा सीतायाः सुखमासनम्॥ (2/55/15)

फिर उन दोनों भाइयों ने जंगल के सूखे काठ बटोरकर उन्हीं के द्वारा एक बहुत बड़ा बेड़ा तैयार किया। वह बेड़ा सूखे बाँसों से व्याप्त था और उसके ऊपर खस बिछाया गया था। तदनन्तर पराक्रमी लक्ष्मण ने बेंत और जामुन की टहनियों को काटकर सीता के बैठने के लिए एक सुखद आसन तैयार किया।

44. कमल (Lotus)

सीता से चित्रकूट की शोभा का वर्णन करते हुए श्रीराम कमल के पुष्प का उल्लेख करते हैं–

मृदिताश्चापविद्धाश्च दृश्यन्ते कमलस्रजः।
कामिभिर्वनिते पश्य फलानि विविधानि च॥ (2/94/25)

प्रियतमे! ये कमलों की मालायें दिखाई देती हैं, जो विलासियों द्वारा मसलकर फेंक दी गयी हैं। उधर देखो, वृक्षों में नाना प्रकार के फल लगे हुए हैं।

45. सल्लकी, सलई (Indian Olibanum)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए सल्लकी शब्द का प्रयोग किया गया है। वाल्मीकि रामायण में श्लोक के अर्थ में सल्लकी को चीड़ बताया गया है। चीड़ का वृक्ष मैदानी क्षेत्रों में नहीं पाया जाता, इसलिए सल्लकी का यह अर्थ उचित नहीं प्रतीत होता। भाव प्रकाश निघण्टु में सल्लकी को सलई बताया गया है, जो सर्वथा उचित है। इसका वानस्पतिक नाम 'Boswellia serrata' है। पूर्वी भारत को छोड़कर यह लगभग पूरे देश में पाया जाता है। इसका वृक्ष लगभग 30 फीट तक ऊँचा होता है। इसकी शाखाएँ नीचे की ओर झुकी होती हैं। इसकी छाल लाल, पीला या हरापन लिए सफ़ेद होती है। इसके पत्रक आमने-सामने या कुछ अन्तर देकर दन्तमय धार वाले होते हैं। इसका फल मांसल एवं तीन धार वाला होता है जो पकने पर तीन भाग में फटता है।

प्रयाग से चित्रकूट के मार्ग में सलई के वृक्ष थे।

क्रोशमात्रं ततो गत्वा नीलं प्रेक्ष्य च काननम्।
सल्लकीबदरीमिश्रं रम्यं वंशैश्च यामुनैः॥ (2/55/8)

श्यामवट के एक कोस दूर जाने पर तुम्हें नीलवन का दर्शन होगा; वहाँ सल्लकी और बेर के भी पेड़ मिले हुए हैं। यमुना के तट पर उत्पन्न हुए बाँसों के कारण वह और भी रमणीय दिखाई देता है।

46. पाकड़ (Fig Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए प्लक्ष शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Ficus infectoria' है। यह सदैव हरा-भरा रहता है। इसकी छाल भूरी और चिकनी होती है। इसकी शाखाओं से हवाई जड़ें नीचे को लटकती रहती हैं। पत्तियाँ चिकनी, चमकीली और मोटी होती हैं। वृक्ष के किसी भाग में चोट पहुँचने पर सफ़ेद दूध सा रस निकलता है। बरगद की भाँति इसकी हवाई जड़ें नीचे की ओर लटकती हैं किन्तु वे धरती तक नहीं पहुँच पातीं। इसका मुख्य उपयोग छाया है। हाथी के चारे हेतु इसका उपयोग होता है। इसका फल अप्रैल से जून तक पकता है। इसका फल बहुत दिनों तक पेड़ से लटकता रहता है। सड़कों के किनारे एवं कुएँ तालाब आदि के किनारे प्रायः इसे लगाया जाता है।

अश्वमेध के अतिरिक्त अन्य यज्ञों में जो हवि दी जाती है, वह पाकर की शाखाओं में रखकर दी जाती है; परन्तु अश्वमेध यज्ञ का हविष्य बेंत की चटाई में रखकर देने का नियम है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने चित्रकूट के वन क्षेत्र में पाकड़ के वृक्ष का उल्लेख किया है—

नाथ देखिअहिं बिटप बिसाला।
पाकरि जंबु रसाल तमाला॥ (2/237)

अयोध्या से चित्रकूट के बीच पाकड़ के वृक्षों का रोपण किया जाना चाहिए।

खण्ड-3

चित्रकूट से दण्डकारण्य

चित्रकूट से श्रीराम दण्डकारण्य वन क्षेत्र में गये। दण्डकारण्य वन क्षेत्र छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में है। दण्डकारण्य में विराध का वध हुआ और अनेक ऋषियों से श्रीराम का सत्संग हुआ। यह अबूझमार पर्वतीय क्षेत्र में है जो छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना एवं उड़ीसा तक फैला है। वाल्मीकि रामायण में चित्रकूट से दण्डकारण्य के मार्ग का उल्लेख नहीं है। वर्तमान में सतना से रायपुर होते हुए बस्तर की दूरी लगभग 781 कि.मी. है। चित्रकूट से दण्डकारण्य के क्षेत्र की प्रजातियों का वर्णन यहाँ पर किया जा रहा है।

चित्रकूट से आगे घने वन क्षेत्र थे–

वनं महामेघनिभं प्रविष्टो
द्रुमैर्महद्भिर्विविधैरुपेतम्।
नानाविधैः पक्षिकुलैर्विचित्रं
शिवायुतं व्यालमृगैर्विकीर्णम्॥ (3/3/26)

तदनन्तर उसने एक ऐसे वन में प्रवेश किया जो महान् मेघों की घटा के समान घना और नीला था। नाना प्रकार के बड़े-बड़े वृक्ष वहाँ भरे हुए थे। भाँति-भाँति के पक्षियों के समुदाय उसे विचित्र शोभा से सम्पन्न बना रहे थे तथा बहुत से गीदड़ और हिंसक पशु उसमें सब ओर फैले हुए थे।

यद्यपि इस वन क्षेत्र की समस्त प्रजातियों का उल्लेख वाल्मीकि जी ने नहीं किया है किन्तु स्थान-स्थान पर इस बात का संकेत किया है कि पूरा मार्ग घने वन से आच्छादित था। जिन वृक्ष प्रजातियों का उल्लेख है, वे निम्न प्रकार हैं–

1. नीवार (जलकदम्ब) (Asian Watergrass)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए नीवार शब्द का प्रयोग किया गया है। यह समस्त भारत में पाया जाता है। इसे हिन्दी में तीनी भी कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Hygroryza aristata' है। यह एक जलीय घास जाति का पौधा है जो तालाबों या जलीय भूमि पर फैला रहता है। एक्वेरियम में इसका प्रयोग किया जाता है।

वाल्मीकि रामायण में इसका प्रयोग वृक्ष के रूप में किया गया है किन्तु वर्तमान में नीवार से जलकदम्ब का ही आशय लिया जाता है।

नीवारान् पनसान् सालान् वञ्जुलांस्तिनिशांस्तथा।
चिरिबिल्वान् मधूकांश्च बिल्वानथ च तिन्दुकान्॥ (3/11/74)

पुष्पितान् पुष्पिताग्राभिर्लताभिरूपशोभितान्।
ददर्श रामः शतशस्तत्र कान्तारपादपान्॥ (3/11/75)
हस्तिहस्तैर्विमृदितान् वानरैरूपशोभितान्।
मत्तैः शकुनिसंघैश्च शतशः प्रतिनादितान्॥ (3/11/76)

श्रीराम ने वहाँ मार्ग में नीवार (जलकदम्ब), कटहल, साखू, अशोक, तिनिश, चिरिबिल्व, महुआ, बेल, तेन्दू तथा और भी सैकड़ों जंगली वृक्ष देखे, जो फूलों से भरे थे तथा खिली हुई लताओं से परिवेष्ठित हो बड़ी शोभा पा रहे थे। उनमें से कई वृक्षों को हाथियों ने अपनी सूँड़ों से तोड़कर मसल डाला था और बहुत से वृक्षों पर बैठे हुए वानर उसकी शोभा बढ़ाते थे। सैकड़ों मतवाले पक्षी उनकी डालियों पर चहक रहे थे।

2. कटहल (Jackfruit)

चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच के वन क्षेत्र में कटहल के वृक्ष थे–

नीवारान् पनसान् सालान् वञ्जुलांस्तिनिशांस्तथा।
चिरिबिल्वान् मधूकांश्च बिल्वानथ च तिन्दुकान्॥ (3/11/74)
पुष्पितान् पुष्पिताग्राभिर्लताभिरूपशोभितान्।
ददर्श रामः शतशस्तत्र कान्तारपादपान्॥ (3/11/75)
हस्तिहस्तैर्विमृदितान् वानरैरूपशोभितान्।
मत्तैः शकुनिसंघैश्च शतशः प्रतिनादितान्॥ (3/11/76)

श्रीराम ने वहाँ मार्ग में नीवार (जलकदम्ब), कटहल, साखू, अशोक, तिनिश, चिरिबिल्व, महुआ, बेल, तेन्दू तथा और भी सैकड़ों जंगली वृक्ष देखे, जो फूलों से भरे थे तथा खिली हुई लताओं से परिवेष्ठित हो बड़ी शोभा पा रहे थे। उनमें से कई वृक्षों को हाथियों ने अपनी सूँड़ों से तोड़कर मसल डाला था और बहुत से वृक्षों पर बैठे हुए वानर उसकी शोभा बढ़ाते थे। सैकड़ों मतवाले पक्षी उनकी डालियों पर चहक रहे थे।

चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच धार्मिक स्थानों पर कटहल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

3. साल (Shorea)

चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच के वन क्षेत्र में साल के वृक्ष थे–

नीवारान् पनसान् सालान् वञ्जुलांस्तिनिशांस्तथा।
चिरिबिल्वान् मधूकांश्च बिल्वानथ च तिन्दुकान्॥ (3/11/74)
पुष्पितान् पुष्पिताग्राभिर्लताभिरूपशोभितान्।
ददर्श रामः शतशस्तत्र कान्तारपादपान्॥ (3/11/75)
हस्तिहस्तैर्विमृदितान् वानरैरूपशोभितान्।
मत्तैः शकुनिसंघैश्च शतशः प्रतिनादितान्॥ (3/11/76)

श्रीराम ने वहाँ मार्ग में नीवार (जलकदम्ब), कटहल, साखू, अशोक, तिनिश, चिरिबिल्व, महुआ, बेल, तेन्दू तथा और भी सैकड़ों जंगली वृक्ष देखे, जो फूलों से भरे थे तथा खिली हुई लताओं से परिवेष्ठित हो बड़ी शोभा पा रहे थे। उनमें से कई वृक्षों को हाथियों ने अपनी सूँड़ों से तोड़कर मसल डाला था और बहुत से वृक्षों पर बैठे हुए वानर उसकी शोभा बढ़ाते थे। सैकड़ों मतवाले पक्षी उनकी डालियों पर चहक रहे थे।

चित्रकूट से बस्तर के मार्ग में मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में साल के वन क्षेत्र हैं। चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच साल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

4. अशोक (Mast Tree)

चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच के वन क्षेत्र में अशोक के वृक्ष थे–

नीवारान् पनसान् सालान् वञ्जुलांस्तिनिशांस्तथा।
चिरिबिल्वान् मधूकांश्च बिल्वानथ च तिन्दुकान्॥ (3/11/74)
पुष्पितान् पुष्पिताग्राभिर्लताभिरूपशोभितान्।
ददर्श रामः शतशस्तत्र कान्तारपादपान्॥ (3/11/75)
हस्तिहस्तैर्विमृदितान् वानरैरूपशोभितान्।
मत्तैः शकुनिसंघैश्च शतशः प्रतिनादितान्॥ (3/11/76)

श्रीराम ने वहाँ मार्ग में नीवार (जलकदम्ब), कटहल, साखू, अशोक, तिनिश, चिरिबिल्व, महुआ, बेल, तेन्दू तथा और भी सैकड़ों जंगली वृक्ष देखे, जो फूलों से भरे थे तथा खिली हुई लताओं से परिवेष्ठित हो बड़ी शोभा पा रहे थे। उनमें से कई वृक्षों को हाथियों ने अपनी सूँड़ों से तोड़कर मसल डाला था और बहुत से वृक्षों पर बैठे हुए वानर उसकी शोभा बढ़ाते थे। सैकड़ों मतवाले पक्षी उनकी डालियों पर चहक रहे थे।

चित्रकूट से बस्तर के मार्ग में शोभाकारी वृक्ष के रूप में अशोक के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

5. तिनिश (स्यन्दन)

चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच के वन क्षेत्र में स्यन्दन के वृक्ष थे–

नीवारान् पनसान् सालान् वञ्जुलांस्तिनिशांस्तथा।
चिरिबिल्वान् मधूकांश्च बिल्वानथ च तिन्दुकान्॥ (3/11/74)
पुष्पितान् पुष्पिताग्राभिर्लताभिरूपशोभितान्।
ददर्श रामः शतशस्तत्र कान्तारपादपान्॥ (3/11/75)
हस्तिहस्तैर्विमृदितान् वानरैरूपशोभितान्।
मत्तैः शकुनिसंघैश्च शतशः प्रतिनादितान्॥ (3/11/76)

श्रीराम ने वहाँ मार्ग में नीवार (जलकदम्ब), कटहल, साखू, अशोक, तिनिश, चिरिबिल्व, महुआ, बेल, तेन्दू तथा और भी सैकड़ों जंगली वृक्ष देखे, जो फूलों से भरे थे तथा खिली हुई लताओं से

परिवेष्ठित हो बड़ी शोभा पा रहे थे। उनमें से कई वृक्षों को हाथियों ने अपनी सूँड़ों से तोड़कर मसल डाला था और बहुत से वृक्षों पर बैठे हुए वानर उसकी शोभा बढ़ाते थे। सैकड़ों मतवाले पक्षी उनकी डालियों पर चहक रहे थे।

चित्रकूट से बस्तर के मार्ग में स्यन्दन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

6. चिलबिल (Indian Elm)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए चिरबिल्व शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में चिरिबिल्व कहते हैं। इसे चिरबिल, पापरी, करञ्जी तथा वनचिल्ला भी कहा जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Holoptelia integrifolia' है। इसकी शाखाएँ लटकी हुई गुच्छाकार श्वेत रंग की होती हैं। इसके पत्ते दो कतारों में निकले हुए नोकदार एवं गन्धयुक्त होते हैं। सूखे पत्तों में नीचे उभरे बिन्दु दिखाई देते हैं।

चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच के वन क्षेत्र में चिलबिल के वृक्ष थे–

नीवारान् पनसान् सालान् वञ्जुलांस्तिनिशांस्तथा।
चिरिबिल्वान् मधूकांश्च बिल्वानथ च तिन्दुकान्॥ (3/11/74)
पुष्पितान् पुष्पिताग्राभिर्लताभिरूपशोभितान्।
ददर्श रामः शतशस्तत्र कान्तारपादपान्॥ (3/11/75)
हस्तिहस्तैर्विमृदितान् वानरैरूपशोभितान्।
मत्तैः शकुनिसंघैञ्च शतशः प्रतिनादितान्॥ (3/11/76)

श्रीराम ने वहाँ मार्ग में नीवार (जलकदम्ब), कटहल, साखू, अशोक, तिनिश, चिरिबिल्व, महुआ, बेल, तेन्दू तथा और भी सैकड़ों जंगली वृक्ष देखे, जो फूलों से भरे थे तथा खिली हुई लताओं से परिवेष्ठित हो बड़ी शोभा पा रहे थे। उनमें से कई वृक्षों को हाथियों ने अपनी सूँड़ों से तोड़कर मसल डाला था और बहुत से वृक्षों पर बैठे हुए वानर उसकी शोभा बढ़ाते थे। सैकड़ों मतवाले पक्षी उनकी डालियों पर चहक रहे थे।

चित्रकूट से बस्तर के मार्ग में चिलबिल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

7. महुआ (Butter Tree)

चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच के वन क्षेत्र में महुआ के वृक्ष थे–

नीवारान् पनसान् सालान् वञ्जुलांस्तिनिशांस्तथा।
चिरिबिल्वान् मधूकांश्च बिल्वानथ च तिन्दुकान्॥ (3/11/74)
पुष्पितान् पुष्पिताग्राभिर्लताभिरूपशोभितान्।
ददर्श रामः शतशस्तत्र कान्तारपादपान्॥ (3/11/75)
हस्तिहस्तैर्विमृदितान् वानरैरूपशोभितान्।
मत्तैः शकुनिसंघैञ्च शतशः प्रतिनादितान्॥ (3/11/76)

श्रीराम ने वहाँ मार्ग में नीवार (जलकदम्ब), कटहल, साखू, अशोक, तिनिश, चिरिबिल्व, महुआ, बेल, तेन्दू तथा और भी सैकड़ों जंगली वृक्ष देखे, जो फूलों से भरे थे तथा खिली हुई लताओं से परिवेष्ठित हो बड़ी शोभा पा रहे थे। उनमें से कई वृक्षों को हाथियों ने अपनी सूँड़ों से तोड़कर मसल डाला था और बहुत से वृक्षों पर बैठे हुए वानर उसकी शोभा बढ़ाते थे। सैकड़ों मतवाले पक्षी उनकी डालियों पर चहक रहे थे।

चित्रकूट से बस्तर तक महुआ का प्राकृतिक क्षेत्र है। चित्रकूट तथा बस्तर के वनवासियों की जीविका का महुआ एक प्रमुख स्रोत है। अतः चित्रकूट से बस्तर के मार्ग के वन क्षेत्रों में महुआ को व्यापक रूप से लगाया जाना चाहिए।

8. बेल (Bael Tree)

चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच के वन क्षेत्र में बेल के वृक्ष थे–

नीवारान् पनसान् सालान् वञ्जुलांस्तिनिशांस्तथा।
चिरिबिल्वान् मधूकांश्च बिल्वानथ च तिन्दुकान्॥ (3/11/74)
पुष्पितान् पुष्पिताग्राभिर्लताभिरूपशोभितान्।
ददर्श रामः शतशस्तत्र कान्तारपादपान्॥ (3/11/75)
हस्तिहस्तैर्विमृदितान् वानरैरूपशोभितान्।
मत्तैः शकुनिसंघैञ्च शतशः प्रतिनादितान्॥ (3/11/76)

श्रीराम ने वहाँ मार्ग में नीवार (जलकदम्ब), कटहल, साखू, अशोक, तिनिश, चिरिबिल्व, महुआ, बेल, तेन्दू तथा और भी सैकड़ों जंगली वृक्ष देखे, जो फूलों से भरे थे तथा खिली हुई लताओं से परिवेष्ठित हो बड़ी शोभा पा रहे थे। उनमें से कई वृक्षों को हाथियों ने अपनी सूँड़ों से तोड़कर मसल डाला था और बहुत से वृक्षों पर बैठे हुए वानर उसकी शोभा बढ़ाते थे। सैकड़ों मतवाले पक्षी उनकी डालियों पर चहक रहे थे।

चित्रकूट से बस्तर के मार्ग में बेल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

9. तेन्दू (Coromandel Ebony)

चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच के वन क्षेत्र में तेन्दू के वृक्ष थे–

नीवारान् पनसान् सालान् वञ्जुलांस्तिनिशांस्तथा।
चिरिबिल्वान् मधूकांश्च बिल्वानथ च तिन्दुकान्॥ (3/11/74)
पुष्पितान् पुष्पिताग्राभिर्लताभिरुपशोभितान्।
ददर्श रामः शतशस्तत्र कान्तारपादपान्॥ (3/11/75)
हस्तिहस्तैर्विमृदितान् वानरैरुपशोभितान्।
मत्तैः शकुनिसंघैञ्च शतशः प्रतिनादितान्॥ (3/11/76)

श्रीराम ने वहाँ मार्ग में नीवार (जलकदम्ब), कटहल, साखू, अशोक, तिनिश, चिरिबिल्व, महुआ,

बेल, तेन्दू तथा और भी सैकड़ों जंगली वृक्ष देखे, जो फूलों से भरे थे तथा खिली हुई लताओं से परिवेष्ठित हो बड़ी शोभा पा रहे थे। उनमें से कई वृक्षों को हाथियों ने अपनी सूँड़ों से तोड़कर मसल डाला था और बहुत से वृक्षों पर बैठे हुए वानर उसकी शोभा बढ़ाते थे। सैकड़ों मतवाले पक्षी उनकी डालियों पर चहक रहे थे।

चित्रकूट से बस्तर तक तेन्दू का प्राकृतिक वन क्षेत्र है। तेन्दू पत्ता के माध्यम से चित्रकूट तथा बस्तर के वनवासियों की जीविका का तेन्दू एक प्रमुख स्रोत है। अतः चित्रकूट से बस्तर के मार्ग के वन क्षेत्रों में तेन्दू को व्यापक रूप से लगाया जाना चाहिए।

10. पिप्पली, प्रियांगु (Long Pepper)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए पिप्पली शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में पिप्पली तथा हिन्दी में पीपर, पीपल आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Piper longum' है। यह लता जाति की वनौषधि है। यह दक्षिण एवं पूर्वी भारत में पायी जाती है। इसकी बेल अन्य लताओं की भाँति अधिक न बढ़कर थोड़ी दूर में फैलती है। इसकी जड़ कुछ मोटी और खड़ी होती है। इसके पत्ते पान के पत्ते जैसे तथा कोमल होते हैं।

चित्रकूट से दण्डकारण्य के बीच अगस्त के भाई का आश्रम था जहाँ पिप्पली का वन क्षेत्र था—

स्थलीप्रायवनोद्देशे पिप्पलीवनशोभिते।
बहुपुष्पफलेरम्ये नानाविहगनादिते॥ (3/11/38)
पद्मिन्यो विविधास्तत्र प्रसन्नसलिलाशयाः।
हंसकारण्डवाकीर्णाश्चक्रवाकोपशोभिताः॥ (3/11/39)

वहाँ वन की भूमि प्रायः समतल है तथा पिप्पली का वन उस आश्रम की शोभा बढ़ाता है। वहाँ फूलों और फलों की बहुतायत है। नाना प्रकार के पक्षियों के कलरवों से गूँजते हुए उस रमणीय आश्रम के पास भाँति-भाँति के कमलमण्डित सरोवर हैं, जो स्वच्छ जल से भरे हुए हैं। हंस और कारण्डव आदि पक्षी उसमें सब ओर फूले हुए हैं तथा चक्रवाक उनकी शोभा बढ़ाते हैं।

पिप्पलीनां च पक्कानां वनादस्मादुपागतः।
गन्धोऽयं पवनोत्क्षिप्तः सहसा कटुकोदयः॥ (3/11/49)

इस वन में पकी हुई पीपलियों की यह गन्ध वायु से प्रेरित होकर सहसा इधर आयी है, जिससे कटु रस का उदय हो रहा है।

दण्डकारण्य क्षेत्र में वनौषधि के रूप में व्यापक रूप से पिप्पली को उगाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

11. कुश

दण्डकारण्य क्षेत्र में कुश पाया जाता था—

पूजितं चोपनृत्तं च नित्यमप्सरसां गणैः।
विशालैरग्निशरणैः स्रुग्भाण्डैरजिनैः कुशैः॥ (3/1/4)

समिद्भिस्तोयकलशैः फलमूलैश्च शोभितम्।
आरण्यैश्च महावृक्षैः पुण्यैः स्वादुफलैर्वृतम् ॥ (3/1/5)

वहाँ का प्रदेश इतना मनोरम था कि वहाँ अप्सराएँ प्रतिदिन आकर नृत्य करती थीं। उस स्थान के प्रति उनके मन में बड़े आदर का भाव था। बड़ी-बड़ी अग्निशालाएँ, स्रुवा आदि यज्ञपात्र, मृगचर्म, कुश, समिधा, जलपूर्ण कलश तथा फल-मूल उसकी शोभा बढ़ाते थे। स्वादिष्ट फल देने वाले परम पवित्र तथा बड़े-बड़े वन्य वृक्षों से वह आश्रममण्डल घिरा हुआ था।

प्रायः यह घास सभी स्थानों पर पायी जाती है। अनुपलब्ध होने पर पवित्र घास के रूप में इसे कहीं-कहीं पर लगाया जा सकता है।

12. केला (Banana Tree)

विराध की बात से सीताजी केले के समान काँपने लगीं–

तस्यैव ब्रुवतो दुष्टं विराधस्य दुरात्मनः।
श्रुत्वा सगर्वितं वाक्यं सम्भ्रान्ता जनकात्मजा।
सीता प्रवेपितोद्वेगात् प्रवाते कदली यथा॥ (3/2/15)

दुरात्मा विराध की ये दुष्टता और घमंड से भरी बातें सुनकर जनकनन्दिनी सीता घबरा गयीं और जैसे तेज़ हवा चलने पर केले का वृक्ष ज़ोर-ज़ोर से हिलने लगता है, उसी प्रकार वे उद्वेग के कारण थर-थर काँपने लगीं।

चित्रकूट से बस्तर के मार्ग के आश्रम एवं मन्दिर परिसर में केला लगाया जाना चाहिए।

13. कमल (Lotus)

श्रीराम से चित्रकूट से आगे का मार्ग बताते हुए सुतीक्ष्ण ने कमल का उल्लेख किया–

फुल्लपंकजखण्डानि प्रसन्नसलिलानि च।
कारण्डवविकीर्णानि तटाकानि सरांसि च॥ (3/8/14)

आपको बहुत से ऐसे तालाब और सरोवर दिखाई देंगे, जिसमें प्रफुल्लित कमलों के समूह शोभा दे रहे होंगे। उनमें स्वच्छ जल भरे होंगें तथा कारण्डव आदि जलपक्षी सब ओर फैल रहे होंगे।

चित्रकूट से आगे कमल से भरे सरोवर थे–

पद्मपुष्करसम्बाधं गजयूथैरलंकृतम्।
सारसैर्हंसकादम्बैः संकुलं जलजातिभिः॥ (3/11/6)

वह सरोवर लाल और श्वेत कमलों से भरा हुआ था। उसमें क्रीड़ा करते हुए झुंड के झुंड हाथी उसकी शोभा बढ़ाते थे। तथा सारस, राजहंस और कलहंस आदि पक्षियों एवं जल में उत्पन्न होने वाले मत्स्य आदि जन्तुओं से वह व्याप्त दिखाई देता था।

खण्ड-4

दण्डकारण्य से पंचवटी

दण्डकारण्य से श्रीराम पंचवटी गये। वाल्मीकि रामायण में दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग का स्पष्ट उल्लेख नहीं है। महाराष्ट्र में नासिक से 5 कि.मी. पर गोदावरी के तट पर नासिक स्थित है। इसी के आसपास पंचवटी स्थित है। पंचवटी के आसपास के वन क्षेत्र को वाल्मीकि रामायण में जनस्थान कहा गया है। यहीं पर शूर्पणखा की नाक-कान कटे एवं खर-दूषण मारे गये। रावण द्वारा सीता हरण भी यहीं किया गया। दण्डकारण्य से पंचवटी की प्रजातियों का वर्णन निम्न प्रकार है–

1. साल (Shorea)

पंचवटी वन क्षेत्र में साल के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खर्जूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

पंचवटी में खर से युद्ध के समय साल के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

निवृत्तास्तु पुनः सर्वे दूषणाश्रयनिर्भयाः।
राममेवाभ्यधावन्त सालतालशिलायुधाः॥ (3/25/32)

दूषण का सहारा मिल जाने से निर्भय हो वे सब-के-सब फिर लौट आये और साखू, ताड़ आदि के वृक्ष तथा पत्थर लेकर पुनः श्रीराम पर ही टूट पड़े।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी के वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, करव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी

देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और वकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

नासिक के आस-पास के क्षेत्रों में साल को लगाये जाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

2. तमाल (Indian Gamboge Tree)

पंचवटी वन क्षेत्र में तमाल के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आस-पास तमाल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

3. ताड़ (ताल) (Palmyra Palm)

पंचवटी वन क्षेत्र में ताड़ के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

पंचवटी में खर से युद्ध के समय ताड़ के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

निवृत्तास्तु पुनः सर्वे दूषणाश्रयनिर्भयाः।
राममेवाभ्यधावन्त सालतालशिलायुधाः॥ (3/25/32)

दूषण का सहारा मिल जाने से निर्भय हो वे सब-के-सब फिर लौट आये और साखू, ताड़ आदि के वृक्ष तथा पत्थर लेकर पुनः श्रीराम पर ही टूट पड़े।

श्रीराम ने खर से युद्ध के समय उसका सिर ताड़ के फल के समान काटने की बात कही–

प्रहरस्व यथाकामं कुरु यत्नं कुलाधम।
अद्य ते पातयिष्यामि शिरस्तालफलं यथा॥ (3/29/14)

कुलाधम! तेरी जितनी इच्छा हो प्रहार कर। जितना सम्भव हो, मुझे परास्त करने का प्रयत्न कर, किन्तु आज मैं तेरे मस्तक को ताड़ के फल की भाँति अवश्य काट गिराऊँगा।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास ताड़ के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

4. खजूर (Date Palm)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए खर्जूर शब्द का प्रयोग किया गया है। खजूर को उड़िया में 'खोर्ज्यूरी', तमिल में 'कर्चुरम', तेलुगु में 'ईटा', गुजराती में 'खजूर', बंगला में 'खजूर', मलयालम में 'तेनित्ता' संस्कृत में 'खर्जूर' तथा कन्नड़ में 'खर्जूर' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Phoenix dactylifera' है। इसकी ऊँचाई 12 मीटर तक होती है। तना लगभग सीधा तथा पत्तों के पुराने डंठलों से घिरा होता है। पत्ते तने के शीर्ष पर 2 से 5 मीटर तक लम्बे होते हैं तथा सिरे पर एक नुकीला काँटा होता है। गूदा कम परन्तु मीठा होता है। भारत के लगभग हर क्षेत्र में खजूर यत्र-तत्र पाया जाता है। इससे एक रस प्राप्त होता है जिसे 'नीरा' कहते हैं। इसमें विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

पंचवटी के वनों में खजूर के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खर्जूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास खजूर के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

5. कटहल (Jackfruit)

पंचवटी के वनों में कटहल के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खर्जूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)

स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी के कटहल आदि वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, करव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और वकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास मन्दिर एवं आश्रम परिसर में कटहल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

6. नीवार (जलकदम्ब) (Asian Watergrass)

वाल्मीकि रामायण में जलकदम्ब को वृक्ष माना गया है किन्तु वर्तमान में नीवार का आशय एक प्रकार की घास ही माना जाता है–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

7. तिनिश (स्यन्दन)

यद्यपि वाल्मीकि रामायण में तिनिश और स्यन्दन के वृक्ष अलग-अलग दिखाये गये हैं किन्तु वर्तमान में तिनिश का अर्थ स्यन्दन ही माना जाता है। पंचवटी के वनों में स्यन्दन के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)

चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास स्यन्दन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

8. नागकेसर (पुनांग) (Cobra's Saffron)

पंचवटी के वनों में नागकेसर के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी के नागकेसर आदि वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, करव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और वकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास नागकेसर के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

9. आम (Mango Tree)

पंचवटी के वनों में आम के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)

चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

पंचवटी में आम के बाग में सीता फल चुनने जाती थीं–

तस्मिन्नेव ततः काले वैदेही शुभलोचना॥ (3/42/30)
कुसुमापचये व्यग्रा पादपानत्यवर्तत।
कर्णिकारानशोकांश्च चूतांश्च मदिरेक्षणा॥ (3/42/31)

उसी समय मद से भरे हुए सुन्दर नेत्रोंवाली विदेहनन्दिनी सीता, जो फूल चुनने में लगी हुई थीं कनेर, अशोक और आम के वृक्षों को लाँघती हुई उधर आ निकलीं।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी के आम आदि वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, करव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और वकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास देशी आम के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

10. अशोक (Mast Tree)

पंचवटी के वनों में अशोक के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

पंचवटी में अशोक के वनों में सीता फल चुनने जाती थीं–

तस्मिन्नेव ततः काले वैदेही शुभलोचना ॥ (3/42/30)
कुसुमापचये व्यग्रा पादपानत्यवर्तत।
कर्णिकारानशोकांश्च चूतांश्च मदिरेक्षणा ॥ (3/42/31)

उसी समय मद से भरे हुए सुन्दर नेत्रोंवाली विदेहनन्दिनी सीता, जो फूल चुनने में लगी हुई थीं कनेर, अशोक और आम के वृक्षों को लाँघती हुई उधर आ निकलीं।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी के अशोक वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

अशोक शोकापनुद शोकोपहतचेतनम्।
त्वन्नामानं कुरु क्षिप्रं प्रियासंदर्शनेन माम् ॥ (3/60/17)

अशोक! तुम शोक दूर करने वाले हो। इधर मैं शोक से अपनी चेतना खो बैठा हूँ। मुझे मेरी प्रियतमा का दर्शन कराकर शीघ्र ही अपने-जैसे नामवाला बना दो–मुझे अशोक (शोकहीन) कर दो।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी की घनी अशोक वाटिका में सीता की खोज करने लगे–

त्वमशोकस्य शाखाभिः पुष्पप्रियतरा प्रिये।
आवृणोषि शरीरं ते मम शोकविवर्धनी ॥ (3/62/3)

प्रिये! तुम्हें फूल अधिक प्रिय है, इसलिए खिली हुई अशोक की शाखाओं से अपने शरीर को छिपाती हो और मेरा शोक बढ़ा रही हो।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास शोभाकारी वृक्ष के रूप में अशोक को लगाया जाना चाहिए।

11. तिलक

पंचवटी के वनों में तिलक के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः ॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः ॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी के तिलक के वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

ककुभः ककुभोरुं तां व्यक्तं जानाति मैथिलीम्।
लतापल्लवपुष्पाढ्यो भाति ह्येष वनस्पतिः ॥ (3/60/15)
भ्रमैरुपगीतश्च यथा द्रुमवरो ह्यसि।
एष व्यक्तं विजानाति तिलकस्तिलकप्रियाम् ॥ (3/60/16)

यह ककुभ अपने ही समान ऊरूवाली मिथिलेश कुमारी को अवश्य जानता होगा; क्योंकि यह वनस्पति लता, पल्लव तथा फूलों से सम्पन्न हो बड़ी शोभा पा रहा है। ककुभ! तुम सब वृक्षों में श्रेष्ठ हो, क्योंकि ये भ्रमर तुम्हारे समीप आकर अपने झंकारों द्वारा तुम्हारा यशोगान करते हैं। (तुम्हीं सीता का पता बताओ, अहो! यह भी कोई उत्तर नहीं दे रहा है।) यह तिलक वृक्ष अवश्य सीता के विषय में जानता होगा; क्योंकि मेरी प्रिया सीता को भी तिलक से प्रेम था।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास तिलक को लगाया जाना चाहिए।

12. केतक (केवड़ा) (Screw Pine)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए केतक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में केतक, सूचिकापुष्प, जम्बुक एवं हिन्दी में केवड़ा कहते हैं। यह भारतीय प्रायदीप के दोनों ओर समुद्री किनारों तथा अण्डमान एवं निकोबार द्वीपसमूह में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Pandanus odorastissimus' है। इसका वृक्ष लगभग 10 से 12 फीट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते सघन, चमकीले, हरे, तलवार की तरह 3 से 7 फीट तक लम्बे होते हैं। इसके पुष्प अत्यन्त सुगन्धित तथा श्वेत वर्ण के होते हैं। यह दो प्रकार के होते हैं—केतक तथा सुवर्णकेतकी। सुवर्णकेतकी के पुष्प छोटे तथा अधिक सुगन्ध वाले होते हैं।

पंचवटी के वनों में केवड़ा के वृक्ष थे—

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी के केवड़ा के वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे—

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, करव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और वकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

वर्तमान में उड़ीसा के गंजम ज़िले में केवड़ा को व्यापारिक दृष्टि से उगाया जाता है। पंचवटी के आसपास केवड़ा को लगाया जाना चाहिए।

13. चन्दन (Sandalwood)

पंचवटी के वनों में चन्दन के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

सीता जी रावण से वार्ता में चन्दन का प्रयोग करती हैं–

यदन्तरं काञ्चनसीसलोहयो–
यदन्तरं चन्दनवारिपङ्कयोः।
यदन्तरं हस्तिबिडालयोर्वने
तदन्तरं दाशरथेस्तवैव च॥ (3/47/46)

सोने और सीसे में, चन्दनमिश्रित जल और कीचड़ में तथा वन में रहने वाले हाथी और बिलाव में जो अन्तर है, वही अन्तर दशरथनन्दन श्रीराम और तुझमें है।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी के चन्दन के वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, करव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और वकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

पंचवटी के आसपास चन्दन का वृक्ष लगाया जाना चाहिए।

14. कदम्ब (नीप) (Cadamba Tree)

पंचवटी के वनों में कदम्ब के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)

स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी के कदम्ब के वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

अस्ति कच्चित्वया दृष्टा सा कदम्बप्रिया प्रिया।
कदम्ब यदि जानीषे शंस सीतां शुभाननाम्॥ (3/60/12)
स्निग्धपल्लवसंकाशां पीतकौशेयवासिनीम्।
शंसस्व यदि सा दृष्टा बिल्व बिल्वोपमस्तनी॥ (3/60/13)

कदम्ब! मेरी प्रिया सीता तुम्हारे पुष्प से बहुत प्रेम करती थी, क्या वह यहाँ है? क्या तुमने उसे देखा है? यदि यह जानते हो तो उस शुभानना सीता का पता बताओ। उसके अंग सुस्निग्ध पल्लवों के समान कोमल है तथा शरीर पर पीले रंग की रेशमी साड़ी शोभा पाती है। बिल्व! मेरी प्रिया के स्तन तुम्हारे ही समान हैं। यदि तुमने उसे देखा हो तो बताओ।

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, करव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और वकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास शोभाकारी वृक्ष के रूप में कदम्ब को लगाया जाना चाहिए।

15. पर्णास (वन तुलसी) (Common Sweet Basil)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए पर्णास शब्द का प्रयोग किया गया है। वन तुलसी को संस्कृत में बर्बरी, पर्णाश, अजगन्धिका आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Ocimum basilicum' है। यह देश के लगभग सभी भागों में पायी जाती है। इसका पौधा सीधा एवं 1 से 2 फीट तक ऊँचा होता है। इसकी शाखाएँ हरे अथवा पीलापन युक्त हरे रंग की होती हैं। पत्ते 1 से 2 इंच लम्बे तथा नुकीले होते हैं। शाखाओं के अन्त में फूलों की मंजरी लगती है।

वाल्मीकि रामायण में पर्णास का उल्लेख वृक्ष के रूप में किया गया है किन्तु वर्तमान में पर्णास को वन तुलसी ही माना जाता है। पंचवटी में वन तुलसी लगायी गयी थी–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)

चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

पंचवटी क्षेत्र में वन तुलसी लगाया जाना चाहिए।

16. लकुच (बड़हल) (Monkey Jack)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए लकुच शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में लकुच, क्षुद्रपनस तथा हिन्दी में बड़हल कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Artocarpus lakoocha' है। यह लगभग पूरे देश में गर्म क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका वृक्ष 20 से 30 फीट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते 5 से 10 इंच तक लम्बे तथा 2 से 6 इंच तक चौड़े होते हैं। यह वसन्त ऋतु में फूलता एवं वर्षा ऋतु में फलता है। इसके फल गोल, गाँठदार तथा 2 से 4 इंच तक व्यास के होते हैं। फल कच्चेपन में हरे तथा पकने पर मटमैले पीले होते हैं। इसके भीतर कटहल के समान रेशा और बीज होते हैं इसलिए इसे क्षुद्रपनस भी कहते हैं।

पंचवटी के वनों में बड़हल के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास बड़हल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

17. धव (धौरा), बाकली (Axle wood)

पंचवटी के वनों में धव के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)

चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी वन क्षेत्र में धव के वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, करव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और वकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास धव के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

18. बाँस (Bamboo)

पंचवटी में बाँस के वन क्षेत्र थे। श्रीराम की कुटिया बनाने में बाँस का उपयोग किया गया–

पर्णशालां सुविपुलां तत्र संघातमृत्तिकाम्।
सुस्तम्भां मस्करैर्दीर्घैः कृतवंशां सुशोभनाम्॥ (3/15/21)
शमीशाखाभिरास्तीर्य दृढ़पाशावपाशिताम्।
कुशकाशशरैः पर्णैः सुपरिच्छादितां तथा॥ (3/15/22)
समीकृततलां रम्यां चकार सुमहाबलः।
निवासं राघवस्यार्थे प्रेक्षणीयमनुत्तमम्॥ (3/15/23)

वह आश्रम एक अत्यन्त विस्तृत पर्णशाला के रूप में बनाया गया था। महाबली लक्ष्मण ने पहले वहाँ मिट्टी एकत्र करके दीवार खड़ी की, फिर उसमें सुन्दर एवं सुदृढ़ खम्भे लगाये। खम्भों के ऊपर बड़े-बड़े बाँस तिरछे करके रखे। बाँसों के रख दिये जाने पर वह कुटी बड़ी सुन्दर दिखाई देने लगी। फिर उन बाँसों पर उन्होंने शमी वृक्ष की शाखाएँ फैला दीं और उन्हें मज़बूत रस्सियों से कसकर बाँध दिया। इसके बाद ऊपर से कुश, कास, सरकण्डे और पत्ते बिछाकर उस पर्णशाला को भलीभाँति छा दिया तथा नीचे की भूमि को बराबर करके उस कुटी को बड़ा रमणीय बना दिया। इस प्रकार लक्ष्मण ने श्रीरामचन्द्र जी के लिए परम उत्तम निवासगृह बना दिया, जो देखने ही योग्य था।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास बाँस के वनों को बढ़ाया जाना चाहिए।

19. गर्जन (अश्वकर्ण)

पंचवटी के वनों में गर्जन के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास गर्जन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

20. खैर (Cutch)

पंचवटी के वनों में खैर के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास खैर के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

21. शमी (Khejri)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए शमी शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Prosopis cineraria' है। यह सूखे क्षेत्र का वृक्ष है। यह मुख्यतः राजस्थान, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, बिहार, कर्नाटक, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल के सूखे क्षेत्रों में पाया जाता है। इसकी ऊँचाई 08 से 10 मीटर तक होती है। शाखाओं पर थोड़ी-थोड़ी दूर पर 03 से 06 मि.मी. तक लम्बे काँटे होते हैं। शमी के फूल छोटे तथा पीताभ

रंग के होते हैं। इसकी फली बेलनाकार एवं बीच-बीच में संकुचित होती है। यह राजस्थान का 'राज्य वृक्ष' है। इसकी फली से सब्ज़ी एवं अचार आदि बनाया जाता है। पूजा पाठ एवं हवन इत्यादि में इसका अत्यधिक प्रयोग होता है।

पंचवटी के वनों में खैर के वृक्ष थे—

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

पंचवटी में श्रीराम की कुटिया बनाने में शमी की शाखाओं का उपयोग किया गया—

पर्णशालां सुविपुलां तत्र संघातमृत्तिकाम्।
सुस्तम्भां मस्करैर्दीर्घैः कृतवंशां सुशोभनाम्॥ (3/15/21)
शमीशाखाभिरास्तीर्य दृढ़पाशावपाशिताम्।
कुशकाशशरैः पर्णैः सुपरिच्छादितां तथा॥ (3/15/22)
समीकृततलां रम्यां चकार सुमहाबलः।
निवासं राघवस्यार्थे प्रेक्षणीयमनुत्तमम्॥ (3/15/23)

वह आश्रम एक अत्यन्त विस्तृत पर्णशाला के रूप में बनाया गया था। महाबली लक्ष्मण ने पहले वहाँ मिट्टी एकत्र करके दीवार खड़ी की, फिर उसमें सुन्दर एवं सुदृढ़ खम्भे लगाये। खम्भों के ऊपर बड़े-बड़े बाँस तिरछे करके रखे। बाँसों के रख दिये जाने पर वह कुटी बड़ी सुन्दर दिखाई देने लगी। फिर उन बाँसों पर उन्होंने शमी वृक्ष की शाखाएँ फैला दीं और उन्हें मज़बूत रस्सियों से कसकर बाँध दिया। इसके बाद ऊपर से कुश, कास, सरकण्डे और पत्ते बिछाकर उस पर्णशाला को भलीभाँति छा दिया तथा नीचे की भूमि को बराबर करके उस कुटी को बड़ा रमणीय बना दिया। इस प्रकार लक्ष्मण ने श्रीरामचन्द्र जी के लिए परम उत्तम निवासगृह बना दिया, जो देखने ही योग्य था।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास शमी के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

22. पाटल (पाड़र) (Messenger of Spring, Palol)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए पाटल एवं पाटलिका शब्द का प्रयोग किया गया है। यह प्रायः समस्त भारत में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Stereospermum suaveolens' है। इसका वृक्ष 30 से 60 फीट तक ऊँचा होता है। इसकी छाल चौथाई इंच मोटी, चिकनी तथा काटने पर हलके पीले रंग की होती है। इसकी छाल से कड़े तथा मुलायम परत बारी-बारी से निकलते हैं। इसके पत्ते विपरीत तथा 1 से 2 फीट तक लम्बे होते हैं। बसन्त ऋतु में पुराने पत्ते गिरकर नये पत्ते आते हैं।

नये पत्ते आने के साथ इसमें 1 से 1.5 इंच लम्बे, बाहर से लाल और भीतर से पीली रेखाओं से युक्त सुगन्धित फूल निकलते हैं।

पंचवटी के वनों में खैर के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास पाटल के वृक्ष लगाया जाना चाहिए।

23. पलाश (टेसू) (Flame of the forest)

पंचवटी के वनों में पलाश के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास पलाश के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

24. कुश

पंचवटी क्षेत्र में कुश पाया जाता था–

रमते यत्र वैदेही त्वमहं चैव लक्ष्मण।
तादृशो दृश्यतां देशः संनिकृष्टजलाशयः॥ (3/15/4)
वनरामण्यकं यत्र जलरामण्यकं तथा।
संनिकृष्टं च यस्मिंस्तु समित्पुष्पकुशोदकम्॥ (3/15/5)

लक्ष्मण! तुम किसी ऐसे स्थान को ढूँढ़ निकालो, जहाँ से जलाशय निकट हो, वहाँ विदेहकुमारी सीता का मन लगे, जहाँ तुम और हम भी प्रसन्नतापूर्वक रह सकें, जहाँ वन और जल दोनों का रमणीय दृश्य हो तथा जिस स्थान के आस-पास ही समिधा, फूल, कुश और जल मिलने की सुविधा हो।

पंचवटी में श्रीराम की कुटिया में कुश का प्रयोग किया गया–

पर्णशालां सुविपुलां तत्र संघातमृत्तिकाम्।
सुस्तम्भां मस्करैर्दीर्घैः कृतवंशां सुशोभनाम्॥ (3/15/21)
शमीशाखाभिरास्तीर्य दृढ़पाशावपाशिताम्।
कुशकाशशरैः पर्णैः सुपरिच्छादितां तथा॥ (3/15/22)
समीकृततलां रम्यां चकार सुमहाबलः।
निवासं राघवस्यार्थे प्रेक्षणीयमनुत्तमम्॥ (3/15/23)

वह आश्रम एक अत्यन्त विस्तृत पर्णशाला के रूप में बनाया गया था। महाबली लक्ष्मण ने पहले वहाँ मिट्टी एकत्र करके दीवार खड़ी की, फिर उसमें सुन्दर एवं सुदृढ़ खम्भे लगाये। खम्भों के ऊपर बड़े-बड़े बाँस तिरछे करके रखे। बाँसों के रख दिये जाने पर वह कुटी बड़ी सुन्दर दिखाई देने लगी। फिर उन बाँसों पर उन्होंने शमी वृक्ष की शाखाएँ फैला दीं और उन्हें मज़बूत रस्सियों से कसकर बाँध दिया। इसके बाद ऊपर से कुश, कास, सरकण्डे और पत्ते बिछाकर उस पर्णशाला को भलीभाँति छा दिया तथा नीचे की भूमि को बराबर करके उस कुटी को बड़ा रमणीय बना दिया। इस प्रकार लक्ष्मण ने श्रीरामचन्द्र जी के लिए परम उत्तम निवासगृह बना दिया, जो देखने ही योग्य था।

प्रायः यह घास सभी स्थानों पर पायी जाती है। अनुपलब्ध होने पर पवित्र घास के रूप में इसे कहीं-कहीं पर लगाया जा सकता है।

25. सरकण्डा, मूँज घास या सरपत (Munj Grass)

पंचवटी में श्रीराम की कुटिया में सरकण्डा का प्रयोग किया गया–

पर्णशालां सुविपुलां तत्र संघातमृत्तिकाम्।
सुस्तम्भां मस्करैर्दीर्घैः कृतवंशां सुशोभनाम्॥ (3/15/21)
शमीशाखाभिरास्तीर्य दृढ़पाशावपाशिताम्।
कुशकाशशरैः पर्णैः सुपरिच्छादितां तथा॥ (3/15/22)
समीकृततलां रम्यां चकार सुमहाबलः।
निवासं राघवस्यार्थे प्रेक्षणीयमनुत्तमम्॥ (3/15/23)

वह आश्रम एक अत्यन्त विस्तृत पर्णशाला के रूप में बनाया गया था। महाबली लक्ष्मण ने पहले वहाँ मिट्टी एकत्र करके दीवार खड़ी की, फिर उसमें सुन्दर एवं सुदृढ़ खम्भे लगाये। खम्भों के ऊपर बड़े-बड़े बाँस तिरछे करके रखे। बाँसों के रख दिये जाने पर वह कुटी बड़ी सुन्दर दिखाई देने लगी। फिर उन बाँसों पर उन्होंने शमी वृक्ष की शाखाएँ फैला दीं और उन्हें मज़बूत रस्सियों से कसकर बाँध दिया। इसके बाद ऊपर से कुश, कास, सरकण्डे और पत्ते बिछाकर उस पर्णशाला को भलीभाँति छा दिया तथा नीचे की भूमि को बराबर करके उस कुटी को बड़ा रमणीय बना दिया। इस प्रकार लक्ष्मण ने श्रीरामचन्द्र जी के लिए परम उत्तम निवासगृह बना दिया, जो देखने ही योग्य था।

26. कुन्द (Downy Jasmine)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए कुन्द गुल्म शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में कुन्द, सदापुष्प आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Jasminum pubescens' है। यह लगभग पूरे देश में पाया जाता है। यह शोभा एवं अपने सुन्दर फूलों के लिए लगाया जाता है। इसके पुष्प बेला के समान, उससे कुछ लम्बे, श्वेत एवं सुगन्धित होते हैं। यह पूरे वर्ष फूलता है किन्तु शीतकाल में अधिक फूल आते हैं।

पंचवटी में सीता के कुटिया से बाहर निकलने पर रावण उनकी प्रशंसा करते हुए कहता है–

समाः शिखरिणः स्निग्धाः पाण्डुरा दशनास्तव।
विशाले विमले नेत्रे रक्तान्ते कृष्णतारके॥ (3/46/18)
विशालं जघनं पीनमूरू करिकरोपमो।

तुम्हारे दाँत बराबर हैं। उनके अग्रभाग कुन्द की कलियों के समान शोभा पाते हैं। वे सब के सब चिकने और सफ़ेद हैं। तुम्हारी दोनों आँखें बड़ी-बड़ी और निर्मल हैं। उनके दोनों कोये लाल हैं और पुतलियाँ काली हैं। कटि का अग्रभाग विशाल और मांसल है। दोनों जाँघें हाथी की सूँड़ के समान शोभा पाती हैं।

सुन्दर फूलों के लिए कुन्द को पंचवटी क्षेत्र में लगाया जाना चाहिए।

27. कनेर या करवीर (Sweet Scented Oleader)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए करवीर शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे कनैल एवं करवीर भी कहते हैं। यह कई प्रकार का होता है। प्रथम श्वेत या रक्त कनेर कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Narium indicum' है। इसे अंग्रेज़ी में Sweet Scented Oleader कहते हैं। यह लगभग पूरे देश में पाया जाता है। इसके पत्ते 4 से 6 इंच लम्बे, लगभग 1 इंच चौड़े तथा नुकीले होते हैं। इसके फूल सफ़ेद अथवा गुलाबी रंग के लगभग 1.5 इंच व्यास के होते हैं। यह फूलों के लिए लगाया जाता है। इसके सभी भाग विषैले होते हैं। इसे जानवर नहीं चरते हैं। प्रायः यह अपने फूलों के लिए लगाया जाता है।

दूसरे प्रकार का कनेर पीत कनेर कहलाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Thevetia peruviana' है। इसे अंग्रेज़ी में Yellow oleander कहते हैं। इस पर पीले रंग के अत्यन्त आकर्षक पुष्प आते हैं। इसका वृक्ष लगभग 5 से 8 मीटर तक ऊँचा होता है। यह सदा हराभरा रहने वाला वृक्ष है तथा इस पर लगभग पूरे वर्ष फूल आते हैं। अपने फूलों के कारण इसे आसानी से पहचाना जा सकता है।

अपने हरण के उपरान्त सीता कनेर के वृक्षों से इसकी सूचना श्रीराम को देने का अनुरोध करती हैं–

आमन्त्रये जनस्थाने कर्णिकारांश्च पुष्पितान्।
क्षिप्रं रामाय भांस त्वं सीतां हरति रावणः॥ (3/49/30)

मैं जनस्थान में खिले हुए कनेर के वृक्षों से प्रार्थना करती हूँ, तुम लोग शीघ्र ही श्रीराम से कहना, सीता को रावण हर ले जा रहा है।

सीताहरण के उपरान्त विलाप में श्रीराम कनेर का स्मरण करते हैं–

कर्णिकारवनं भद्रे हसन्ती देवि सेवसे।
अलं ते परिहासेन मम बाधावहेन वै॥ (3/62/5)

भद्रे! देवि! तुम हँसती हुई कनेर पुष्पों की वाटिका का सेवन करती हो। बन्द करो इस परिहास को, इससे मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है।

पूरे राम वनगमन पथ पर कनेर को फूलों हेतु लगाया जाना चाहिए।

28. असिपत्र, ईख (Sugar Cane)

अपने हरण के उपरान्त विलाप में सीता ईख का उल्लेख करती हैं–

व्यक्तं हिरण्यमयांस्त्वं हि सम्पश्यसि महीरुहान्।
नदीं वैतरणीं घोरां रुधिरौघविवाहिनीम्॥ (3/53/19)
खड्गपत्रवनं चैव भीमं पश्यसि रावण।
तप्तकाञ्चनपुष्पां च वैदूर्यप्रवरच्छदाम्॥ (3/53/20)
द्रक्ष्यसे शाल्मलीं तीक्ष्णामायसैः कण्टकैश्चिताम्।

रावण! अवश्य ही तू सुवर्णमय वृक्षों को देख रहा है, रक्त का स्रोत बहाने वाली भयंकर वैतरणी नदी का दर्शन कर रहा है, भयानक असिपत्र-वन को भी देखना चाहता है तथा जिसमें तपाये हुए सुवर्ण के समान फूल तथा श्रेष्ठ वैदूर्यमणि (नीलम) के समान पत्ते हैं और जिसमें लोहे के काँटे चिने गये हैं, उस तीखी शाल्मलिका भी अब तू शीघ्र ही दर्शन करेगा।

29. अर्जुन (ककुभ) (Arjuna Tree)

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी वन क्षेत्र में अर्जुन के वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

अथवार्जुन शंस त्वं प्रियां तामर्जुनप्रियाम्।
जनकस्य सुता तन्वी यदि जीवति वा न वा॥ (3/60/14)

अथवा अर्जुन! तुम्हारे फूलों पर मेरी प्रिया का विशेष अनुराग था, अतः तुम्हीं उसका कुछ समाचार बताओ। कृशांगी जनककिशोरी जीवित है या नहीं।

ककुभः ककुभोरुं तां व्यक्तं जानाति मैथिलीम्।
लतापल्लवपुष्पाढ्यो भाति ह्येष वनस्पतिः॥ (3/60/15)
भ्रमरैरूपगीतश्च यथा द्रुमवरो ह्यसि।
एष व्यक्तं विजानाति तिलकस्तिलकप्रियाम्॥ (3/60/16)

यह ककुभ अपने ही समान ऊरूवाली मिथिलेश कुमारी को अवश्य जानता होगा; क्योंकि यह वनस्पति लता, पल्लव तथा फूलों से सम्पन्न हो बड़ी शोभा पा रहा है। ककुभ! तुम सब वृक्षों में श्रेष्ठ हो, क्योंकि ये भ्रमर तुम्हारे समीप आकर अपने झंकारों द्वारा तुम्हारा यशोगान करते हैं। (तुम्हीं सीता का पता बताओ, अहो! यह भी कोई उत्तर नहीं दे रहा है।) यह तिलक वृक्ष अवश्य सीता के विषय में जानता होगा; क्योंकि मेरी प्रिया सीता को भी तिलक से प्रेम था।

यहाँ पर अर्जुन एवं कुकुभ का अलग-अलग प्रयोग किया गया है किन्तु आजकल अर्जुन को ही कुकुभ कहा जाता है।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास अर्जुन के वृक्ष लगाया जाना चाहिए।

30. जामुन (Black plum or Java plum)

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी वन क्षेत्र में जामुन के वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

यदि दृष्टा त्वया जम्बो जाम्बूनदसमप्रभा।
प्रियां यदि विजानासि निःशङ्क कथयस्व मे॥ (3/60/19)

जामुन! जाम्बूनद (सुवर्ण) के समान कान्तिवाली मेरी प्रिया यदि तुम्हारी दृष्टि में पड़ी हो, यदि तुम उसके विषय में कुछ जानते हो तो निःसंकोच होकर मुझे बताओ।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास जामुन के वृक्ष लगाया जाना चाहिए।

31. कुरव

इस प्रजाति के बारे में अधिकृत जानकारी उपलब्ध नहीं है।

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए कुरव शब्द का प्रयोग किया गया है–

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, कुरव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और वकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

32. अनार (Pomegranat)

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी वन क्षेत्र में जामुन के वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, करव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और वकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास अनार के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

33. बकुल (मौलसिरी) (Elengi Tree)

सीता हरण के बाद श्रीराम पंचवटी वन क्षेत्र में मौलश्री के वृक्षों से सीता का पता पूछने लगे–

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान्।
दाडिमानपि तान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः॥ (3/60/21)
बकुलानथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथा।
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इव लक्ष्यते॥ (3/60/22)

इसी प्रकार आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, करव, धव और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और बकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवड़े आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे। उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखाई देते थे।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आस-पास शोभाकारी वृक्ष के रूप में मौलश्री के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

34. चम्पा (Michelia Champaka)

पंचवटी के वन में चम्पा के वृक्ष थे–

सालैस्तालैस्तमालैश्च खजूरैः पनसैर्द्रुमैः।
नीवारैस्तिनिशैश्चैव पुन्नागैश्चोपशोभिता॥ (3/15/16)
चूतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः।
पुष्पगुल्मलतोपेतैस्तैस्तैस्तरुभिरावृताः॥ (3/15/17)
स्यन्दनैश्चन्दनैर्नीपैः पर्णासैर्लकुचैरपि।
धवाश्वकर्णखदिरैः शमीकिंशुकपाटलैः॥ (3/15/18)

पुष्पों, गुल्मों तथा लता-वल्लरियों से युक्त साल, ताल, तमाल, खजूर, कटहल, जलकदम्ब, तिनिश, पुनांग, आम, अशोक, तिलक, केवड़ा, चम्पा, स्यन्दन, चन्दन, कदम्ब, पर्णास, लकुच, धव, अश्वकर्ण, खैर, शमी पलाश और पाटल (पाडर) आदि वृक्षों से घिरे हुए ये पर्वत बड़ी शोभा पा रहे हैं।

सीता हरण के बाद विलाप करते हुए श्रीराम चम्पा का उल्लेख करते हैं–

सा हि चम्पकवर्णाभा ग्रीवा ग्रैवेयकोचिता।
कोमला विलपन्त्यातु कान्ताया भक्षिता शुभा॥ (3/60/32)

रोती-बिलखती हुई प्रियतमा सीता की वह चम्पा के समान वर्णवाली कोमल एवं सुन्दर ग्रीवा, जो हार और हँसली आदि आभूषण पहनने के योग्य थी, निशाचरों का आहार बन गयी।

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आसपास शोभाकारी वृक्ष के रूप में चम्पा के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

35. केला (Banana Tree)

पंचवटी में श्रीराम का आश्रम केले के वृक्षों से घिरा था। वहाँ पहुँचकर मारीच को आश्रम दिखाते हुए रावण मृग बनने का संकेत करता है–

एतद् रामाश्रमपदं दृश्यते कदलीवृतम् ॥ (3/42/13)
क्रियतां तत् सखे शीघ्रं यदर्थ वयमागताः।

सखे! यह केलों से घिरा हुआ राम का आश्रम दिखाई दे रहा है। अब शीघ्र ही वह कार्य करो, जिसके लिए हम लोग यहाँ आये हैं।

मारीचि वध के उपरान्त सीता को आश्रम में न पाकर श्रीराम उनकी तुलना केले से करते हैं–

कदलीकाण्डसदृशौ कदल्या संवृतावुभौ।
ऊरू पश्यामि ते देवि नासि शक्ता निगूहितुम्॥ (3/62/4)

देवि! मैं केले के तनों के तुल्य और कदली दल से ही छिपे हुए तुम्हारे दोनों ऊरुओं (जाँघों) को देख रहा हूँ। तुम उन्हें छिपा नहीं सकतीं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने सीता हरण के चित्रण में केला का उल्लेख किया है–

श्रीफल कनक कदलि हरशाहीं। (3/30)

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आस-पास आश्रम में केला के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

36. कमल (Lotus)

पंचवटी में विलाप के समय श्रीराम ने कमल का उल्लेख किया है–

पद्माननापद्मपलाशनेत्र
पद्मानि वानेतुमभिप्रयाता।
तदप्ययुक्तं नहि सा कदाचि–
न्मया विना गच्छति पंकजानि॥ (3/63/14)

उसका मुख और विशाल नेत्र प्रफुल्ल कमलों के समान सुन्दर हैं, सम्भव है कि वह कमल पुष्प लाने के लिए गोदावरी के तट पर गयी हो, परन्तु यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि वह मुझे साथ लिए बिना कभी कमलों के पास नहीं जाती थी।

37. बेल

गोस्वामी तुलसीदास जी ने सीता हरण के चित्रण में श्रीफल या बेल का उल्लेख किया है–

श्रीफल कनक कदलि हरशाहीं। (3/30)

दण्डकारण्य से पंचवटी के मार्ग में तथा पंचवटी के आस-पास आश्रम में बेल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

खण्ड-5

पंचवटी से किष्किन्धा

किष्किन्धा पर्वत कर्नाटक के हम्पी के निकट कोपल ज़िले में है। यह तुंगभद्रा के तट पर स्थित है। पम्पा सरोवर तथा प्रस्रवण गिरि यहीं पर हैं। यहीं पर श्रीराम हनुमान का मिलन हुआ था। यहाँ राम सुग्रीव मित्रता हुई थी तथा श्रीराम द्वारा बालि का वध किया गया। वानरों की सेना यहीं एकत्रित होकर युद्ध के लिए श्रीलंका को प्रस्थान की थी। पंचवटी से किष्किन्धा के बीच की प्रजातियाँ निम्नवत् हैं–

1. जामुन (Black plum or Java plum)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में जामुन के वृक्ष थे–

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार–ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

श्रीराम वर्षा ऋतु का वर्णन करते समय लक्ष्मण से जामुन का उल्लेख करते हैं–

रसाकुलं षट्पदसंनिकाशं
प्रभुज्यते जम्बुफलं प्रकामम्।
अनेकवर्ण पवनावधूतं
भूमौ पतत्याम्रफलं विपक्वम्॥ (4/28/19)

काले-काले भौंरों के समान प्रतीत होने वाले जामुन के सरस फल आजकल लोग जी भरकर खाते हैं और हवा के वेग से हिले हुए आम के पके हुए बहुरंगी फल पृथ्वी पर गिरते रहते हैं।

अङ्गारचूर्णोत्करसंनिकाशैः
फलैः सुपर्याप्तरसैः समृद्धैः।

जम्बूद्रुमाणां प्रविभान्ति शाखा
निपीयमाना इव षट्पदोघैः ॥ (4/28/30)

कोयलों की चूर्णराशि के समान काले और प्रचुर रस से भरे हुए बड़े-बड़े फलों से लदी हुई जामुन वृक्ष की शाखाएँ ऐसी जान पड़ती हैं, मानो भ्रमरों के समुदाय उनमें सटकर उनके रस पी रहे

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में जामुन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

2. प्रियाल (चिरौंजी) (The Cuddapah Almond)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में चिरौंजी के वृक्ष थे–

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार–ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में चिरौंजी के वृक्ष लगाया जाना चाहिए।

3. कटहल (Jackfruit)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में कटहल के वृक्ष थे–

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार–ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार पम्पा सरोवर के तट पर पनस (कटहल) के वृक्ष थे–

चंपक बकुल कदंब तमाला।
पाटल पनस परास रसाला॥ (3/40)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में आश्रम परिसरों में कटहल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

4. बरगद (भंडीर) (Banyan tree)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में बरगद के वृक्ष थे–

एतदालक्ष्यते वीर मधूकानां महावनम्।
उत्तरेणास्य गन्तव्यं न्यग्रोधमपि गच्छता॥ (3/13/21)
ततः स्थलमुपारुह्य पर्वतस्याविदूरतः।
ख्यातः पञ्चवटीत्येव नित्यपुष्पितकाननः॥ (3/13/22)

वीर! यह जो महुओं का विशाल वन दिखाई देता है, इसके उत्तर से होकर जाना चाहिए। उस मार्ग से जाते हुए आपको एक बरगद का वृक्ष मिलेगा। उससे आगे कुछ दूर तक ऊँचा मैदान है, उसे पार करने के बाद एक पर्वत दिखाई देगा। उस पर्वत से थोड़ी ही दूर पर पञ्चवटी नाम से प्रसिद्ध सुन्दर वन है, जो सदा फूलों से सुशोभित रहता है।

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्चना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार–ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पम्पा सरोवर के पास के वनों में बरगद के वृक्ष थे–

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर

(बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में बरगद के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

5. पाकड़ (Fig Tree)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में पाकड़ के वृक्ष थे—

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार—ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में पाकड़ के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

6. तेन्दू (Coromandel Ebony)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में तेन्दू के वृक्ष थे—

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार—ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में तेन्दू के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

7. पीपल (Bodhi Tree)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में पीपल के वृक्ष थे–

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार–ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से पीपल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

8. कनेर या करवीर (Sweet Scented Oleader)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में कनेर के वृक्ष थे–

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार–ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पम्पा सरोवर के पास के वनों में कनेर के वृक्ष थे–

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः॥ (3/75/23)

मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः ॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः ॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

श्रीराम ने पम्पा सरोवर का वर्णन करते हुए कई बार कनेर का उल्लेख किया है—

सुपुष्पितांस्तु पश्यैतान् कर्णिकारान् समन्ततः।
हाटकप्रतिसंछन्नान् नरान् पीताम्बरानिव ॥ (4/1/21)

देखो! सब ओर सुन्दर फूलों से भरे हुए ये कनेर सोने के आभूषणों से विभूषित पीताम्बर धारी मनुष्यों के समान शोभा पा रहे हैं।

सौमित्रे पश्य पम्पाया दक्षिणे गिरिमानुषु।
पुष्पितां कर्णिकारस्य यष्टिं परमशोभिताम्॥ (4/1/73)

सुमित्रानन्दन! वह देखो, पम्पा के दक्षिण भाग में पर्वत शिखरों पर खिली हुई कनेर की डाल कितनी अधिक शोभा पा रही है।

पम्पातीररुहाश्चेमे संसिक्ता मधुगन्धिनः।
मालतीमल्लिकापद्मकरवीराश्च पुष्पिताः॥ (4/1/76)

पम्पा के तट पर उत्पन्न हुए ये वृक्ष इसी के जल से अभिषिक्त हो बढ़े हैं और मधुर मकरन्द एवं गन्ध से सम्पन्न हुए हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं—मालती, मल्लिका, पद्म और करवीर। ये सब-के-सब फूलों से सुशोभित हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में शोभाकारी वृक्ष के रूप में कनेर के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

9. आम (Mango Tree)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में कनेर के वृक्ष थे—

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः ॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः ॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात् ॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार—ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पम्पा सरोवर के पास के वनों में आम के बाग थे—

अरविन्दोत्पलवतीं पद्मसौगन्धिकायुताम्।
पुष्पिताम्रवणोपेतां बर्हिणोद्घुष्टनादिताम्॥ (3/75/21)

उस पुष्करिणी में अरविन्द और उत्पल खिले थे। पद्म और सौगन्धिक जाति के पुष्प शोभा पाते थे। मौर लगी हुई अमराइयों से वह घिरी हुई थी तथा मयूरों के केकानाद वहाँ गूँज रहे थे।

पम्पा की शोभा का वर्णन करते हुए श्रीराम आम का उल्लेख करते हैं—

अमी लक्ष्मण दृश्यन्ते चूताः कुसुमशालिनः।
विभ्रमोत्सिक्तमनसः साङ्गरागा नरा इव॥ (4/1/60)

लक्ष्मण! ये मञ्जरियों से सुशोभित होने वाले आम के वृक्ष शृंगार-विलास से मदमत्त हृदय होकर चन्दन आदि अंगराग धारण करने वाले मनुष्यों के समान दिखाई देते हैं।

अङ्कोलाश्चकुरण्टाश्चचूर्णकाःपारिभद्रकाः।
चूताः पाटलयश्चापि कोविदाराश्च पुष्पिताः॥ (4/1/80)
मुचुकुन्दार्जुनाश्चैव दृश्यन्ते गिरिसानुषु।

अंकोल, कुरंट, चूर्णक (सेमल), पारिभद्रक (नीम या मदार), आम, पाटलि, कोविदार, मुचुकुन्द (नारंग) और अर्जुन नामक वृक्ष भी पर्वत शिखरों पर फूलों से लदे दिखाई देते हैं।

माल्यवान पर्वत पर श्रीराम वर्षाऋतु का वर्णन करते हुए लक्ष्मण से आम के फलों का उल्लेख करते हैं—

रसाकुलं षट्पदसंनिकाशं
प्रभुज्यते जम्बुफलं प्रकामम्।
अनेकवर्ण पवनावधूतं
भूमौ पतत्याम्रफलं विपक्वम्॥ (4/28/19)

काले-काले भौंरों के समान प्रतीत होने वाले जामुन के सरस फल आजकल लोग जी भरकर खाते हैं और हवा के वेग से हिले हुए आम के पके हुए बहुरंगी फल पृथ्वी पर गिरते रहते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार पम्पा सरोवर के तट पर रसाल (आम) के वृक्ष थे—

चंपक बकुल कदंब तमाला।
पाटल पनस परास रसाला॥ (3/40)

देशी आम के बहुरंगी फल होते हैं। प्रायः किसी भी दो वृक्ष के फल एक जैसे नहीं होते।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में फलों के लिए देशी आम के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

10. धव (धौरा), बाकली (Axle wood)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में धव के वृक्ष थे–

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार–ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पम्पा सरोवर के तट पर धव के वृक्ष थे–

केतकोद्दालकाश्चैव शिरीशाः शिशपाः धवाः॥ (4/1/81)
शाल्मल्यः किंशुकाश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा।
तिनिशा नक्तमालाश्च चन्दनाः स्यन्दनास्तथा॥ (4/1/82)
हिन्तालास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः।

केतक, उद्दालक, शिरीश, शीशम, धव, सेमल, पलाश, लाल कुबरक, तिनिश, नक्तमाल, चन्दन, स्यन्दन, हिन्ताल, तिलक तथा नागकेसर के वृक्ष भी फूलों से भरे दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में धव के वृक्ष लगाया जाना चाहिए।

11. नागकेसर (पुनांग) (Cobra's Saffron)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में नागकेसर के वृक्ष थे–

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार–ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर

अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पम्पा सरोवर के पास के वनों में नागकेसर के वृक्ष थे–

तिलकाशोकपुंनागबकुलोद्दालकाशिनीम् ॥ (3/75/16)
रम्योपवनसम्बाधां पद्मसम्पीडितोदकाम्।
स्फटिकोपमतोयां तां श्लक्ष्णवालुकसंततताम्॥ (3/75/17)
मत्स्यकच्छपसम्बाधां तीरस्थद्रुमशोभिताम्।
सखीभिरव संयुक्तां लताभिरनुवेष्ठिताम् ॥ (3/75/18)
किंनरोरगगन्धर्वयक्षराक्षससेविताम्।
नानाद्रुमलताकीर्णा शीतवारिनिधिं शुभाम्॥ (3/75/19)

उसके तट पर तिलक, अशोक, नागकेसर, बकुल तथा लिसोड़े के वृक्ष उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। भाँति-भाँति के रमणीय उपवनों से वह घिरी हुई थी। उसका जल कमल पुष्पों से आच्छादित था और स्फटिक मणि के समान स्वच्छ दिखाई देता था। जल के नीचे स्वच्छ बालुका फैली हुई थी। मत्स्य और कच्छप उसमें भरे हुए थे। तटवर्ती वृक्ष उसकी शोभा बढ़ाते थे। सब ओर लताओं द्वारा आवेष्टित होने के कारण वह सखियों से संयुक्त सी प्रतीत होती थी। किन्नर, नाग, गन्धर्व, यक्ष और राक्षस उसका सेवन करते थे। भाँति-भाँति के वृक्ष और लताओं से व्याप्त हुई पम्पा शीतल जल की सुन्दर निधि प्रतीत होती थी।

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः ॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः ॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः ॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

श्रीराम पम्पा सरोवर का वर्णन करते हुए लक्ष्मण से नागकेसर का उल्लेख करते हैं–

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलस्तथा।
चम्पकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः॥ (4/1/78)

चिरिबिल्व (चिलबिल), महुआ, बेंत, मौलसिरी, चम्पा, तिलक और नागकेसर भी खिले हुए दिखाई देते हैं।

केतकोद्दालकाश्चैव शिरीशः शिशपाः धवाः ॥ (4/1/81)
शाल्मल्यः किंशुकाश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा।
तिनिशा नक्तमालाश्च चन्दनाः स्यन्दनास्तथा ॥ (4/1/82)
हिन्तालास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः।

केतक, उद्दालक, शिरीश, शीशम, धव, सेमल, पलाश, लाल कुबरक, तिनिश, नक्तमाल, चन्दन,

स्यन्दन, हिन्ताल, तिलक तथा नागकेसर के वृक्ष भी फूलों से भरे दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में नागकेसर के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

12. तिलक

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में तिलक के वृक्ष थे–

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार–ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

सुमनोभिश्चितास्तत्र तिलका नक्तमालकाः॥ (3/73/21)
उत्पलानि च फुल्लानि पङ्कजानि च राघव।

रघुनन्दन! वहाँ फूलों से भरे हुए तिलक और नक्तमाल के वृक्ष शोभा पाते हैं और जल के भीतर उत्पल और कमल फूले दिखाई देते हैं।

पम्पा सरोवर के तट पर तिलक के वृक्ष थे–

केतकोद्दालकाश्चैव शिरीशाः शिशपाः धवाः॥ (4/1/81)
शाल्मल्यः किंशुकाश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा।
तिनिशा नक्तमालाश्च चन्दनाः स्यन्दनास्तथा॥ (4/1/82)
हिन्तालास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः।

केतक, उद्दालक, शिरीश, शीशम, धव, सेमल, पलाश, लाल कुबरक, तिनिश, नक्तमाल, चन्दन, स्यन्दन, हिन्ताल, तिलक तथा नागकेसर के वृक्ष भी फूलों से भरे दिखाई देते हैं।

पम्पा सरोवर के पास के वनों में तिलक के वृक्ष थे–

तिलकाशोकपुंनागबकुलोद्दालकाशिनीम्॥ (3/75/16)
रम्योपवनसम्बाधां पद्मसम्पीडितोदकाम्।
स्फटिकोपमतोयां तां श्लक्ष्णवालुकसंततताम्॥ (3/75/17)
मत्स्यकच्छपसम्बाधां तीरस्थद्रुमशोभिताम्।
सखीभिरव संयुक्तां लताभिरनुवेष्ठिताम्॥ (3/75/18)
किंनरोरगगन्धर्वयक्षराक्षससेविताम्।
नानाद्रुमलताकीर्णा शीतवारिनिधिं शुभाम्॥ (3/75/19)

उसके तट पर तिलक, अशोक, नागकेसर, बकुल तथा लिसोड़े के वृक्ष उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। भाँति-भाँति के रमणीय उपवनों से वह घिरी हुई थी। उसका जल कमल पुष्पों से आच्छादित था और स्फटिक मणि के समान स्वच्छ दिखाई देता था। जल के नीचे स्वच्छ बालुका फैली हुई थी। मत्स्य और कच्छप उसमें भरे हुए थे। तटवर्ती वृक्ष उसकी शोभा बढ़ाते थे। सब ओर लताओं द्वारा आवेष्टित होने के कारण वह सखियों से संयुक्त सी प्रतीत होती थी। किन्नर, नाग, गन्धर्व, यक्ष और राक्षस उसका सेवन करते थे। भाँति-भाँति के वृक्ष और लताओं से व्याप्त हुई पम्पा शीतल जल की सुन्दर निधि प्रतीत होती थी।

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

श्रीराम वसन्त ऋतु का वर्णन करते हुए लक्ष्मण से कहते हैं–

विक्षिप्तां पवनेनैतामसौ तिलकमञ्जरीम्।
षट्पदः सहसाभ्येति मदोद्धूतामिव प्रियाम्॥ (4/1/58)

वायु के द्वारा हिलायी जाती हुई उस तिलक वृक्ष की मंजरी पर भ्रमर सहसा जा बैठा है। मानो कोई प्रेमी काममद से कम्पित हुई प्रेयसी से मिल रहा हो।

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलस्तथा।
चम्पकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः॥ (4/1/78)

चिरिबिल्व (चिलबिल), महुआ, बेंत, मौलसिरी, चम्पा, तिलक और नागकेसर भी खिले हुए दिखाई देते हैं।

तुंगभद्रा नदी की शोभा का वर्णन करते हुए तिलक का उल्लेख आया है–

चन्दनैस्तिलकैः सालैस्तमालैरतिमुक्तकैः।
पद्मकैः सरलैश्चैव अशोकैश्चैव शोभिताम्॥ (4/27/17)

चन्दन, तिलक, साल, तमाल, अतिमुक्तक, पद्मक, सरल और अशोक आदि नाना प्रकार के वृक्षों से उस नदी की कैसी शोभा हो रही है?

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में तिलक के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

13. करञ्ज (नक्तमाल) (Indian Beech, Smooth leaved Pongamia)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए नक्तमाल एवं करञ्ज शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में करञ्ज, नक्तमाल या उदकीर्य तथा हिन्दी में करञ्ज, किरमाल या पापर कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Pongamia pinnata' है। यह लगभग पूरे देश में पाया जाता है। इसे सड़कों के किनारे, बगीचों में लगाया जाता है। यह नदी तथा समुद्री किनारों पर बहुत पाया जाता है। इसका वृक्ष सदा हरा-भरा रहता है। इसकी शाखाएँ लटकी होती हैं। इसके पत्ते 8 से 14 इंच तक लम्बे होते हैं। इसके फूल गुलाबी तथा आसमानी छाया लिए श्वेत गुच्छों में होते हैं। इसकी फलियाँ चिकनी, चिपटी, कठोर, एक बीज युक्त एवं सेम जैसी होती हैं। इसके बीजों का तेल जलाने के काम आता है।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में करञ्ज के वृक्ष थे—

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्चना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार—ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

सुमनोभिश्चितास्तत्र तिलका नक्तमालकाः॥ (3/73/21)
उत्पलानि च फुल्लानि पङ्कजानि च राघव।

रघुनन्दन! वहाँ फूलों से भरे हुए तिलक और नक्तमाल के वृक्ष शोभा पाते हैं और जल के भीतर उत्पल और कमल फूले दिखाई देते हैं।

पम्पा सरोवर के तट पर करञ्ज के वृक्ष थे—

केतकोद्दालकाश्चैव शिरीशाः शिशपाः धवाः॥ (4/1/81)
शाल्मल्यः किंशुकाश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा।
तिनिशा नक्तमालाश्च चन्दनाः स्यन्दनास्तथा॥ (4/1/82)
हिन्तालास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः।

केतक, उद्दालक, शिरीश, शीशम, धव, सेमल, पलाश, लाल कुबरक, तिनिश, नक्तमाल, चन्दन, स्यन्दन, हिन्ताल, तिलक तथा नागकेसर के वृक्ष भी फूलों से भरे दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में करञ्ज के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

14. नील, अशोक, नीलाशोक

वाल्मीकि रामायण की गीताप्रेस की टीका में नीलाशोक का अर्थ नील और अशोक किया गया है। नील की खेती पहले नील के लिए की जाती थी, पर अब इसे कम उगाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Indigofera tinctoria' है। इसकी पौध 4 से 6 फीट तक ऊँची होती है। इसकी शाखाएँ पतली, दुर्बल, कोणदार एवं फैली होती हैं। इसके पत्ते कालापन लिए हरे रंग के होते हैं। इसके पौधे से 50 प्रतिशत तक नील प्राप्त किया जाता है। किन्तु नील 4 से 6 फीट ऊँचाई प्राप्त करने वाला एक पौधा है जिसका उल्लेख विशाल वृक्ष प्रजातियों के साथ किया जाना यह प्रदर्शित करता है कि यहाँ नील एवं अशोक अलग-अलग लिया जाना तर्कसंगत नहीं है। Polyalthia longifolia अशोक की एक प्रजाति है एवं इसके नीलेपन के कारण सम्भवतः इसे ही नीलाशोक माना गया है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि वाल्मीकि रामायण में नील और अशोक एक साथ ही आया है। अतः यह अशोक की ही प्रजाति है।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में नीलाशोक के वृक्ष थे–

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार–ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पम्पा तट पर नीलाशोक के वृक्ष थे–

पद्मकाश्चैव शोभन्ते नीलाशोकाश्च पुष्पिताः।
लोध्राश्च गिरिपृष्ठेषु सिंहकेसरपिञ्जराः॥ (4/1/79)

पर्वत के पृष्ठ भागों पर कमल और खिले हुए नील, अशोक भी शोभा पाते हैं। वहीं सिंह के अयाल की भाँति पिङ्गल वर्णवाले लोध्र भी सुशोभित हो रहे हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में अशोक की इस प्रजाति के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

15. बिजौरा (Citron)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए बीजपूरक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसके वृक्ष लगभग 10 फीट तक ऊँचे होते हैं तथा वाटिकाओं में लगाए जाते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Citrus medica'

है। इसकी शाखाएँ मोटी, छोटी, कँटीली और इधर-उधर फैली होती हैं। इसके पत्ते नीबू के आकार के किन्तु उससे बड़े होते हैं। इसमें सफ़ेद फूल आते हैं। इसके फल लम्बाई युक्त गोल, 4 से 6 इंच व्यास वाले तथा नोकदार से होते हैं। इसका छिलका मोटा, खुरदरा एवं पकने पर पीला होता है।

पम्पा सरोवर के तट पर बिजौरा के वृक्ष थे—

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः ॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः ॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः ॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

किष्किन्धा क्षेत्र में बिजौरा के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

16. कदम्ब (नीप) (Cadamba Tree)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में कदम्ब के वृक्ष थे—

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः ॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः ॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात् ॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार—ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

प्रस्रवण गिरि पर कदम्ब के वृक्ष थे—

मालतीकुन्दगुल्मैश्च सिन्दुवारैः शिरीषकैः।
कदम्बार्जुनसर्जैश्च पुष्पितैरूपशोभितम् ॥ (4/27/10)

मालती और कुन्द की झाड़ियाँ, सिन्दुवार, शिरीष, कदम्ब, अर्जुन और सर्ज के फूले हुए वृक्ष इस स्थान की शोभा बढ़ा रहे हैं।

तुंगभद्रा के तट पर कदम्ब के वृक्ष थे–

वानीरैस्तिमिदैश्चैव बकुलैः केतकैरपि।
हिन्तालैस्तिनिशैर्नीपैर्वेतसैः कृतमालकैः ॥ (4/27/18)
तीरजैः शोभिता भाति नानारूपैस्ततस्ततः।
वसनाभरणोपेता प्रमदेवाभ्यलंकृता ॥ (4/27/19)

जलबेंत, तिमिद, बकुल, केतक, हिन्ताल, तिनिश, नीप, स्थलबेंत, कृतमाल (अमलतास) आदि भाँति-भाँति के तटवर्ती वृक्षों से जहाँ-तहाँ सुशोभित हुई यह नदी वस्त्राभूषणों से विभूषित शृंगारसज्जित युवती स्त्री के समान जान पड़ती है।

माल्यवान पर्वत पर कदम्ब के वृक्ष थे। श्रीराम ऋतुवर्णन करते हुए कई बार कदम्ब का उल्लेख करते हैं–

व्यामिश्रितं सर्जकदम्बपुष्पै–
र्नव जलं पर्वतधातुताम्रम्।
मयूरकेकाभिरनुप्रयातं
शैलापगाः शीघ्रतरं वहन्ति ॥ (4/28/18)

इस समय पहाड़ी नदियाँ वर्षा के नूतन जल को बड़े वेग से बहा रही हैं। वह जल सर्ज और कदम्ब के फूलों से मिश्रित है, पर्वत के गेरु आदि धातुओं से लाल रंग का हो गया है तथा मयूरों की केकाध्वनि उस जल के कलकलनाद का अनुसरण कर रही है।

जाता वनान्ताः शिखिसुप्रनृत्ता
जाताः कदम्बाः सकदम्बशाखाः।
जाता वृषा गोषु समानकामा
जाता मही सस्यवनाभिरामा ॥ (4/28/26)

वन प्रान्त मोरों के सुन्दर नृत्य से सुशोभित हो गये हैं। कदम्ब वृक्ष फूलों और शाखाओं से सम्पन्न हो गये हैं। साँड़ गौओं के प्रति उन्हीं के समान कामभाव से आसक्त हैं और पृथ्वी हरी-हरी खेती तथा हरे-भरे वनों से अत्यन्त रमणीय प्रतीत होने लगी है।

धारानिपातैरभिहन्यमानाः
कदम्बशाखासु विलम्बमानाः।
क्षणार्जितं पुष्परसावगाढं
शनैर्मदं षट्चरणास्त्यजन्ति ॥ (4/28/29)

जल की धारा गिरने से आहत होते और कदम्ब की डालियों पर लटकते हुए भ्रमर तत्काल ग्रहण किये पुष्परस से उत्पन्न गाढ़े मद को धीरे-धीरे त्याग रहे हैं।

कदम्बसर्जार्जुनकन्दलाढ्या
वनान्तभूमिर्मधुवारिपूर्णा।
मयूरमत्ताभिरुतप्रनृत्तै–
रापानभूमिप्रतिमा विभाति ॥ (4/28/34)

कदम्ब, सर्ज, अर्जुन और स्थल-कमल से सम्पन्न वन के भीतर भूमि मधु-जल से परिपूर्ण हो मोरों के मदयुक्त कलरवों और नृत्यों से उपलक्षित होकर आपानभूमि (मधुशाला) के समान प्रतीत होती है।

प्रमत्तसंनादितबर्हिणानि
सशक्रगोपाकुलशाद्वलानि।
चरन्ति नीपार्जुनवासितानि
गजाः सुरम्याणि वनान्तराणि ॥ (4/28/41)

जहाँ मतवाले मोर कलनाद कर रहे हैं, जहाँ की हरी-हरी घासें वीरबहूटियों के समुदाय से व्याप्त हो रही हैं तथा जो नीप और अर्जुन-वृक्षों के फूलों की सुगन्ध से सुवासित हैं, उन परम रमणीय वन प्रान्तों में बहुत से हाथी विचरा करते हैं।

नवाम्बुधाराहतकेसराणि
द्रुतं परित्यज्य सरोरुहाणि।
कदम्बपुष्पाणि सकेसराणि
नवानि हृष्टा भ्रमराः पिबन्ति ॥ (4/28/42)

भ्रमरों के समुदाय नूतन जल की धारा से नष्ट हुए केसरवाले कमल-पुष्पों को तुरन्त त्यागकर केसरशोभित नवीन कदम्ब-पुष्पों का रस बड़े हर्ष के साथ पी रहे हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार पम्पा सरोवर के तट पर कदम्ब के वृक्ष थे–

चंपक बकुल कदंब तमाला।
पाटल पनस परास रसाला ॥ (3/40)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में कदम्ब के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

17. चन्दन (Sandalwood)

पम्पा सरोवर पर चन्दन के वृक्ष थे–

स एव सुखसंस्पर्शो वाति चन्दनशीतलः।
गन्धमभ्यवहन् पुण्यं श्रमापनयनोश्चनिलः ॥ (4/1/17)

मलयचन्दन का स्पर्श करके बहने वाली यह शीतल वायु शरीर से छू जाने पर कितनी सुखद जान पड़ती है। यह थकावट दूर करती हुई बह रही है और सर्वत्र पवित्र सुगन्ध फैला रही है।

केतकोद्दालकाश्चैव शिरीशाः शिशपाः धवाः ॥ (4/1/81)
शाल्मल्यः किंशुकाश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा।
तिनिशा नक्तमालाश्च चन्दनाः स्यन्दनास्तथा ॥ (4/1/82)
हिन्तालास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः।

केतक, उद्दालक, शिरीश, शीशम, धव, सेमल, पलाश, लाल कुबरक, तिनिश, नक्तमाल, चन्दन, स्यन्दन, हिन्ताल, तिलक तथा नागकेसर के वृक्ष भी फूलों से भरे दिखाई देते हैं।

मलय पर्वत पर चन्दन के वृक्ष थे जिसमें से हनुमान जी ने एक डाली लक्ष्मण को बैठने के लिए दी–

लक्ष्मणायाथ सॉष्टो हनुमान् मारुतात्मजः ॥ (4/5/19)
शाखां चन्दनवृक्षस्य ददौ परमपुष्पिताम्।

तदनन्तर पवनपुत्र हनुमान ने अत्यन्त प्रसन्न हो चन्दन-वृक्ष की एक डाली, जिसमें बहुत-से फूल लगे हुए थे, तोड़कर लक्ष्मण को बैठने के लिए दी।

प्रस्रवण गिरि पर चन्दन के वृक्ष थे—

चन्दनैस्तिलकैः सालैस्तमालैरतिमुक्तकैः।
पद्मकैः सरलैश्चैव अशोकैश्चैव शोभिताम्॥ (4/27/17)

चन्दन, तिलक, साल, तमाल, अतिमुक्तक, पद्मक, सरल और अशोक आदि नाना प्रकार के वृक्षों से उस नदी की कैसी शोभा हो रही है?

पश्य चन्दनवृक्षाणां पङ्क्तीः सुरुचिरा इव।
ककुभानां च दृश्यन्ते मनसैवोदिताः समम्॥ (4/27/24)

वह देखो, अर्जुन और चन्दन वृक्षों की पंक्तियाँ कितनी सुन्दर दिखाई देती हैं। मालूम होता है कि ये मन के संकल्प के साथ ही प्रकट हो गयी हैं।

इस पूरे क्षेत्र में चन्दन के वृक्ष वाल्मीकि काल में थे एवं आज भी हैं। चन्दन के लिए कर्नाटक पूरे देश में जाना जाता है। इस क्षेत्र में चन्दन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

18. भिलावा (The Marking-nut tree)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में भिलावा के वृक्ष थे—

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार—ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में भिलावा के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

19. अशोक (Mast tree)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में अशोक के वृक्ष थे—

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)

धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः ॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात् ॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार—ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

पम्पा सरोवर के तट पर अशोक के वृक्ष थे—

तिलकाशोकपुंनागबकुलोद्दालकाशिनीम् ॥ (3/75/16)
रम्योपवनसम्बाधां पद्मसम्पीडितोदकाम्।
स्फटिकोपमतोयां तां श्लक्ष्णवालुकसंततताम् ॥ (3/75/17)
मत्स्यकच्छपसम्बाधां तीरस्थद्रुमशोभिताम्।
सखीभिरव संयुक्तां लताभिरनुवेष्ठिताम् ॥ (3/75/18)
किंनरोरगगन्धर्वयक्षराक्षससेविताम्।
नानाद्रुमलताकीर्णा शीतवारिनिधिं शुभाम् ॥ (3/75/19)

उसके तट पर तिलक, अशोक, नागकेसर, बकुल तथा लिसोड़े के वृक्ष उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। भाँति-भाँति के रमणीय उपवनों से वह घिरी हुई थी। उसका जल कमल पुष्पों से आच्छादित था और स्फटिक मणि के समान स्वच्छ दिखाई देता था। जल के नीचे स्वच्छ बालुका फैली हुई थी। मत्स्य और कच्छप उसमें भरे हुए थे। तटवर्ती वृक्ष उसकी शोभा बढ़ाते थे। सब ओर लताओं द्वारा आवेष्टित होने के कारण वह सखियों से संयुक्त-सी प्रतीत होती थी। किन्नर, नाग, गन्धर्व, यक्ष और राक्षस उसका सेवन करते थे। भाँति-भाँति के वृक्ष और लताओं से व्याप्त हुई पम्पा शीतल जल की सुन्दर निधि प्रतीत होती थी।

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः ॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः ॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातत्रिपुष्पितपादपः ॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

श्रीराम पम्पा सरोवर की सुन्दरता उल्लेख करते हुए लक्ष्मण से कहते हैं—

अशोकस्तबकाङ्गारः षट्पदस्वननिःस्वनः ॥ (4/1/29)
मां हि पल्लवताम्रार्चिर्वसन्ताग्निः प्रधक्ष्यति।

जान पड़ता है, यह वसन्तरूपी आग मुझे जलाकर भस्म कर देगी। अशोक पुष्प के लाल-लाल गुच्छे ही इस अग्नि के औजार हैं, नूतन पल्लव ही इसकी लाल-लाल लपटें हैं तथा भ्रमरों का गुञ्जारव ही इस जलती आग का 'चट-चट' शब्द है।

श्रीराम पम्पा सरोवर में अपनी व्यथा का उल्लेख करते हुए लक्ष्मण से कहते हैं–

कामिनामयमत्यन्तमशोकः शोकवर्धनः।
स्तबकैः पवनोत्क्षिप्तैस्तर्जयन्निव मां स्थितः ॥ (4/1/59)

यह अशोक प्रियाविरही कामी पुरुषों के लिए अत्यन्त शोक बढ़ाने वाला है। यह वायु के झोंकों से कम्पित हुए पुष्पगुच्छों द्वारा मुझे डाँट बताता हुआ-सा खड़ा है।

बाली के वध का वर्णन पुष्पित अशोक वृक्ष से किया गया है–

अथोक्षितः शोणिततोयविस्रवैः
सुपुष्पिताशोक इवानिलोद्धतः।
विचेतनो वासवसूनुराहवे
प्रभ्रंशितेन्द्रध्वजवत् क्षितिं गतः ॥ (4/16/39)

इन्द्रकुमार बाली के शरीर से पानी के समान रक्त की धारा बहने लगी। वह उससे नहा गया और अचेत हो वायु के उखाड़े हुए पुष्पित अशोक वृक्ष एवं आकाश से नीचे गिरे हुए इन्द्रध्वज के समान समरांगण में पृथ्वी पर गिर पड़ा।

प्रस्रवण पर्वत पर अशोक के वृक्ष थे–

चन्दनैस्तिलकैः सालैस्तमालैरतिमुक्तकैः।
पद्मकैः सरलैश्चैव अशोकैश्चैव शोभिताम् ॥ (4/27/17)

चन्दन, तिलक, साल, तमाल, अतिमुक्तक, पद्मक, सरल और अशोक आदि नाना प्रकार के वृक्षों से उस नदी की कैसी शोभा हो रही है?

पूरे किष्किन्धा क्षेत्र में पहले अशोक के वृक्ष थे। इस क्षेत्र में शोभाकारी वृक्ष के रूप में अशोक को लगाया जाना चाहिए।

20. रक्तचन्दन (Red Sandal-Wood)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में लाल चन्दन के वृक्ष थे–

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः ॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः ॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात् ॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार—ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

इस पूरे क्षेत्र में चन्दन के वृक्ष वाल्मीकि काल में थे एवं आज भी हैं। चन्दन के लिए कर्नाटक पूरे देश में जाना जाता है। इस क्षेत्र में चन्दन के साथ लाल चन्दन को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

21. मन्दार (Indian Coral Tree)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में मन्दार के वृक्ष थे—

जम्बूप्रियालपनसा न्यग्रोधप्लक्षतिन्दुकाः।
अश्वत्थाः कर्णिकाराश्च चूताश्चान्ये च पादपाः॥ (3/73/3)
धन्वना नागवृक्षाश्च तिलका नक्तमालकाः।
नीलाशोकाः कदम्बाश्च करवीराश्च पुष्पिताः॥ (3/73/4)
अग्निमुख्या अशोकाश्च सुरक्ताः पारिभद्रकाः।
तानारुह्याथवा भूमौ पातयित्वा च तान् बलात्॥ (3/73/5)
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयित्वा गमिष्यथः।

जामुन, प्रियाल (चिरौंजी), कटहल, बड़, पाकड़, तेन्दू, पीपल, कनेर, आम तथा अन्य वृक्ष धव, नागकेसर, तिलक, नक्तमाल, नील, अशोक, कदम्ब, खिले हुए करवीर, भिलावा, अशोक, लाल चन्दन तथा मन्दार—ये वृक्ष मार्ग में पड़ेंगे। आप दोनों भाई इनकी डालियों को बलपूर्वक भूमि पर झुकाकर अथवा इन वृक्षों पर चढ़कर इनके अमृत तुल्य मधुर फलों का आहार करते हुए यात्रा कीजिएगा।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्रस्रवण गिरि पर अर्क या मदार के वृक्ष का उल्लेख किया है—

अर्क जवास पात बिनु भयऊ। (4/14)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में मन्दार के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

22. बकुल (मौलसिरी) (Elengi Tree)

पम्पा सरोवर के तट पर मौलश्री के वृक्ष थे—

तिलकाशोकपुंनागबकुलोद्दालकाशिनीम्॥ (3/75/16)
रम्योपवनसम्बाधां पद्मसम्पीडितोदकाम्।
स्फटिकोपमतोयां तां श्लक्ष्णवालुकसंततताम्॥ (3/75/17)
मत्स्यकच्छपसम्बाधां तीरस्थद्रुमशोभिताम्।
सखीभिरव संयुक्तां लताभिरनुवेष्ठिताम्॥ (3/75/18)
किंनरोरगगन्धर्वयक्षराक्षससेविताम्।
नानाद्रुमलताकीर्णा शीतवारिनिधिं शुभाम्॥ (3/75/19)

उसके तट पर तिलक, अशोक, नागकेसर, बकुल तथा लिसोड़े के वृक्ष उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। भाँति-भाँति के रमणीय उपवनों से वह घिरी हुई थी। उसका जल कमल पुष्पों से आच्छादित था और स्फटिक मणि के समान स्वच्छ दिखाई देता था। जल के नीचे स्वच्छ बालुका फैली हुई थी। मत्स्य और कच्छप उसमें भरे हुए थे। तटवर्ती वृक्ष उसकी शोभा बढ़ाते थे। सब ओर लताओं द्वारा आवेष्टित होने के कारण वह सखियों से संयुक्त सी प्रतीत होती थी। किन्नर, नाग, गन्धर्व, यक्ष और राक्षस उसका सेवन करते थे। भाँति-भाँति के वृक्ष और लताओं से व्याप्त हुई पम्पा शीतल जल की सुन्दर निधि प्रतीत होती थी।

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलस्तथा।
चम्पकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/78)

चिरिबिल्व (चिलबिल), महुआ, बेंत, मौलसिरी, चम्पा, तिलक और नागकेसर भी खिले हुए दिखाई देते हैं।

प्रस्रवण गिरि पर मौलश्री के वृक्ष थे–

वानीरैस्तिमिदैश्चैव बकुलैः केतकैरपि।
हिन्तालैस्तिनिशैर्नीपैर्वेतसैः कृतमालकैः ॥ (4/27/18)
तीरजैः शोभिता भाति नानारूपैस्ततस्ततः।
वसनाभरणोपेता प्रमदेवाभ्यलंकृता ॥ (4/27/19)

जलबेंत, तिमिद, बकुल, केतक, हिन्ताल, तिनिश, नीप, स्थलबेंत, कृतमाल (अमलतास) आदि भाँति-भाँति के तटवर्ती वृक्षों से जहाँ-तहाँ सुशोभित हुई यह नदी वस्त्रभूषणों से विभूषित शृंगारसज्जित युवती स्त्री के समान जान पड़ती है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार पम्पा सरोवर के तट पर बकुल (मौलश्री) के वृक्ष थे–

चंपक बकुल कदंब तमाला।
पाटल पनस परास रसाला ॥ (3/40)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में शोभाकार वृक्ष के रूप में मौलश्री के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

23. उद्दाल, लिसोड़ा (बहुवार) (Sebestan)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए उद्दालक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Cordia dichotoma' है। यह देश के मध्य भाग, पश्चिमी भाग एवं हिमालय के उस पर्वतीय क्षेत्रों में 1500 मीटर ऊँचाई तक पायी जाती है। इसकी पत्तियाँ छूने में चमड़े जैसी एवं किनारे आरी के समान कटे होते हैं। यह मध्यम आकार का वृक्ष है। शीतकाल में इसका पतझड़ होता है एवं मार्च-अप्रैल में पत्तियाँ आने लगती हैं। इसके फूल मार्च-अप्रैल में आते हैं तथा पिरैमिड के आकार में सजे होते हैं। फल जून से अगस्त तक होता है। यह एक उत्तम छायादार वृक्ष है। इसका छत्र बहुत घना एवं छायादार होता है। इसके फल का उपयोग सब्ज़ी और अचार में किया जाता है।

इसकी एक अन्य प्रजाति पायी जाती है, जिसका वानस्पतिक नाम 'Cordia myxa' है। यह देश के सभी भागों में लगाया जाता है। इसका वृक्ष 40 से 50 फीट तक ऊँचा होता है। मार्च-अप्रैल में

इसमें सफ़ेद फूल आते हैं। इसकी डालियाँ टेढ़ी-मेढ़ी तथा पत्ते 1 से 4-5 इंच के घेरे में गोलाकार होते हैं। इसके फल पीलापन लिए भूरे तथा पकने पर गुलाबी या कुछ काले हो जाते हैं। इनके फलों को खाया जाता है। इसकी एक अन्य प्रजाति लाल लसोढ़ा पायी जाती है, जिसका अंग्रेज़ी नाम Geiger Tree एवं वानस्पतिक नाम 'Cordia sebestena' है।

पम्पा सरोवर के तट पर लसोढ़ा के वृक्ष थे–

तिलकाशोकपुंनागबकुलोद्दालकाशिनीम् ॥ (3/75/16)
रम्योपवनसम्बाधां पद्मसम्पीडितोदकाम्।
स्फटिकोपमतोयां तां श्लक्ष्णवालुकसंततताम् ॥ (3/75/17)
मत्स्यकच्छपसम्बाधां तीरस्थद्रुमशोभिताम्।
सखीभिरव संयुक्तां लताभिरनुवेष्ठिताम् ॥ (3/75/18)
किंनरोरगगन्धर्वयक्षराक्षससेविताम्।
नानाद्रुमलताकीर्णा शीतवारिनिधिं शुभाम् ॥ (3/75/19)

उसके तट पर तिलक, अशोक, नागकेसर, बकुल तथा लिसोड़े के वृक्ष उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। भाँति-भाँति के रमणीय उपवनों से वह घिरी हुई थी। उसका जल कमल पुष्पों से आच्छादित था और स्फटिक मणि के समान स्वच्छ दिखाई देता था। जल के नीचे स्वच्छ बालुका फैली हुई थी। मत्स्य और कच्छप उसमें भरे हुए थे। तटवर्ती वृक्ष उसकी शोभा बढ़ाते थे। सब ओर लताओं द्वारा आवेष्टित होने के कारण वह सखियों से संयुक्त सी प्रतीत होती थी। किन्नर, नाग, गन्धर्व, यक्ष और राक्षस उसका सेवन करते थे। भाँति-भाँति के वृक्ष और लताओं से व्याप्त हुई पम्पा शीतल जल की सुन्दर निधि प्रतीत होती थी।

केतकोद्दालकाश्चैव शिरीशाः शिशपाः धवाः ॥ (4/1/81)
शाल्मल्यः किंशुकाश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा।
तिनिशा नक्तमालाश्च चन्दनाः स्यन्दनास्तथा ॥ (4/1/82)
हिन्तालास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः।

केतक, उद्दालक, शिरीश, शीशम, धव, सेमल, पलाश, लाल कुबरक, तिनिश, नक्तमाल, चन्दन, स्यन्दन, हिन्ताल, तिलक तथा नागकेसर के वृक्ष भी फूलों से भरे दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में लसोढ़ा के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

24. नीम (Margosa, Neem tree, Indian Lilac)

पम्पा सरोवर के तट पर नीम के वृक्ष थे–

अङ्कोलाश्च कुरण्टाश्च चूर्णकाः पारिभद्रकाः।
चूताः पाटलयश्चापि कोविदाराश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/80)
मुचुकुन्दार्जुनाश्चैव दृश्यन्ते गिरिसानुषु।

अंकोल, कुरंट, चूर्णक (सेमल), पारिभद्रक (नीम), आम, पाटलि, कोविदार, मुचुकुन्द (नारंग) और अर्जुन नामक वृक्ष भी पर्वत शिखरों पर फूलों से लदे दिखाई देते हैं।

यद्यपि यहाँ पर पारिभद्रक का अर्थ नीम या मन्दार दिया गया है किन्तु विद्वानों के अनुसार पारिभद्रक का आशय नीम से है।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में नीम के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

25. लोध (Symplocos Bark)

ऋष्यमूक पर्वत पर लोध के वृक्ष थे–

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः ॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः ॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः ॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तटपर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में लोध के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

26. मालती या चमेली (Malati)

ऋष्यमूक पर्वत पर मालती के वृक्ष थे–

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः ॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः ॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः ॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

पम्पा के तट पर मालती के वृक्ष थे–

पम्पातीररुहाश्चेमे संसिक्ता मधुगन्धिनः।
मालतीमल्लिकापद्मकरवीराश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/76)

पम्पा के तट पर उत्पन्न हुए ये वृक्ष इसी के जल से अभिषिक्त हो बढ़े हैं और मधुर मकरन्द एवं गन्ध से सम्पन्न हुए हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं—मालती, मल्लिका, पद्म और करवीर। ये सब-के-सब फूलों से सुशोभित हैं।

प्रस्रवण गिरि पर मालती के वृक्ष थे—

मालतीकुन्दगुल्मैश्च सिन्दुवारैः शिरीषकैः।
कदम्बार्जुनसर्जैश्च पुष्पितैरुपशोभितम् ॥ (4/27/10)

मालती और कुन्द की झाड़ियाँ, सिन्दुवार, शिरीष, कदम्ब, अर्जुन और सर्ज के फूले हुए वृक्ष इस स्थान की शोभा बढ़ा रहे हैं।

श्रीराम ऋतु वर्णन करते हुए लक्ष्मण से मालती का उल्लेख करते हैं—

विलीयमानैर्विहगैर्निमीलद्भिश्च पङ्कजैः।
विकसन्त्या च मालत्या गतोऽस्तं ज्ञायते रविः ॥ (4/28/52)

पक्षी अपने घोसलों में छिप रहे हैं, कमल संकुचित हो रहे हैं और मालती खिलने लगी है; इससे जान पड़ता है कि सूर्यदेव अस्त हो गये हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में फूलों के लिए मालती के पौधे लगाया जाना चाहिए।

27. कुन्द (Downy Jasmine)

ऋष्यमूक पर्वत पर कुन्द के वृक्ष थे—

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः ॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः ॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः ॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

पम्पा के तट पर कुन्द की झाड़ियाँ थीं—

केतक्यः सिन्दुवाराश्च वासन्त्यश्च सुपुष्पिताः।
माधव्यो गन्धपूर्णाश्च कुन्दगुल्माश्च सर्वशः ॥ (4/1/77)

केतकी (केवड़े), सिन्दुवार तथा वासन्ती लताएँ भी सुन्दर फूलों से भी हुई हैं! गन्धभरी माधवी लता तथा कुन्द-कुसुमों की झाड़ियाँ सब ओर शोभा पा रही हैं।

प्रस्रवण गिरि पर कुन्द की झाड़ियाँ थीं–

मालतीकुन्दगुल्मैश्च सिन्दुवारैः शिरीषकैः।
कदम्बार्जुनसर्जैश्च पुष्पितैरुपशोभितम् ॥ (4/27/10)

मालती और कुन्द की झाड़ियाँ, सिन्दुवार, शिरीष, कदम्ब, अर्जुन और सर्ज के फूले हुए वृक्ष इस स्थान की शोभा बढ़ा रहे हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में फूलों के लिए कुन्द के पौधे लगाये जाने चाहिए।

28 वञ्जुल, वेतस (बेंत) (Cane)

प्रस्रवण गिरि पर बेंत के वृक्ष थे–

वानीरैस्तिमिदैश्चैव बकुलैः केतकैरपि।
हिन्तालैस्तिनिशैर्नीपैर्वेतसैः कृतमालकैः ॥ (4/27/18)
तीरजैः शोभिता भाति नानारूपैस्ततस्ततः।
वसनाभरणोपेता प्रमदेवाभ्यलंकृता ॥ (4/27/19)

जलबेंत, तिमिद बकुल, केतक, हिन्ताल, तिनिश, नीप, स्थलबेंत, कृतमाल (अमिलतास) आदि भाँति-भाँति के तटवर्ती वृक्षों से जहाँ-तहाँ सुशोभित हुई यह नदी वस्त्रभूषणों से विभूषित शृंगारसज्जित युवती स्त्री के समान जान पड़ती है।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में बेंत के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

29. छितवन, सप्तपर्ण (Devil's Tree, Scholar's Tree)

ऋष्यमूक पर्वत पर छितवन के वृक्ष थे–

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः ॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः ॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः ॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

श्रीराम ऋतु वर्णन करते समय लक्ष्मण से छितवन के फूलों का उल्लेख करते हैं–

सप्तच्छदानां कुसुमोपगन्धी
षट्पादवृन्दैरनुगीयमानः।
मत्तद्विपानां पवनानुसारी
दर्प विनेष्यन्नधिकं विभाति ॥ (4/30/30)

छितवन के फूलों की सुगन्ध के कारण करने वाला शरत्काल स्वभावतः वायु का अनुसरण कर रहा है। भ्रमरों के समूह उसके गुणगान कर रहे हैं। वह मार्ग के जल को सोखता और मतवाले हाथियों के दर्प को बढ़ाता हुआ अधिक शोभा पा रहा है।

असनाः सप्तपर्णाश्च कोविदाराश्च पुष्पिताः।
दृश्यन्ते बन्धुजीवाश्च श्यामाश्च गिरिसानुषु ॥ (4/30/62)

पर्वत के शिखरों पर असन, छितवन, कोविदार, बन्धु-जीव तथा श्याम तमाल खिले दिखाई देते हैं।

सुग्रीव को समझाते हुए हनुमान छितवन के फूल खिलने का उल्लेख करते हैं–

त्वं प्रमत्तो न जानीषे कालं कालविदां वर।
फुल्लसप्तच्छदश्यामा प्रवृत्ता तु शरच्छुभा ॥ (4/32/13)

समय का ज्ञान रखने वालों में श्रेष्ठ कपिराज! आपने सीता की खोज करने के लिए जो समय निश्चित किया था, उसे आप इन दिनों प्रमाद में पड़ जाने के कारण भूल गये हैं। देखिए न, यह सुन्दर शरद्-ऋतु आरम्भ हो गयी है, जो खिले हुए छितवन के फूलों से श्यामवर्ण की प्रतीत होती है।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में छितवन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

30. कतक (निर्मली) (Cleaning Nut Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए कतक शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वृक्ष मध्य एवं दक्षिण भारत में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Strychnos potatorum' है। इसे हिन्दी में निर्मली कहते हैं। इसकी ऊँचाई 40 फीट तक होती है। इसके पत्ते लगभग 2.5 इंच लम्बे, एक इंच चौड़े अण्डाकार होते हैं। इसके फूल सफ़ेद रंग के तथा सुगन्धित होते हैं। इसके फल गोल होते हैं तथा पकने पर काले रंग के हो जाते हैं।

ऋष्यमूक पर्वत पर कतक के वृक्ष थे–

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः ॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः ॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः ॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर

विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में कतक के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

31. मल्लिका (बेला) (Arabian Jasmine)

पम्पा के तट पर बेला के पौधे थे–

पम्पातीररुहाश्चेमे संसिक्ता मधुगन्धिनः।
मालतीमल्लिकापद्मकरवीराश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/76)

पम्पा के तट पर उत्पन्न हुए ये वृक्ष इसी के जल से अभिषिक्त हो बढ़े हैं और मधुर मकरन्द एवं गन्ध से सम्पन्न हुए हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं–मालती, मल्लिका, पद्म और करवीर। ये सब-के-सब फूलों से सुशोभित हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में आश्रम या मन्दिर परिसर में फूलों के लिए बेला को लगाया जाना चाहिए।

32. पलाश (टेसू) (Flame of the forest)

श्रीराम ऋतु वर्णन करते समय लक्ष्मण से पलाश के फूलों का उल्लेख करते हैं–

गिरिप्रस्थास्तु सौमित्रे सर्वतः सम्प्रपुष्पितैः।
निष्पत्रैः सर्वतो रम्यैः प्रदीप्ता इव किंशुकैः ॥ (4/1/75)

सुमित्रकुमार! चारों ओर खिले हुए और सब ओर से रमणीय प्रतीत होने वाले पत्रहीन पलाश वृक्षों से उपलक्षित इस पर्वत के पृष्ठ भाग आग में जलते हुए-से जान पड़ते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार पम्पा सरोवर के तट पर परास (पलाश) के वृक्ष थे–

चंपक बकुल कदंब तमाला।
पाटल पनस परास रसाला ॥ (3/40)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में पलाश के वृक्ष को लगाया जाना चाहिए।

33. केतक (केवड़ा) (Screw Pine)

पम्पा के तट पर केवड़े के पौधे थे–

केतक्यः सिन्दुवाराश्च वासन्त्यश्च सुपुष्पिताः।
माधव्यो गन्धपूर्णाश्च कुन्दगुल्माश्च सर्वशः ॥ (4/1/77)

केतकी (केवड़े), सिन्दुवार तथा वासन्ती लताएँ भी सुन्दर फूलों से भरी हुई हैं! गन्धभरी माधवी लता तथा कुन्द-कुसुमों की झाड़ियाँ सब ओर शोभा पा रही हैं।

तुंगभद्रा के तट पर केवड़े के पौधे थे–

वानीरैस्तिमिदैश्चैव बकुलैः केतकैरपि।
हिन्तालैस्तिनिशैर्नीपैर्वेतसैः कृतमालकैः ॥ (4/27/18)
तीरजैः शोभिता भाति नानारूपैस्ततस्ततः।
वसनाभरणोपेता प्रमदेवाभ्यलंकृता ॥ (4/27/19)

जलबेंत, तिमिद, बकुल, केतक, हिन्ताल, तिनिश, नीप, स्थलबेंत, कृतमाल (अमलतास) आदि भाँति-भाँति के तटवर्ती वृक्षों से जहाँ-तहाँ सुशोभित हुई यह नदी वस्त्रभूषणों से विभूषित शृंगारसज्जित युवती स्त्री के समान जान पड़ती है।

माल्यवान पर्वत पर केवड़े के पौधे थे–

मेघोदरविनिर्मुक्ता कर्पूरदलशीतलाः।
शक्यमञ्जलिभिः पातुं वाताः केतकगन्धिनः ॥ (4/28/8)

मेघ के उदर से निकली, कपूर की डली के समान ठंडी तथा केवड़े की सुगन्ध से भरी हुई इस बरसाती वायु को मानो अञ्जलियों में भरकर पीया जा सकता है।

एष फुल्लार्जनः शैलः केतकैरभिवासितः।
सुग्रीव इव शान्तारिर्धाराभिरभिषिच्यते ॥ (4/28/9)

यह पर्वत, जिस पर अर्जुन के वृक्ष खिले हुए हैं तथा जो केवड़ों से सुवासित हो रहा है, शान्त हुए शत्रु वाले सुग्रीव की भाँति जल की धाराओं से अभिषिक्त हो रहा है।

प्रहर्षिताः केतकिपुष्पगन्ध–
माघ्राय मत्ता वननिर्झरेषु।
प्रपातशब्दाकुलिता गजेन्द्राः
सार्धं मयूरैः समदा नदन्ति ॥ (4/28/28)

वन के झरनों के समीप क्रीड़ा से उल्लसित हुए मदवर्षी गजराज केवड़ें के फूल की सुगन्ध को सूँघकर मतवाले हो उठे हैं और झरने के जल के गिरने से जो शब्द होता है, उससे आकुल हो ये मोरों के बोलने के साथ-साथ स्वयं भी गर्जना करते हैं।

ततः केतकखण्डेषु तमालगहनेषु च ॥ (4/42/11)
कपयो विहरिष्यन्ति नारिकेलवनेषु च।
तत्र सीतां च मार्गध्वं निलयं रावणस्य च ॥ (4/42/12)

समुद्र के तट पर केवड़ों के कुञ्जों में, तमाल के काननों में तथा नारियल के वनों में तुम्हारे सैनिक वानर भली-भाँति विचरण करेंगे। वहाँ तुम लोग सीता को खोजना और रावण के निवास-स्थान का पता लगाना।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में आश्रम या मन्दिर परिसर में फूलों के लिए केवड़ा को लगाया जाना चाहिए।

34. सिन्दुवार (Indian Privet)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए सिन्दुवार शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे सम्भालू, सन्दुआर या मेउड़ी आदि भी कहा जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Vitex negundo' है। इसके वृक्ष लगभग

पूरे देश में पाये जाते हैं। इसकी छाल चिकनी, पतली तथा धूसरवर्ण की होती है। इसके पत्ते 3 से 5 पत्रकों से युक्त होते हैं। इसके पुष्प 2 से 8 इंच लम्बी मंजरियों में निकले रहते हैं जो श्वेत या हलके नीले या बैगनी रंग के होते हैं। इसें फल छोटे, गोल तथा पकने पर काले रंग के होते हैं।

पम्पा के तट पर सिन्दुवार के पौधे थे–

केतक्यः सिन्दुवाराश्च वासन्त्यश्च सुपुष्पिताः।
माधव्यो गन्धपूर्णाश्च कुन्दगुल्माश्च सर्वशः ॥ (4/1/77)

केतकी (केवड़े), सिन्दुवार तथा वासन्ती लताएँ भी सुन्दर फूलों से भरी हुई हैं! गन्धभरी माधवी लता तथा कुन्द-कुसुमों की झाड़ियाँ सब ओर शोभा पा रही हैं।

प्रस्रवण गिरि पर सिन्दुवार के वृक्ष थे–

मालतीकुन्दगुल्मैश्च सिन्दुवारैः शिरीषकैः।
कदम्बार्जुनसर्जैश्च पुष्पितैरूपशोभितम् ॥ (4/27/10)

मालती और कुन्द की झाड़ियाँ, सिन्दुवार, शिरीष, कदम्ब, अर्जुन और सर्ज के फूले हुए वृक्ष इस स्थान की शोभा बढ़ा रहे हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में सिन्दुवार लगाया जाना चाहिए।

35. वासन्ती, चमेली

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए वासन्ती शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे नेवारी, नेपाली या कहीं-कहीं पर चमेली भी कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Jasminum arborescens' है। यह अपने सुन्दर फूलों के लिए बगीचों में लगाया जाता है। यह एक झाड़ीदार वृक्ष होता है। इसके फूल अत्यन्त सुगन्धित, सफ़ेद रंग के तथा 2.5 से 3 से.मी. तक व्यास के होते हैं।

पम्पा के तट पर चमेली के पौधे थे–

केतक्यः सिन्दुवाराश्च वासन्त्यश्च सुपुष्पिताः।
माधव्यो गन्धपूर्णाश्च कुन्दगुल्माश्च सर्वशः ॥ (4/1/77)

केतकी (केवड़े), सिन्दुवार तथा वासन्ती लताएँ भी सुन्दर फूलों से भरी हुई हैं! गन्धभरी माधवी लता तथा कुन्द-कुसुमों की झाड़ियाँ सब ओर शोभा पा रही हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में आश्रम या मन्दिर परिसर में फूलों के लिए चमेली को लगाया जाना चाहिए।

36. चिलबिल (Indian Elm)

पम्पा के तट पर चिलबिल के वृक्ष थे–

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलस्तथा।
चम्पकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/78)

चिरिबिल्व (चिलबिल), महुआ, बेंत, मौलसिरी, चम्पा, तिलक और नागकेसर भी खिले हुए दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में चिलबिल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

37. महुआ (Butter tree)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग के वन क्षेत्र में महुआ के वन थे–

एतदालक्ष्यते वीर मधूकानां महावनम्।
उत्तरेणास्य गन्तव्यं न्यग्रोधमपि गच्छता ॥ (3/13/21)
ततः स्थलमुपारुह्य पर्वतस्याविदूरतः।
ख्यातः पञ्चवटीत्येव नित्यपुष्पितकाननः ॥ (3/13/22)

वीर! यह जो महुओं का विशाल वन दिखाई देता है, इसके उत्तर से होकर जाना चाहिए। उस मार्ग से जाते हुए आपको एक बरगद का वृक्ष मिलेगा। उससे आगे कुछ दूर तक ऊँचा मैदान है, उसे पार करने के बाद एक पर्वत दिखाई देगा। उस पर्वत से थोड़ी ही दूर पर पञ्चवटी नाम से प्रसिद्ध सुन्दर वन है, जो सदा फूलों से सुशोभित रहता है।

पम्पा के तट पर महुआ के वृक्ष थे–

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलस्तथा।
चम्पकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/78)

चिरिबिल्व (चिलबिल), महुआ, बेंत, मौलसिरी, चम्पा, तिलक और नागकेसर भी खिले हुए दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में महुआ के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

38. चम्पा (Michelia Champaka)

पम्पा के तट पर चम्पा के वृक्ष थे–

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलस्तथा।
चम्पकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/78)

चिरिबिल्व (चिलबिल), महुआ, बेंत, मौलसिरी, चम्पा, तिलक और नागकेसर भी खिले हुए दिखाई देते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार पम्पा सरोवर के तट पर चम्पा के वृक्ष थे–

चंपक बकुल कदंब तमाला।
पाटल पनस परास रसाला ॥ (3/40)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में फूल हेतु चम्पा के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

39. अंकोल (Sage Leaved Alangium)

पम्पा के तट पर अंकोल के वृक्ष थे–

अङ्कोलाश्च कुरण्टाश्च चूर्णकाः पारिभद्रकाः।
चूताः पाटलयश्चापि कोविदाराश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/80)
मुचुकुन्दार्जुनाश्चैव दृश्यन्ते गिरिसानुषु।

अंकोल, कुरंट, चूर्णक (सेमल), पारिभद्रक (नीम या मदार), आम, पाटलि, कोविदार, मुचुकुन्द (नारङ्ग) और अर्जुन नामक वृक्ष भी पर्वत शिखरों पर फूलों से लदे दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में अंकोल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

40. कुरंट या वज्रदंती (Porcupine Flower)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए कुरण्ट शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में अम्लात, कुरण्टक, अम्लाटक तथा हिन्दी में कटसरैया या वज्रदंती कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Barleria prionitis' है। यह सभी उष्ण क्षेत्रों में पाया जाता है। यह झाड़दार, काँटेदार तथा 0.5 से 1.5 मीटर तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते 3.7 से 10 से.मी. तक लम्बे, कण्टकित अग्र युक्त होते हैं। इसके पौधे कहीं-कहीं बड़े और हरे-भरे परन्तु शुष्क भूमि में छोटे रह जाते हैं। इसमें शीत ऋतु में पीले फूल निकलते हैं। फल द्विकोष्ठीय होते हैं तथा प्रत्येक कोष्ठ में एक बीज होता है।

पम्पा के तट पर वज्रदन्ती के पौधे थे–

अङ्कोलाश्च कुरण्टाश्च चूर्णकाः पारिभद्रकाः।
चूताः पाटलयश्चापि कोविदाराश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/80)
मुचुकुन्दार्जुनाश्चैव दृश्यन्ते गिरिसानुषु।

अंकोल, कुरंट, चूर्णक (सेमल), पारिभद्रक (नीम या मदार), आम, पाटलि, कोविदार, मुचुकुन्द (नारङ्ग) और अर्जुन नामक वृक्ष भी पर्वत शिखरों पर फूलों से लदे दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में मन्दिर या आश्रम परिसर में वज्रदन्ती लगाया जाना चाहिए।

41. सेमल (चूर्णक या शाल्मली) (Silk Cotton Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए शाल्मली एवं चूर्णक कूट शाल्मली शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Bombax malabaricum' है। इसे संस्कृत साहित्य में चूर्णक तथा शाल्मली भी कहा गया है। यह लगभग पूरे देश में पाया जाता है। यह बहुत विशाल वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 25 से 30 मीटर तक होती है। इसकी डालियों पर छोटे-छोटे नुकीले काँटे होते हैं। इसके फूल लाल तथा 2 से 3 इंच तक लम्बे होते हैं। फरवरी से अप्रैल तक इसके चमकीले लाल फूलों की आभा अत्यन्त आकर्षक होती है। इसके फल 5 से 6 इंच लम्बे काष्ठवत एवं हरे होते हैं। फलों के भीतर

रेशम जैसी रूई एवं काले बीज होते हैं। इसकी रूई का प्रयोग तकिया, गद्दे आदि में किया जाता है। सेमल की लकड़ी का उपयोग माचिस उद्योग में किया जाता है।

पम्पा के तट पर सेमल के वृक्ष थे–

अङ्कोलाश्च कुरण्टाश्च चूर्णकाः पारिभद्रकाः।
चूताः पाटलयश्चापि कोविदाराश्च पुष्पिताः॥ (4/1/80)
मुचुकुन्दार्जुनाश्चैव दृश्यन्ते गिरिसानुषु।

अंकोल, कुरंट, चूर्णक (सेमल), पारिभद्रक (नीम या मदार), आम, पाटलि, कोविदार, मुचुकुन्द (नारङ्ग) और अर्जुन नामक वृक्ष भी पर्वत शिखरों पर फूलों से लदे दिखाई देते हैं।

केतकोद्दालकाश्चैव शिरीशाः शिशपाः धवाः॥ (4/1/81)
शाल्मल्यः किंशुकाश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा।
तिनिशा नक्तमालाश्च चन्दनाः स्यन्दनास्तथा॥ (4/1/82)
हिन्तालास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः।

केतक, उद्दालक, शिरीश, शीशम, धव, सेमल, पलाश, लाल कुबरक, तिनिश, नक्तमाल, चन्दन, स्यन्दन, हिन्ताल, तिलक तथा नागकेसर के वृक्ष भी फूलों से भरे दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में सेमल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

42. पाटल (पाड़र) (Messenger of Spring, Palol)

पम्पा के तट पर पाटल के वृक्ष थे–

अङ्कोलाश्च कुरण्टाश्च चूर्णकाः पारिभद्रकाः।
चूताः पाटलयश्चापि कोविदाराश्च पुष्पिताः॥ (4/1/80)
मुचुकुन्दार्जुनाश्चैव दृश्यन्ते गिरिसानुषु।

अंकोल, कुरंट, चूर्णक (सेमल), पारिभद्रक (नीम या मदार), आम, पाटल, कोविदार, मुचुकुन्द (नारङ्ग) और अर्जुन नामक वृक्ष भी पर्वत शिखरों पर फूलों से लदे दिखाई देते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार पम्पा सरोवर के तट पर पाटल के वृक्ष थे–

चंपक बकुल कदंब तमाला।
पाटल पनस परास रसाला॥ (3/40)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में पाटल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

43. कोविदार (कचनार) (Orchid tree)

पम्पा के तट पर कचनार के वृक्ष थे–

अङ्कोलाश्च कुरण्टाश्च चूर्णकाः पारिभद्रकाः।
चूताः पाटलयश्चापि कोविदाराश्च पुष्पिताः॥ (4/1/80)
मुचुकुन्दार्जुनाश्चैव दृश्यन्ते गिरिसानुषु।

अंकोल, कुरंट, चूर्णक (सेमल), पारिभद्रक (नीम या मदार), आम, पाटलि, कोविदार, मुचुकुन्द (नारङ्ग) और अर्जुन नामक वृक्ष भी पर्वत शिखरों पर फूलों से लदे दिखाई देते हैं।

प्रस्रवण गिरि पर कचनार के वृक्ष थे–

असनाः सप्तपर्णाश्च कोविदाराश्च पुष्पिताः।
दृश्यन्ते बन्धुजीवाश्च श्यामाश्च गिरिसानुषु ॥ (4/30/62)

पर्वत के शिखरों पर असन, छितवन, कोविदार, बन्धु-जीव तथा श्याम तमाल खिले दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में शोभाकारी वृक्ष के रूप में कचनार के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

44. मुचकुन्द, कार्निकारा (Karnikara Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए मुचुकुन्द शब्द का प्रयोग किया गया है। यह लगभग पूरे देश में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Pterospermum acerifolium' है। इसका वृक्ष ऊँचा एवं सुन्दर होता है। इसके पत्ते 6 से 15 इंच तक लम्बे होते हैं। इसके पुष्प बड़े, श्वेत तथा सुगन्धित होते हैं। फल लम्बे, गोल एवं कड़े होते हैं।

पम्पा के तट पर मुचुकुन्द के वृक्ष थे–

अङ्कोलाश्च कुरण्टाश्च चूर्णकाः पारिभद्रकाः।
चूताः पाटलयश्चापि कोविदाराश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/80)
मुचुकुन्दार्जुनाश्चैव दृश्यन्ते गिरिसानुषु।

अंकोल, कुरंट, चूर्णक (सेमल), पारिभद्रक (नीम या मदार), आम, पाटलि, कोविदार, मुचकुन्द (नारङ्ग) और अर्जुन नामक वृक्ष भी पर्वत शिखरों पर फूलों से लदे दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में मुचुकुन्द के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

45. अर्जुन (ककुभ) (Arjuna tree)

पम्पा के तट पर अर्जुन के वृक्ष थे–

अङ्कोलाश्च कुरण्टाश्च चूर्णकाः पारिभद्रकाः।
चूताः पाटलयश्चापि कोविदाराश्च पुष्पिताः ॥ (4/1/80)
मुचुकुन्दार्जुनाश्चैव दृश्यन्ते गिरिसानुषु।

अंकोल, कुरंट, चूर्णक (सेमल), पारिभद्रक (नीम या मदार), आम, पाटलि, कोविदार, मुचुकुन्द (नारङ्ग) और अर्जुन नामक वृक्ष भी पर्वत शिखरों पर फूलों से लदे दिखाई देते हैं।

प्रस्रवण गिरि पर अर्जुन के वृक्ष थे–

मालतीकुन्दगुल्मैश्च सिन्दुवारैः शिरीषकैः।
कदम्बार्जुनसर्जैश्च पुष्पितैरूपशोभितम् ॥ (4/27/10)

मालती और कुन्द की झाड़ियाँ, सिन्दुवार, शिरीष, कदम्ब, अर्जुन और सर्ज के फूले हुए वृक्ष इस स्थान की शोभा बढ़ा रहे हैं।

पश्य चन्दनवृक्षाणां पङ्क्तीः सुरुचिरा इव।
ककुभानां च दृश्यन्ते मनसैवोदिताः समम् ॥ (4/27/24)

वह देखो, अर्जुन और चन्दन वृक्षों की पंक्तियाँ कितनी सुन्दर दिखाई देती हैं। मालूम होता है कि ये मन के संकल्प के साथ ही प्रकट हो गयी हैं।

माल्यवान पर्वत पर अर्जुन के वृक्ष थे। श्रीराम ऋतु वर्णन करते समय अनेक बार अर्जुन के वृक्ष का उल्लेख करते हैं–

एष फुल्लार्जुनः शैलः केतकैरभिवासितः।
सुग्रीव इव शान्तारिर्धाराभिरभिषिच्यते ॥ (4/28/9)

यह पर्वत, जिस पर अर्जुन के वृक्ष खिले हुए हैं तथा जो केवड़ों से सुवासित हो रहा है, शान्त हुए शत्रुवाले सुग्रीव की भाँति जल की धाराओं से अभिषिक्त हो रहा है।

कदम्बसर्जार्जुनकन्दलाढ्या
वनान्तभूमिर्मधुवारिपूर्णा।
मयूरमत्ताभिरुतप्रनृत्तै–
रापानभूमिप्रतिमा विभाति ॥ (4/28/34)

कदम्ब, सर्ज, अर्जुन और स्थल-कमल से सम्पन्न वन के भीतर भूमि मधु-जल से परिपूर्ण हो मोरों के मदयुक्त कलरवों और नृत्यों से उपलक्षित होकर आपानभूमि (मधुशाला) के समान प्रतीत होती है।

प्रमत्तसंनादितबर्हिणानि
सशक्रगोपाकुलशाद्वलानि।
चरन्ति नीपार्जुनवासितानि
गजाः सुरम्याणि वनान्तराणि ॥ (4/28/41)

जहाँ मतवाले मोर कलनाद कर रहे हैं, जहाँ की हरी-हरी घासें वीरबहूटियों के समुदाय से व्याप्त हो रही हैं तथा जो नीप और अर्जुन-वृक्षों के फूलों की सुगन्ध से सुवासित हैं, उन परम रमणीय वन प्रान्तों में बहुत से हाथी विचरा करते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में अर्जुन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

46. शिरीष (सीरस) (East Indian Walnut)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए शिरीष शब्द का प्रयोग किया गया है। यह पूरे देश में पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Albizia lebbek' है। यह विशाल वृक्ष है जो लगभग 30 मीटर तक ऊँचाई तथा 1 मीटर तक गोलाई प्राप्त कर लेता है। इसे प्रायः छाया के लिए सड़कों के किनारे लगाया जाता है। अपैल-मई में इसमें फूल आते हैं जो हलका पीलापन एवं हरापन लिए सफ़ेद होते हैं। इसकी फलियाँ लगभग 30 से.मी. तक लम्बी हो जाती हैं। सितम्बर के बाद इसके वृक्ष में फलियाँ लटकती दिखती हैं।

पम्पासरोवर के तट पर सीरस के वृक्ष थे–

केतकोद्दालकाश्चैव शिरीशाः शिशपाः धवाः ॥ (4/1/81)
शाल्मल्यः किंशुकाश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा।

तिनिशा नक्तमालाश्च चन्दनाः स्यन्दनास्तथा ॥ (4/1/82)
हिन्तालास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः।

केतक, उद्दालक, शिरीश, शीशम, धव, सेमल, पलाश, लाल कुबरक, तिनिश, नक्तमाल, चन्दन, स्यन्दन, हिन्ताल, तिलक तथा नागकेसर के वृक्ष भी फूलों से भरे दिखाई देते हैं।

प्रस्रवण गिरि पर शिरीष के वृक्ष थे–

मालतीकुन्दगुल्मैश्च सिन्दुवारैः शिरीषकैः।
कदम्बार्जुनसर्जैश्च पुष्पितैरूपशोभितम् ॥ (4/27/10)

मालती और कुन्द की झाड़ियाँ, सिन्दुवार, शिरीष, कदम्ब, अर्जुन और सर्ज के फूले हुए वृक्ष इस स्थान की शोभा बढ़ा रहे हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में सीरस के वृक्ष लगाया जाना चाहिए।

47. शीशम, शिंशपा (Sissoo)

पम्पासरोवर के तट पर शीशम के वृक्ष थे–

केतकोद्दालकाश्चैव शिरीशाः शिशपाः धवाः ॥ (4/1/81)
शाल्मल्यः किंशुकाश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा।
तिनिशा नक्तमालाश्च चन्दनाः स्यन्दनास्तथा ॥ (4/1/82)
हिन्तालास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः।

केतक, उद्दालक, शिरीश, शीशम, धव, सेमल, पलाश, लाल कुबरक, तिनिश, नक्तमाल, चन्दन, स्यन्दन, हिन्ताल, तिलक तथा नागकेसर के वृक्ष भी फूलों से भरे दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में शीशम के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

48. तिनिश (स्यन्दन)

प्रस्रवण गिरि पर स्यन्दन के वृक्ष थे–

वानीरैस्तिमिदैश्चैव बकुलैः केतकैरपि।
हिन्तालैस्तिनिशैर्नीपैर्वेतसैः कृतमालकैः ॥ (4/27/18)
तीरजैः शोभिता भाति नानारूपैस्ततस्ततः।
वसनाभरणोपेता प्रमदेवाभ्यलंकृता ॥ (4/27/19)

जलबेंत, तिमिद बकुल, केतक, हिन्ताल, तिनिश, नीप, स्थलबेंत, कृतमाल (अमलतास) आदि भाँति-भाँति के तटवर्ती वृक्षों से जहाँ-तहाँ सुशोभित हुई यह नदी वस्त्रभूषणों से विभूषित शृंगारसज्जित युवती स्त्री के समान जान पड़ती है।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में स्यन्दन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

49. हिन्ताल (Mangroove Date Plant)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए हिन्ताल शब्द का प्रयोग किया गया है। यह दलदली भूमि में पाया जाने वाला एक प्रकार का खजूर वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 5 मीटर तक होती है। इसका वानस्पतिक नाम 'Phoenix paludosa' है।

प्रस्रवण गिरि पर हिन्ताल के वृक्ष थे–

वार्नीरैस्तिमिदैश्चैव बकुलैः केतकैरपि।
हिन्तालैस्तिनिशैर्नीपैर्वेतसैः कृतमालकैः ॥ (4/27/18)
तीरजैः शोभिता भाति नानारूपैस्ततस्ततः।
वसनाभरणोपेता प्रमदेवाभ्यलंकृता ॥ (4/27/19)

जलबेंत, तिमिद बकुल, केतक, हिन्ताल, तिनिश, नीप, स्थलबेंत, कृतमाल (अमलतास) आदि भाँति-भाँति के तटवर्ती वृक्षों से जहाँ-तहाँ सुशोभित हुई यह नदी वस्त्रभूषणों से विभूषित शृंगारसज्जित युवती स्त्री के समान जान पड़ती है।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में हिन्ताल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

50. गजपुष्पी

यह एक प्रकार का पुष्प है। गजपुष्पी के बारे में अधिकृत जानकारी उपलब्ध नहीं है।

वाल्मीकि रामायण में इसका उल्लेख निम्नानुसार आता है–

गजपुष्पीमिमां फुल्लामुत्पाट्य शुभलक्षणाम्।
कुरु लक्ष्मण कण्ठेश्चस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ॥ (4/12/39)

(सुग्रीव से ऐसा कहकर श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण से बोले) 'लक्ष्मण! यह उत्तम लक्षणों से युक्त गजपुष्पी लता फूल रही है। इसे उखाड़कर तुम महामना सुग्रीव के गले में पहना दो।'

51. केला (Banana Tree)

किष्किन्धा पुरी में केला के उपवन थे–

एष मेघ इवाकाशे वृक्षषण्डः प्रकाशते।
मेघसंघातविपुलः पर्यन्तकदलीवृतः ॥ (4/13/14)

वानरराज! आकाश में मेघ की भाँति जो यह वृक्षों का समूह प्रकाशित हो रहा है, क्या है? यह इतना विस्तृत है कि मेघों की घटा के समान छा रहा है। इसके किनारे-किनारे केले के वृक्ष लगे हुए हैं, जिनसे वह सारा वृक्ष-समूह घिर गया है।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में आश्रम परिसर में केला के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

52. सर्ज (Dhupa)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए सर्ज शब्द का प्रयोग किया गया है। यह एक प्रकार का साल वृक्ष है जिसे हिन्दी में बड़ा साल कहते हैं। संस्कृत में इसे सर्जक, अजकर्ण आदि कहा जाता है। इसे धूप भी कहा जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Vateria indica' है। पश्चिम एवं दक्षिण भारत में इसके वृक्ष बहुतायत में पाये जाते हैं। इसका वृक्ष बहुत विशाल एवं सुहावना होता है। इसके पत्ते लगभग 10 से.मी. लम्बे तथा 8-9 से.मी. चौड़े होते हैं।

प्रस्रवण गिरि पर सर्ज के वृक्ष थे–

मालतीकुन्दगुल्मैश्चसिन्दुवारैःशिरीषकैः।
कदम्बार्जुनसर्जैश्च पुष्पितैरूपशोभितम्॥ (4/27/10)

मालती और कुन्द की झाड़ियाँ, सिन्दुवार, शिरीष, कदम्ब, अर्जुन और सर्ज के फूले हुए वृक्ष इस स्थान की शोभा बढ़ा रहे हैं।

माल्यवान पर्वत पर सर्ज के वृक्ष थे–

कदम्बसर्जार्जुनकन्दलाढ्या
वनान्तभूमिर्मधुवारिपूर्णा।
मयूरमत्ताभिरुतप्रनृत्तै–
रापानभूमिप्रतिमा विभाति॥ (4/28/34)

कदम्ब, सर्ज, अर्जुन और स्थल-कमल से सम्पन्न वन के भीतर भूमि मधु-जल से परिपूर्ण हो मोरों के मदयुक्त कलरवों और नृत्यों से उपलक्षित होकर आपानभूमि (मधुशाला) के समान प्रतीत होती है।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में सर्ज के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

53. अतिमुक्तक

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए अतिमुक्तक शब्द का प्रयोग किया गया है। संस्कृत में इसे माधवी, वासन्ती, अतिमुक्त, विमुक्त आदि तथा हिन्दी में इसे सामान्यतया माधवी लता कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Hiptage madablota' है। यह मुख्य रूप से पूर्वी एवं दक्षिणी भारत में पायी जाती है। इसकी लता बहुत विस्तार से फैलने वाली होती है तथा निकटवर्ती वृक्ष को शीघ्र ही ढक लेती है। इसके पत्ते अण्डाकार, लगभग 8 से 15 से.मी. तक लम्बे तथा 6-7 से.मी. चौड़े होते हैं। इसके पुष्प श्वेत एवं सुगन्धित होते हैं।

वाल्मीकि रामायण में अतिमुक्तक का प्रयोग लता के लिए न होकर वृक्ष के लिए हुआ है। संस्कृत विद्वानों द्वारा अतिमुक्तक शब्द से दो प्रजातियाँ बताई गयी हैं–सन्दन तथा काला तेन्दू। इन प्रजातियों के सम्बन्ध में विवरण निम्न प्रकार है–

सन्दन

इसका वानस्पतिक नाम 'Ougenia ougensis या Ougenia dalbergioides' है। यह एक महत्त्वपूर्ण चारा एवं प्रकाष्ठ प्रजाति है। यह एक मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 14 मीटर

तक तथा व्यास 40 से 50 से.मी. तक होता है। इसकी पत्तियाँ चिकनी तथा हलकी होती हैं। इसके पुष्प फरवरी से मई तक हलके गुलाबी रंग से सफ़ेद रंग तक के गुच्छों के रूप में निकलते हैं।

इसका तना अकसर तिरछा परन्तु कुछ क्षेत्रों में पेड़ सीधा होता है। इसकी छाल गुलाबी-भूरे रंग से गहरी नीली-सिलेटी रंग की होती है। यह प्रजाति मध्य तथा उत्तरी भारत में तथा दक्षिणी भारत के कुछ क्षेत्रों में पायी जाती है एवं उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश की महत्त्वपूर्ण प्रजाति होती है।

काला तेन्दू

यह वृक्ष मध्य प्रदेश के नम तथा आर्द्रता वाले क्षेत्रों में बहुतायत में पाया जाता है। यह सदाबहार वृक्ष दिखने में बहुत आकर्षक होता है। इसकी पत्तियाँ औसतन 15 से.मी. लम्बी, आयताकार, लगभग 5 से.मी. चौड़ाई में तथा गहरे हरे रंग की होती हैं। नयी पत्तियाँ गुलाबी तथा आकर्षक होती हैं। नर पुष्प 2 से 7 तक समूह में होते हैं। मादा पुष्प एकल तथा नर पुष्पों की अपेक्षा बड़े होते हैं। फल करीब 3 से 4 से.मी. तक तथा पकने पर पीले रंग के होते हैं। इसकी लकड़ी सख्त, मज़बूत तथा फर्नीचर बनाने के काम आती है। इसके बिना पके फलों में टेनिन अत्यधिक मात्रा में पाया जाता है जो टेनिन चमड़ा तथा बाँस की टोकरियों में प्रयोग किया जाता है। इसके फलों का द्रव्य बुक-बाइंडिंग में गोंद के रूप में प्रयोग किया जाता है।

ऋष्यमूक पर्वत पर अतिमुक्तक के वृक्ष थे–

तिलकैर्बीजपूरैश्च वटैः शुक्लद्रुमैस्तथा।
पुष्पितैः करवीरैश्च पुंनागैश्च सुपुष्पितैः ॥ (3/75/23)
मालतीकुन्दगुल्मैश्च भण्डीरैर्निचुलैस्तथा।
अशोकैः सप्तपर्णैश्च कतकैरतिमुक्तकैः ॥ (3/75/24)
अस्यास्तीरे तु पूर्वोक्तः पर्वतो धातुमण्डितः।
ऋष्यमूक इति ख्यातश्चित्रपुष्पितपादपः ॥ (3/75/25)

तिलक, बिजौरा, वट, लोध, खिले हुए करवीर, पुष्पित नागकेसर, मालती, कुन्द, झाड़ी, भंडीर (बरगद), वञ्जुल, अशोक, छितवन, कतक, माधवी लता तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों से सुशोभित हुई पम्पा भाँति-भाँति के वस्त्राभूषणों से सजी हुई युवती के समान जान पड़ती थी। उसी के तट पर विविध धातुओं से मण्डित पूर्वोक्त ऋष्यमूक नाम से विख्यात पर्वत सुशोभित था। उसके ऊपर फूलों से भरे हुए विचित्र वृक्ष शोभा दे रहे थे।

तुंगभद्रा नदी के तट पर अतिमुक्तक के वृक्ष थे।

चन्दनैस्तिलकैः सालैस्तमालैरतिमुक्तकैः।
पद्मकैः सरलैश्चैव अशोकैश्चैव शोभिताम् ॥ (4/27/17)

चन्दन, तिलक, साल, तमाल, अतिमुक्तक, पद्मक, सरल और अशोक आदि नाना प्रकार के वृक्षों से उस नदी की कैसी शोभा हो रही है?

54. सरल या चीड़ (Pine Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए सरल शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Pinus roxburghaii' है। यह हिमालय में कश्मीर, हिमांचल प्रदेश, उत्तराखण्ड से लेकर भूटान तक

450 से 2400 मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है। यह अब मैदानी क्षेत्रों में भी उगाया जाने लगा है। इसकी शाखाएँ चक्करदार, छाल गहरी धूसर तथा खुरदरी होती है। पत्तियाँ तीन-तीन के समूह में 20 से 30 से.मी. लम्बी, बारीक, दाँतेदार तथा हलके हरे रंग की होती हैं। सामान्यतया यह सदाबहार वृक्ष है किन्तु शुष्क परिस्थिति या सूखे में कभी-कभी आंशिक पर्णपाती हो जाता है। इसके नर और मादा फूल अलग-अलग होते हैं। नर फूल जनवरी एवं मादा फूल फरवरी में आते हैं। चीड़ का फल शंकु के आकार का होता है जिसे अंग्रेज़ी में कोन कहते हैं। फूल सितम्बर-अक्टूबर में आते हैं।

चीड़ के वृक्ष के तने से लीसा निकाला जाता है जिससे रोजिन तथा तारपीन का तेल प्राप्त होता है। चीड़ की लकड़ी उत्तम इमारती लकड़ी है। इससे लकड़ी के स्लीपर बनाये जाते हैं। पैकिंग केस, हलके फर्नीचर, बक्से आदि के लिए यह अत्यन्त उपयोगी है। माचिस की डिब्बी बनाने में इसका उपयोग किया जाता है। वृक्ष के कटने के बाद ठूँठ या वृक्ष के घावों से लीसा निकलकर पास की लकड़ी में भर जाता है। यह बहुत शीघ्र आग पकड़ता है। पहाड़ों में मिट्टी के तेल के बदले आग सुलगाने एवं मशाल बनाने में इसका प्रयोग किया जाता है। इसकी लकड़ी से एक प्रकार का कोलतार भी बनाया जाता है।

तुंगभद्रा नदी के तट पर चीड़ के वृक्ष थे–

चन्दनैस्तिलकैः सालैस्तमालैरतिमुक्तकैः।
पद्मकैः सरलैश्चैव अशोकैश्चैव शोभिताम्॥ (4/27/17)

चन्दन, तिलक, साल, तमाल, अतिमुक्तक, पद्मक, सरल और अशोक आदि नाना प्रकार के वृक्षों से उस नदी की कैसी शोभा हो रही है?

यद्यपि प्राकृतिक रूप से चीड़ इस क्षेत्र में नहीं पाया जाता किन्तु विशेष प्रयास करके इसके कृछ वृक्ष इस क्षेत्र में उगाये जा सकते हैं। इस कुल की हाइब्रिड प्रजातियाँ सफलतापूर्वक दक्षिण भारत में उगाई जा रही हैं।

55. अमलतास (Indian Laburnum)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए कृतमाल एवं कर्णिकार शब्द का प्रयोग किया गया है। यद्यपि वाल्मीकि रामायण की गीता प्रेस की टीका में कर्णिकार का अर्थ कनेर लिया गया है किन्तु संस्कृत विद्वानों द्वारा कर्णिकार का अर्थ अमलतास माना गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Cassia fistula' है। यह लगभग पूरे भारत में पाया जाता है। यह मध्यम ऊँचाई का एक प्रमुख शोभाकारी वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 10 मीटर तक होती है। इसकी 25 से 40 से.मी. लम्बी टहनियों पर 4 से 8 जोड़ी पत्तियाँ होती हैं। गर्मी के आगमन के साथ इसमें फूल आने लगते हैं। माह मई-जून की भीषण गर्मी में यह अपनी सुन्दरता बिखेरता रहता है। इसका फल एक गोल लम्बी फली के रूप में होता है जो जून-जुलाई में बनने लगती है। फली दिसम्बर में पकने लगती है तथा मई-जून तक गिरने लगती है। इसके अन्दर की लकड़ी कठोर और मज़बूत होती है। इसका उपयोग खेती के उपकरणों जैसे बैलगाड़ी आदि बनाने में किया जाता है। इसकी छाल चमड़ा रँगने के काम आती है। सौन्दर्य के अतिरिक्त आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में इसका उपयोग ज्वर, अपच एवं लकवे आदि में किया जाता है। अपने फूलों की सुन्दरता के कारण इसे सड़कों के किनारे एवं अन्य स्थानों पर रोपित किया जाता है। इसके

अन्दर की लकड़ी कठोर और मज़बूत होती है।

तुंगभद्रा नदी के तट पर अमलतास के वृक्ष थे–

वार्नीरैस्तिमिदैश्चैव बकुलैः केतकैरपि।
हिन्तालैस्तिनिशैर्नीपैर्वेतसैः कृतमालकैः ॥ (4/27/18)
तीरजैः शोभिता भाति नानारूपैस्ततस्ततः।
वसनाभरणोपेता प्रमदेवाभ्यलंकृता ॥ (4/27/19)

जलबेंत, तिमिद बकुल, केतक, हिन्ताल, तिनिश, नीप, स्थलबेंत, कृतमाल (अमलतास) आदि भाँति-भाँति के तटवर्ती वृक्षों से जहाँ-तहाँ सुशोभित हुई यह नदी वस्त्रभूषणों से विभूषित शृंगारसज्जित युवती स्त्री के समान जान पड़ती है।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में शोभाकारी वृक्ष के रूप में अमलतास के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

56. कुटज (Tellicherry Bark)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए कुटज शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में कुटज, कौट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कलिंग, इन्द्र एवं हिन्दी में कूड़ा, कोरयाँ, कुरैयाँ आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Holarrhena antidysenterica' है। यह आर्द्र भूमि को छोड़कर देश के लगभग सभी भागों में पाया जाता है। इसका वृक्ष 20 फीट तक ऊँचा होता है। इसकी छाल खुरदरी तथा भूरे रंग की होती है। इसकी लकड़ी हलकी पीली और कोमल होती है। इसके पत्ते 5 से 10 इंच तक लम्बे चौड़े एवं नुकीले होते हैं। इसमें श्वेत फूल आते हैं। इसकी दो-दो फलियाँ एकसाथ असंयुक्त होती हैं।

श्रीराम ने माल्यवान पर्वत के वर्णन में लक्ष्मण से कुटज के वृक्ष का उल्लेख किया है–

क्वचिद् बाष्पाभिसंरुद्धान् वर्षागमसमुत्सुकान्।
कुटजान् पश्य सौमित्रे पुष्पितान् गिरिसानुषु।
मम शोकाभिभूतस्य कामसंदीपनान् स्थितान् ॥ (4/28/14)

सुमित्रानन्दन! देखो, इस पर्वत के शिखरों पर खिले हुए कुटज कैसी शोभा पाते हैं? कहीं तो पहली बार वर्षा होने पर भूमि से निकले हुए भाप से ये व्याप्त हो रहे हैं और कहीं वर्षा के आगमन से अत्यन्त उत्सुक दिखाई देते हैं। मैं तो प्रिया विरह के शोक से पीड़ित हूँ और ये कुटज पुष्प मेरी प्रेमाग्नि को उद्दीप्त कर रहे हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में कुटज के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

57. असन (Indian Laural)

श्रीराम प्रस्रवण गिरि पर ऋतु वर्णन करते हुए लक्ष्मण से असन वृक्ष का उल्लेख करते हैं–

पुष्पितांश्चासनान् दृष्ट्वा काञ्चनानिव निर्मलान्।
कथं सा रमते बाला पश्यन्ती मामपश्यती ॥ (4/30/8)

सुवर्णमय वृक्षों के समान निर्मल और खिले हुए असन नामक वृक्षों को देखकर बार-बार उन्हें निहारती हुई भोली-भाली सीता जब मुझे अपने पास नहीं देखती होगी, तब कैसे उसका मन लगता होगा?

वनप्रचण्डा मधुपानशौण्डाः
प्रियान्विताः षट्चरणाः प्रहृष्टाः।
वनेषु मत्ताः पवनानुयात्रं
कुर्वन्ति पद्मासनरेणुगौराः ॥ (4/30/52)

वन में ढिठाई के साथ घूमने वाले तथा कमल और असन के परागों से गौरवर्ण को प्राप्त हुए मतवाले भ्रमर, जो पुष्पों के मकरन्द का पान करने में बड़े चतुर हैं, अपनी प्रियाओं के साथ हर्ष में भरकर वनों में (गन्ध के लोभ से) वायु के पीछे-पीछे जा रहे हैं।

प्रफुल्लबाणासनचित्रितेषु
प्रहृष्टषट्पादनिकूजितेषु।
गृहीतचापोद्यतदण्डचण्डः
प्रचण्डचापोऽद्य वनेषु कामः ॥ (4/30/56)

फूले हुए सरकण्डों और असन के वृक्षों से जिनकी विचित्र शोभा हो रही है तथा जिनमें हर्षभरे भ्रमरों की आवाज़ गूँजती रहती है, उन वनों में आज प्रचण्ड धनुर्धर कामदेव प्रकट हुआ है, जो धनुष हाथ में लेकर विरही जनों को दण्ड देने के लिए उद्यत हो अत्यन्त कोप का परिचय दे रहा है।

असनाः सप्तपर्णाश्च कोविदाराश्च पुष्पिताः।
दृश्यन्ते बन्धुजीवाश्च श्यामाश्च गिरिसानुषु ॥ (4/30/62)

पर्वत के शिखरों पर असन, छितवन, कोविदार, बन्धु-जीव तथा श्याम तमाल खिले दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में असन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

58. बन्धु-जीव

इसे हिन्दी में बन्धूक, गुल दुपहरिया आदि भी कहा जाता है। इसका वानस्पतिक नाम 'Pentapetes phoenicea' है। यह गुजरात, बंगाल आदि में अधिक पाया जाता है। इसे देश के अनेक स्थानों पर उगाया जाता है। इसका पौधा 2 से 5 फीट ऊँचा होता है। पत्ते 3 से 5 इंच लम्बे तथा केवल एक शिरा वाले होते हैं। इसके फल बड़े, लाल रंग के तथा दण्ड पर दो-दो एक साथ नीचे की ओर लटके रहते हैं। दोपहर में खिलने के कारण इसे गुलदुपहरिया कहा जाता है।

प्रस्रवण गिरि पर बन्धुजीव के पौधे थे–

असनाः सप्तपर्णाश्च कोविदाराश्च पुष्पिताः।
दृश्यन्ते बन्धुजीवाश्च श्यामाश्च गिरिसानुषु ॥ (4/30/62)

पर्वत के शिखरों पर असन, छितवन, कोविदार, बन्धु-जीव तथा श्याम तमाल खिले दिखाई देते हैं।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में बन्धुजीव के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

59. गर्जन, अश्वकर्ण

प्रस्रवण गिरि से किष्किन्धापुरी जाते समय लक्ष्मण को अश्वकर्ण के वृक्ष मिले–

सालतालाश्वकर्णाश्च तरसा पातयन् बलात्।
पर्यस्यन् गिरिकूटानि द्रुमानन्यांश्च वेगितः ॥ (4/31/14)

उनका वेग ऐसा बढ़ा हुआ था कि वे मार्ग में मिलने वाले साल; ताल और अश्वकर्ण नामक वृक्षों को उसी वेग से बलपूर्वक गिराते तथा पर्वतशिखरों एवं अन्य वृक्षों को उठा-उठा कर दूर फेंकते जाते थे।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में अश्वकर्ण के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

60. ताड़ (ताल) (Palmyra Palm)

प्रस्रवण गिरि से किष्किन्धापुरी जाते समय लक्ष्मण को ताड़ के वृक्ष मिले–

सालतालाश्वकर्णाश्च तरसा पातयन् बलात्।
पर्यस्यन् गिरिकूटानि द्रुमानन्यांश्च वेगितः ॥ (4/31/14)

उनका वेग ऐसा बढ़ा हुआ था कि वे मार्ग में मिलने वाले साल, ताल और अश्वकर्ण नामक वृक्षों को उसी वेग से बलपूर्वक गिराते तथा पर्वतशिखरों एवं अन्य वृक्षों को उठा-उठा कर दूर फेंकते जाते थे।

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में ताड़ के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

61. तमाल (Indian Gamboge Tree)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए तमाल एवं श्याम शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Garcinia morella' है। इसका वृक्ष छोटा और पर्णहरित होता है। इस वृक्ष की छाल में घाव करने से एक पीले रंग का तरल राल जैसा पदार्थ प्राप्त होता है जिसे गम्बोज कहते हैं। यह भूरे पीले रंग के टुकड़ों में प्राप्त होता है। जल के साथ इसका घोल बनाकर उसमें अमोनिया मिलाने से यह गहरे नारंगी रंग का हो जाता है जिसे गोटगनबा कहते हैं।

तुंगभद्रा नदी के तट पर तमाल के वृक्ष थे–

चन्दनैस्तिलकैः सालैस्तमालैरतिमुक्तकैः।
पद्मकैः सरलैश्चैव अशोकैश्चैव शोभिताम् ॥ (4/27/17)

चन्दन, तिलक, साल, तमाल, अतिमुक्तक, पद्मक, सरल और अशोक आदि नाना प्रकार के वृक्षों से उस नदी की कैसी शोभा हो रही है?

प्रस्रवण गिरि पर तमाल के वृक्ष थे–

असनाः सप्तपर्णाश्च कोविदाराश्च पुष्पिताः।
दृश्यन्ते बन्धुजीवाश्च श्यामाश्च गिरिसानुषु ॥ (4/30/62)

पर्वत के शिखरों पर असन, छितवन, कोविदार, बन्धु-जीव तथा श्याम तमाल खिले दिखाई देते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार पम्पा सरोवर के तट पर तमाल के वृक्ष थे–

चंपक बकुल कदंब तमाला।
पाटल पनस परास रसाला ॥ (3/40)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में तमाल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

62. कल्पवृक्ष, पारिजात

किष्किन्धा में लक्ष्मण की स्थिति कल्पवृक्ष के समान बताई गयी है–

संरक्तनयनः श्रीमान् संचचार कृतांजलिः।
बभूवावस्थितस्तत्र कल्पवृक्षो महानिव ॥ (4/34/5)

श्रीमान् सुग्रीव के नेत्र मद से लाल हो रहे थे। वे टहलते हुए लक्ष्मण के पास आये और हाथ जोड़कर खड़े हो गये। लक्ष्मण वहाँ महान कल्पवृक्ष के समान स्थित थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने बालि की स्थिति की अभिव्यक्ति में कल्पवृक्ष का उल्लेख किया है–

अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरहीं। (4/10)

पंचवटी से किष्किन्धा के मार्ग में तथा किष्किन्धा क्षेत्र में पारिजात के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

63. कमल (Lotus)

पम्पा सरोवर पर कमल के पुष्प थे–

अरविन्दोत्पलवतीं पद्मसौगन्धिकायुताम्।
पुष्पिताम्रवणोपेतां बर्हिणोद्‌श्चुष्टनादिताम् ॥ (3/75/21)

उस पुष्करिणी में अरविन्द और उत्पल खिले थे। पद्म और सौगन्धिक जाति के पुष्प शोभा पाते थे। मौर लगी हुई अमराइयों से वह घिरी हुई थी तथा मयूरों के केकानाद वहाँ गूँज रहे थे।

64. पद्मक (Mild Himalaya Cherry)

इसे संस्कृत में पद्मक तथा हिन्दी में पद्माख, पद्माक, पदुम काठ आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Prunus puddum' है। यह हिमांचल प्रदेश, गढ़वाल एवं दक्षिण में कुडाई कनाल एवं उटकमंड में पाया जाता है। इसकी छाल भूरे रंग की और चमकीली होती है। इससे पपड़ियाँ छूटती हैं। इसके पत्ते 3 से 5 इंच लम्बे, 1 से 1.5 इंच चौड़े दोहरे दाँतों वाले होते हैं। इसके फूल श्वेत, गुलाबी या लाल होते हैं और पतझड़ के बाद नये पत्ते निकलने के पहले ही निकल आते हैं। इसके फल छोटे एवं गोलाकार होते हैं जो पीले या गुलाबी रंग के होते हैं। इसके फलों को खाया जाता है।

प्रस्रवण गिरि पर पद्मक के वृक्ष थे–

चन्दनैस्तिलकैः सालैस्तमालैरतिमुक्तकैः।
पद्मकैः सरलैश्चैव अशोकैश्चैव शोभिताम् ॥ (4/27/17)

चन्दन, तिलक, साल, तमाल, अतिमुक्तक, पद्मक, सरल और अशोक आदि नाना प्रकार के वृक्षों से उस नदी की कैसी शोभा हो रही है?

65. जवास (Camel thorn)

इसका वानस्पतिक नाम Alhagi maurorum है। दक्षिण भारत एवं गुजरात में इसकी झाड़ियाँ पायी जाती हैं। यह ऊँट के चारे के काम आता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्रस्रवण गिरि पर जवास के वृक्ष का उल्लेख किया है–

अर्क जवास पात बिनु भयऊ। (4/14)

66. बबूल (Babul tree)

इसका वानस्पतिक नाम Acacia nilotica है। इसकी तीन प्रमुख जातियाँ हैं–

(i) गोदी या तेलिया
(ii) वेदिनी या कौड़िया
(iii) रामकाँटा

बबूल देश के शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है। रामकाँटा प्रजाति केवल उत्तर प्रदेश अलीगढ़, बुलन्दशहर, आगरा एवं मथुरा ज़िले में पायी जाती है। इसकी लकड़ी मज़बूत होती है एवं खेती के उपकरणों के काम आती है। इसकी छाल का चमड़ा उद्योग में उपयोग किया जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने बालि की स्थिति की अभिव्यक्ति में बबूल का उल्लेख किया है–

अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरहीं। (4/10)

खण्ड-6

किष्किन्धा से सेतुबन्ध

किष्किन्धा से श्रीराम वानरों की सेना के साथ श्रीलंका गये। उससे पूर्व सीता की खोज में हनुमान जी लंका गये थे। समुद्र तट पर श्रीराम द्वारा पुल का निर्माण किया गया तथा शिव लिंग की स्थापना की गयी। यहाँ पर किष्किन्धा से समुद्र तट तक के वृक्षों का वर्णन है।

1. साल (Shorea)

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में साल के वृक्ष थे–

सालांस्तालांस्तमालांश्च पुंनागान् वञ्जुलान् धवान् ॥ (4/50/26)
चम्पकान् नागवृक्षांश्च कर्णिकारांश्चपुष्पितान्।

साल, ताल, तमाल, नागकेसर, अशोक, धव, चम्पा, नागवृक्ष और कनेर–ये सभी वृक्ष फूलों से भरे हुए थे।

समुद्र पर सेतु बनाते समय तिलक के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वंशैश्च वानराः।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ॥ (6/22/56)
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ (6/22/57)

वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम और अशोक आदि वृक्षों से समुद्र को पाटने लगे।

वर्तमान में दक्षिण भारत में साल वन नहीं पाये जाते।

2. ताड़ (ताल) (Palmyra Palm)

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में ताड़ के वृक्ष थे–

सालांस्तालांस्तमालांश्च पुंनागान् वञ्जुलान् धवान् ॥ (4/50/26)
चम्पकान् नागवृक्षांश्च कर्णिकारांश्चपुष्पितान्।

साल, ताल, तमाल, नागकेसर, अशोक, धव, चम्पा, नागवृक्ष और कनेर–ये सभी वृक्ष फूलों से भरे हुए थे।

समुद्र पर सेतु बनाते समय ताड़ के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वंशैश्च वानराः।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ॥ (6/22/56)
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ (6/22/57)

वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम और अशोक आदि वृक्षों से समुद्र को पाटने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में ताड़ के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

3. तमाल (Indian Gamboge Tree)

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में तमाल के वृक्ष थे–

सालांस्तालांस्तमालांश्च पुंनागान् वञ्जुलान् धवान् ॥ (4/50/26)
चम्पकान् नागवृक्षांश्च कर्णिकारांश्चपुष्पितान्।

साल, ताल, तमाल, नागकेसर, अशोक, धव, चम्पा, नागवृक्ष और कनेर–ये सभी वृक्ष फूलों से भरे हुए थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में तमाल़ के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

4. नागकेसर (पुनांग) (Cobra's Saffron)

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में नागकेसर के वृक्ष थे–

सालांस्तालांस्तमालांश्च पुंनागान् वञ्जुलान् धवान् ॥ (4/50/26)
चम्पकान् नागवृक्षांश्च कर्णिकारांश्चपुष्पितान्।

साल, ताल, तमाल, नागकेसर, अशोक, धव, चम्पा, नागवृक्ष और कनेर–ये सभी वृक्ष फूलों से भरे हुए थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में नागकेसर के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

5. अशोक (Mast tree)

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में अशोक के वृक्ष थे–

सालांस्तालांस्तमालांश्च पुंनागान् वञ्जुलान् धवान् ॥ (4/50/26)
चम्पकान् नागवृक्षांश्च कर्णिकारांश्चपुष्पितान्।

साल, ताल, तमाल, नागकेसर, अशोक, धव, चम्पा, नागवृक्ष और कनेर–ये सभी वृक्ष फूलों से भरे हुए थे।

समुद्र पर सेतु बनाते समय अशोक के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वशैश्च वानराः।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ॥ (6/22/56)
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ (6/22/57)

वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम और अशोक आदि वृक्षों से समुद्र को पाटने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में अशोक के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

6. धव (धौरा), बाकली (Axle wood)

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में धव के वृक्ष थे–

सालांस्तालांस्तमालांश्च पुंनागान् वञ्जुलान् धवान् ॥ (4/50/26)
चम्पकान् नागवृक्षांश्च कर्णिकारांश्चपुष्पितान्।

साल, ताल, तमाल, नागकेसर, अशोक, धव, चम्पा, नागवृक्ष और कनेर–ये सभी वृक्ष फूलों से भरे हुए थे।

समुद्र पर सेतु बनाते समय धव के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वशैश्च वानराः।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ॥ (6/22/56)
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ (6/22/57)

वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम और अशोक आदि वृक्षों से समुद्र को पाटने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में धव के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

7. चम्पा (Michelia Champaka)

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में चम्पा के वृक्ष थे–

सालांस्तालांस्तमालांश्च पुंनागान् वञ्जुलान् धवान् ॥ (4/50/26)
चम्पकान् नागवृक्षांश्च कर्णिकारांश्चपुष्पितान्।

साल, ताल, तमाल, नागकेसर, अशोक, धव, चम्पा, नागवृक्ष और कनेर–ये सभी वृक्ष फूलों से भरे हुए थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में फूलों के लिए चम्पा के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

8. कनेर या करवीर (Sweet Scented Oleader)

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में कनेर के वृक्ष थे–

सालांस्तालांस्तमालांश्च पुंनागान् वञ्जुलान् धवान् ॥ (4/50/26)
चम्पकान् नागवृक्षांश्च कर्णिकारांश्चपुष्पितान्।

साल, ताल, तमाल, नागकेसर, अशोक, धव, चम्पा, नागवृक्ष और कनेर–ये सभी वृक्ष फूलों से भरे हुए थे।

समुद्र पर सेतु बनाते समय कनेर के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वंशैश्च वानराः।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ॥ (6/22/56)
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ (6/22/57)

वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम और अशोक आदि वृक्षों से समुद्र को पाटने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में फूलों के लिए कनेर के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

9. अगर (Eagle wood, Aloe Wood)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए अगुरु शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे हिन्दी में अगर या काला अगर, बंगला में अगरुचन्दन, मराठी में अगर एवं गुजराती में अगर कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Aquilaria agallocha' है। यह पूर्वी भारत मुख्यतः सिक्किम, पश्चिम बंगाल, अरुणांचल प्रदेश तथा असम में पाया जाता है। इसका वृक्ष विशाल तथा लकड़ी मुलायम एवं पीलापन लिए सफ़ेद होती है। इसके पुष्प सफ़ेद रंग के होते हैं तथा गुच्छों में आते हैं। फल अण्डाकार एवं मृदु रोम से भरे होते हैं।

इसके काष्ठ से आसवन (distillation) द्वारा 0.09 से 2.19 प्रतिशत तक तेल निकाला जाता है। इसका प्रयोग दवाओं, सुगन्ध प्रदान करने तथा इत्र आदि बनाने के काम आता है। वाष्प शील तेलों को अवाष्प शील बनाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

रावण को समुद्र तट पर मारीच के पास आने पर अगर के वन दिखाई दिये–

अगुरूणां च मुख्यानां वनान्युपवनानि च।
तक्कोलानां च जात्यानां फलिनां च सुगन्धिनाम् ॥ (3/35/22)
पुष्पाणि च तमालस्य गुल्मानि मरिचस्य च।
मुक्तानां च समूहानि शुष्यमाणानि तीरतः ॥ (3/35/23)
शैलानि प्रवरांश्चैव प्रवालनिचयांस्तथा।
काञ्चनानि च शृङ्गाणि राजतानि तथैव च ॥ (3/35/24)
प्रस्रवाणि मनोज्ञानि प्रसन्नान्यद्भुतानि च।

धनधान्योपपन्नानि स्त्रीरत्नैरावृतानि च ॥ (3/35/25)
हस्त्यश्वरथगाढानि नगराणि विलोकयन्।

कहीं श्रेष्ठ अगुरु के वन थे, कहीं उत्तम जाति के सुगन्धित फलवाले तक्कोलों (वृक्षविशेषों) के उपवन थे। कहीं तमाल के फूल खिले हुए थे। कहीं गोल मिर्च की झाड़ियाँ शोभा पाती थीं और कहीं समुद्र के तट पर ढेर-के-ढेर मोती सूख रहे थे। कहीं श्रेष्ठ पर्वतमालाएँ, कहीं मृगों की राशियाँ, कहीं सोने-चाँदी के शिखर तथा कहीं सुन्दर, अद्भुत और स्वच्छ पानी के झरने दिखाई देते थे। कहीं धन-धान्य से सम्पन्न, स्त्री-रत्नों से भरे हुए तथा हाथी, घोड़े और रथों से व्याप्त नगर-दृष्टिगोचर होते थे। इन सबको देखता हुआ रावण आगे बढ़ा।

सीता की खोज के समय मार्ग में एक तपस्विनी के आश्रम में हनुमान जी को अगुरु मिला—

अगुरूणां च दिव्यानां चन्दनानां च संचयान्।
शुचीन्यभ्यवहाराणि मूलानि च फलानि च ॥ (4/50/35)

अगुरु तथा दिव्य चन्दन की राशियाँ सुरक्षित थीं। पवित्र भोजन के सामान तथा फल-फूल भी विद्यमान थे।

इस क्षेत्र में अगर लगाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

10. चन्दन (Sandalwood)

हनुमान जी को श्रीलंका के मार्ग में चन्दन के वृक्ष मिले—

दिशस्तस्यास्ततो भूयः प्रस्थितो दक्षिणां दिशम्।
विन्ध्यपादपसंकीर्णा चन्दनद्रुमशोभिताम् ॥ (4/46/17)

उस दिशा को छोड़कर मैं फिर दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थित हुआ, जहाँ विन्ध्य पर्वत और नाना प्रकार के वृक्ष भरे हुए हैं तथा चन्दन के वृक्ष जिसकी शोभा बढ़ाते हैं।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में चन्दन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

11. केतक (केवड़ा) (Screw Pine)

वानरों को सीता की खोज में दक्षिण दिशा में भेजते समय सुग्रीव ने उन्हें केवड़ा के वनों में खोजने का विशेष निर्देश दिया। इससे स्पष्ट है कि समुद्र तट पर केवड़ा के कुञ्ज थे—

ततः केतकखण्डेषु तमालगहनेषु च ॥ (4/42/11)
कपयो विहरिष्यन्ति नारिकेलवनेषु च।
तत्र सीतां च मार्गध्वं निलयं रावणस्य च ॥ (4/42/12)

समुद्र के तट पर केवड़ों के कुञ्जों में, तमाल के काननों में तथा नारियल के वनों में तुम्हारे सैनिक वानर भली-भाँति विचरण करेंगे। वहाँ तुम लोग सीता को खोजना और रावण के निवास-स्थान का पता लगाना।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में फूलों के लिए केवड़ा लगाया जाना चाहिए।

12. सिन्दुवार (Indian Privet)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में सिन्दुवार के वृक्ष मिले–

चम्पकांस्तिलकांश्चूतानशोकान् सिन्दुवारकान्।
तिनिशान् करवीरांश्च भजन्ति स्म प्लवंगमाः ॥ (6/4/72)

वे वानर मार्ग में मिले हुए चम्पा, तिलक, आम, अशोक, सिन्दुवार, तिनिश और करवीर आदि वृक्षों को तोड़ देते थे।

गिरिप्रस्थेषु रम्येषु सर्वतः सम्प्रपुष्पिताः ॥ (6/4/77)
केतक्यः सिन्दुवाराश्च वासन्त्यश्च मनोरमाः।
माधव्यो गन्धपूर्णाश्च कुन्दगुल्माश्च पुष्पिताः ॥ (6/4/78)

रमणीय पर्वतशिखरों पर सब ओर खिली हुई केतकी, सिन्दुवार और वासन्ती लताएँ बड़ी मनोरम जान पड़ती थीं। प्रफुल्ल माधवी लताएँ सुगन्ध से भरी थीं और कुन्द की झाड़ियाँ भी फूलों से लदी थीं।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में सिन्दुवार लगाया जाना चाहिए।

13. वासन्ती लता, चमेली

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में चमेली के पौधे मिले–

गिरिप्रस्थेषु रम्येषु सर्वतः सम्प्रपुष्पिताः ॥ (6/4/77)
केतक्यः सिन्दुवाराश्च वासन्त्यश्च मनोरमाः।
माधव्यो गन्धपूर्णाश्च कुन्दगुल्माश्च पुष्पिताः ॥ (6/4/78)

रमणीय पर्वतशिखरों पर सब ओर खिली हुई केतकी, सिन्दुवार और वासन्ती लताएँ बड़ी मनोरम जान पड़ती थीं। प्रफुल्ल माधवी लताएँ सुगन्ध से भरी थीं और कुन्द की झाड़ियाँ भी फूलों से लदी थीं।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में फूलों के लिए चमेली के पौधे लगाये जाने चाहिए।

14. चिलबिल (Indian Elm)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में चिलबिल के वृक्ष मिले–

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलास्तथा।
रञ्जकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ॥ (6/4/79)

चिरिबिल्व, महुआ, वञ्जुल, बकुल, रंजक, तिलक और नागकेसर के वृक्ष भी वहाँ खिले हुए थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में चिलबिल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

15. महुआ (Butter tree)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में महुआ के वृक्ष मिले–

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलास्तथा।
रञ्जकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ॥ (6/4/79)

चिरिबिल्व, महुआ, वञ्जुल, बकुल, रंजक, तिलक और नागकेसर के वृक्ष भी वहाँ खिले हुए थे। किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में महुआ के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

16. वञ्जुल, वेतस (बेंत) (Cane)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में बेंत के वृक्ष मिले–

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलास्तथा।
रञ्जकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ॥ (6/4/79)

चिरिबिल्व, महुआ, वञ्जुल, बकुल, रंजक, तिलक और नागकेसर के वृक्ष भी वहाँ खिले हुए थे।

श्लोक संख्या (1/14/39) से स्पष्ट होता है वाल्मीकि काल में बेंत से चटाई बनाने का प्रचलन था। अतः बेत को कुटीर उद्योग की दृष्टि से बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

17. बकुल (मौलसिरी) (Elengi Tree)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में मौलसिरी के वृक्ष मिले–

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलास्तथा।
रञ्जकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ॥ (6/4/79)

चिरिबिल्व, महुआ, वञ्जुल, बकुल, रंजक, तिलक और नागकेसर के वृक्ष भी वहाँ खिले हुए थे।

समुद्र पर सेतु बनाते समय मौलसिरी के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

तालान् दाडिमगुल्माश्च नारिकेलविभीतकान्।
करीरान् बकुलान् निम्बान् समाजहुरितस्ततः ॥ (6/22/59)

ताड़ों, अनार की झाड़ियों, नारियल और बहेड़े के वृक्षों, करीर बकुल तथा नीम को भी इधर-उधर से तोड़-तोड़कर लाने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में शोभाकारी वृक्ष के रूप में मौलसिरी के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

18. रंजक

इसका वानस्पतिक नाम 'Adenanthera pavonica' है। यह एक मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 6 से 15 मीटर तक तथा व्यास 45 से.मी. होता है। इसकी छाल भूरी होती है। फूल छोटे एवं क्रीमी रंग के पीले होते हैं। यह लगभग पूरे भारत में पाया जाता है।

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में रंजक के वृक्ष मिले–

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलास्तथा।
रञ्जकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ॥ (6/4/79)

चिरिबिल्व, महुआ, वञ्जुल, बकुल, रंजक, तिलक और नागकेसर के वृक्ष भी वहाँ खिले हुए थे। किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में रंजक के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

19. तिलक

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में तिलक के वृक्ष मिले–

चम्पकांस्तिलकांश्चूतानशोकान् सिन्दुवारकान्।
तिनिशान् करवीरांश्च भञ्जन्ति स्म प्लवंगमाः ॥ (6/4/72)

वे वानर मार्ग में मिले हुए चम्पा, तिलक, आम, अशोक, सिन्दुवार, तिनिश और करवीर आदि वृक्षों को तोड़ देते थे।

चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलास्तथा।
रञ्जकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ॥ (6/4/79)

चिरिबिल्व, महुआ, वञ्जुल, बकुल, रंजक, तिलक और नागकेसर के वृक्ष भी वहाँ खिले हुए थे।

समुद्र पर सेतु बनाते समय तिलक के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वंषैश्च वानराः।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ॥ (6/22/56)
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ (6/22/57)

वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम और अशोक आदि वृक्षों से समुद्र को पाटने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में तिलक के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

20. आम (Mango Tree)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में आम के वृक्ष मिले–

चम्पकांस्तिलकांश्चूतानशोकान् सिन्दुवारकान्।
तिनिशान् करवीरांश्च भञ्जन्ति स्म प्लवंगमाः ॥ (6/4/72)

वे वानर मार्ग में मिले हुए चम्पा, तिलक, आम, अशोक, सिन्दुवार, तिनिश और करवीर आदि वृक्षों को तोड़ देते थे।

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नीलाशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

समुद्र पर सेतु बनाते समय आम के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वषैश्च वानराः।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ॥ (6/22/56)
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ (6/22/57)

वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम और अशोक आदि वृक्षों से समुद्र को पाटने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में आम के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

21. पाटल (पाडर) (Messenger of Spring, Palol)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में पाडर के वृक्ष मिले–

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नील, अशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में पाडर के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

22. कोविदार (कचनार) (Orchid tree)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में कचनार के वृक्ष मिले–

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नील, अशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में शोभाकार वृक्ष के रूप में कचनार लगाया जाना चाहिए।

23. मुचुलिन्द

वाल्मीकि रामायण में मुचुलिन्द शब्द का प्रयोग किया गया है। यह एक बड़े आकार का सन्तरा है। इसके बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

वाल्मीकि रामायण में इसका उल्लेख निम्नानुसार आया है–

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नील, अशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

24. अर्जुन (ककुभ) (Arjuna Tree)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में अर्जुन के वृक्ष मिले–

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नील, अशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

समुद्र पर सेतु बनाते समय अर्जुन के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वंषैश्च वानराः।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ॥ (6/22/56)
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ (6/22/57)

वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम और अशोक आदि वृक्षों से समुद्र को पाटने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में अर्जुन के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

25. शीशम, शिंशपा (Sissoo)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में शीशम के वृक्ष मिले–

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नील, अशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में शीशम के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

26. कुटज (Tellicherry Bark)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए कुटज शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे संस्कृत में कुटज, कौट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कलिंग, इन्द्र एवं हिन्दी में कूड़ा, कोरयाँ, कुरैयाँ आदि कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Holarrhena antidysenterica' है। यह आर्द्र भूमि को छोड़कर देश के लगभग सभी भागों में पाया जाता है। इसका वृक्ष 20 फीट तक ऊँचा होता है। इसकी छाल खुरदरी तथा भूरे रंग की होती है। इसकी लकड़ी हलकी पीली और कोमल होती है। इसके पत्ते 5 से 10 इंच तक लम्बे, चौड़े एवं नुकीले होते हैं। इसमें श्वेत फूल आते हैं। इसकी दो-दो फलियाँ एकसाथ असंयुक्त होती हैं।

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में शीशम के वृक्ष मिले–

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नील, अशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

समुद्र पर सेतु बनाते समय कुटज के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वषैश्च वानराः।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ॥ (6/22/56)
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ (6/22/57)

वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम और अशोक आदि वृक्षों से समुद्र को पाटने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में कुटज के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

27. नीलाशोक

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में नीलाशोक के वृक्ष मिले–

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नीलाशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

28. हिन्ताल (Mangroove Date Plant)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में हिन्ताल के वृक्ष मिले–

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नील, अशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में हिन्ताल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

29. तिनिश (स्यन्दन)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में तिनिश के वृक्ष मिले–

चम्पकांस्तिलकांश्चूतानशोकान् सिन्दुवारकान्।
तिनिशान् करवीरांश्च भञ्जन्ति स्म प्लवंगमाः ॥ (6/4/72)

वे वानर मार्ग में मिले हुए चम्पा, तिलक, आम, अशोक, सिन्दुवार, तिनिश और करवीर आदि वृक्षों को तोड़ देते थे।

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नील, अशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वषैश्च वानराः।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ॥ (6/22/56)
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ॥ (6/22/57)

वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम और अशोक आदि वृक्षों से समुद्र को पाटने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में तिनिश के वृक्ष लगायो जाने चाहिए।

30. सेमल (चूर्णक या शाल्मली) (Silk Cotton Tree)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में सेमल के वृक्ष मिले–

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नील, अशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में सेमल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

31. कदम्ब (नीप) (Cadamba tree)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में कदम्ब के वृक्ष मिले–

अङ्कोलांश्च करञ्जांश्च प्लक्षन्यग्रोधपादपान्।
जम्बूकामलकान् नीपान् भञ्जन्ति स्म प्लवंगमाः ॥ (6/4/73)

उछल-उछलकर चलने वाले वे वानर सैनिक रास्ते के अंकोल, करञ्ज, पाकर, बरगद, जामुन, आँवले और नीप आदि वृक्षों को भी तोड़ डालते थे।

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नील, अशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में कदम्ब के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

32. सरल या चीड़ (Pine Tree)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में चीड़ के वृक्ष मिले–

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नीलाशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

यद्यपि प्राकृतिक रूप से चीड़ के वृक्ष मैदानी क्षेत्रों में नहीं पाये जाते किन्तु विशेष प्रयास करके मैदानी क्षेत्रों में अनेक स्थानों पर इन्हें सफलतापूर्वक उगाया गया है। इसकी हाइब्रिड प्रजातियाँ सफलतापूर्वक दक्षिण भारत में उगाई जा रही हैं।

33. अंकोल (Sage Leaved Alangium)

वानरों की सेना के लंका प्रस्थान के समय मार्ग में अंकोल के वृक्ष मिले–

अङ्कोलांश्च करञ्जांश्च प्लक्षन्यग्रोधपादपान्।
जम्बूकामलकान् नीपान् भञ्जन्ति स्म प्लवंगमाः ॥ (6/4/73)

उछल-उछलकर चलने वाले वे वानर सैनिक रास्ते के अंकोल, करञ्ज, पाकर, बरगद, जामुन, आँवले और नीप आदि वृक्षों को भी तोड़ डालते थे।

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नीलाशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में अंकोल के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

34. नारियल (Coconut)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए नारिकेल एवं तुङ्ग शब्द का प्रयोग किया गया है। नारियल को मराठी में 'नारल', तमिल में 'तेन्नमारम', तेलुगु में 'नारिकेलमु', गुजराती में 'नारियल', बंगला में 'नारिकेल', संस्कृत में 'नारिकेल', मलयालम में 'तेंगा', तथा कन्नड़ में 'टेंगू' कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Cocos nucifera' है। यह समुद्र तट के आसपास मुख्यतः केरल, आन्ध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु एवं दमन दीव में बहुतायत में पाया जाता है। भारतीय संस्कृति एवं रीति-रिवाज में नारियल का बड़ा महत्त्व है। यह शुभ माना जाता है तथा पूजा-पाठ एवं मांगलिक अवसरों पर इसका विशेष महत्त्व है। इसका फल नारियल ऊँचाई पर गुच्छों में मज़बूत डंठल के साथ लगता है। कच्चा फल हरा, बाहरी भाग चिकना एवं अन्दर की गिरी मज़बूत कवच से सुरक्षित रहती है। पानी सूखने के साथ गिरी परिपक्व हो जाती है तथा छिलका उतारकर नारियल के गोले के रूप में प्रयुक्त होती है।

सीता हरण के समय समुद्र तट पर मारीचि के पास आने पर रावण को नारियल के वन मिले–

कदल्यटविसंशोभं नारिकेलोपशोभितम्।
सालैस्तालैस्तमालैश्च तरुभिश्च सुपुष्पितैः ॥ (3/35/13)

कहीं कदलीवन और कहीं नारियल के कुंज शोभा दे रहे थे। साल, ताल, तमाल तथा सुन्दर फूलों से भरे हुए दूसरे-दूसरे वृक्ष उस तटप्रान्त को अलंकृत कर रहे थे।

वानरों को सीता की खोज में दक्षिण दिशा में भेजते समय सुग्रीव ने उन्हें नारियल के वनों में खोजने का विशेष निर्देश दिया। इससे स्पष्ट है कि समुद्र तट पर नारियल के वन थे–

ततः केतकखण्डेषु तमालगहनेषु च ॥ (4/42/11)
कपयो विहरिष्यन्ति नारिकेलवनेषु च।
तत्र सीतां च मार्गध्वं निलयं रावणस्य च ॥ (4/42/12)

समुद्र के तट पर केवड़ों के कुञ्जों में, तमाल के काननों में तथा नारियल के वनों में तुम्हारे सैनिक वानर भली-भाँति विचरण करेंगे। वहाँ तुम लोग सीता को खोजना और रावण के निवास-स्थान का पता लगाना।

समुद्र पर सेतु बनाते समय नारियल के वृक्षों का प्रयोग किया गया—

तालान् दाडिमगुल्मांश्च नारिकेलविभीतकान्।
करीरान् बकुलान् निम्बान् समाजहुरितस्ततः॥ (6/22/59)

ताड़ों, अनार की झाड़ियों, नारियल और बहेड़े के वृक्षों, करीर बकुल तथा नीम को भी इधर-उधर से तोड़-तोड़कर लाने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध का पूरा क्षेत्र नारियल क्षेत्र है। इस क्षेत्र में नारियल को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

35. करीर या करील (Caper Plant)

समुद्र पर सेतु बनाते समय करील के वृक्षों का प्रयोग किया गया—

तालान् दाडिमगुल्मांश्च नारिकेलविभीतकान्।
करीरान् बकुलान् निम्बान् समाजहुरितस्ततः॥ (6/22/59)

ताड़ों, अनार की झाड़ियों, नारियल और बहेड़े के वृक्षों, करीर बकुल तथा नीम को भी इधर-उधर से तोड़-तोड़कर लाने लगे।

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में करील के वृक्ष लगाये जाने चाहिए।

36. कमल (Lotus)

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में अनेक स्थान पर जलाशयों में कमल खिले थे—

पद्मैः सौगन्धिकैः फुल्लैः कुमुदैश्चोत्पलैस्तथा।
वारिजैर्विविधैः पुष्पै रम्यास्तत्र जलाशयाः॥ (6/4/85)

खिले हुए सुगन्धित कमल, कुमुद, उत्पल तथा जल में होने वाले भाँति-भाँति के अन्य पुष्पों से वहाँ के जलाशय बड़े रमणीय दिखाई देते थे।

37. पद्मक (Mild Himalaya Cherry)

किष्किन्धा से सेतुबन्ध के मार्ग में पद्मक के वृक्ष थे—

चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः।
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा॥ (6/4/80)
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा।
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा॥ (6/4/81)

आम, पाडर और कोविदार भी फूलों से लदे थे। मुचुलिन्द, अर्जुन, शिंशपा, कुटज, हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, नीलाशोक, सरल, अंकोल और पद्मक भी सुन्दर फूलों से सुशोभित थे।

38. गोल मिर्च (Black Pepper)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए मरिच शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका वानस्पतिक नाम 'Piper nigrum' है। दक्षिण भारत के उष्ण एवं आर्द्र भागों में इसकी खेती प्रमुखता से की जाती है। इसके अतिरिक्त दार्जिलिंग, देहरादून आदि स्थानों पर भी इसकी खेती की जा रही है। इसकी आरोही लता होती है जिसका अधोभाग काष्ठीय होता है। पत्तियाँ 10 से 18 से.मी. तक लम्बी तथा 5 से 12 से.मी. तक चौड़ी होती हैं। पत्ते नुकीले तथा पान के पत्ते जैसे होते हैं। बाज़ार में मिलने वाली काली मिरच इसके सुखाये अपक्व फल होते हैं जो कालापन लिए भूरे होते हैं।

समुद्र तट पर मारीचि आश्रम के निकट रावण को गोलमिर्च की झाड़ियाँ मिलीं–

अगुरूणां च मुख्यानां वनान्युपवनानि च।
तक्कोलानां च जात्यानां फलिनां च सुगन्धिनाम्॥ (3/35/22)
पुष्पाणि च तमालस्य गुल्मानि मरिचस्य च।
मुक्तानां च समूहानि शुष्यमाणानि तीरतः॥ (3/35/23)
शैलानि प्रवरांश्चैव प्रवालनिचयांस्तथा।
काञ्चनानि च शृङ्गाणि राजतानि तथैव च॥ (3/35/24)
प्रस्रवाणि मनोज्ञानि प्रसन्नान्यद्भुतानि च।
धनधान्योपपन्नानि स्त्रीरत्नैरावृतानि च॥ (3/35/25)
हस्त्यश्चरथगाढानि नगराणि विलोकयन्।

कहीं श्रेष्ठ अगुरु के वन थे, कहीं उत्तम जाति के सुगन्धित फलवाले तक्कोलों (वृक्षविशेषों) के उपवन थे। कहीं तमाल के फूल खिले हुए थे। कहीं गोल मिर्च की झाड़ियाँ शोभा पाती थीं और कहीं समुद्र के तट पर ढेर-के-ढेर मोती सूख रहे थे। कहीं श्रेष्ठ पर्वतमालाएँ, कहीं मृगों की राशियाँ, कहीं सोने-चाँदी के शिखर तथा कहीं सुन्दर, अद्भुत और स्वच्छ पानी के झरने दिखाई देते थे। कहीं धन-धान्य से सम्पन्न, स्त्री-रत्नों से भरे हुए तथा हाथी, घोड़े और रथों से व्याप्त नगर दृष्टिगोचर होते थे। इन सबको देखता हुआ रावण आगे बढ़ा।

इस क्षेत्र में गोल मिर्च की खेती की जाती है। मुख्य रूप से केरल मसालों के लिए प्रसिद्ध है।

39. बेर (Indian Jujube)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने हनुमान जी द्वारा सीता खोज के वर्णन में बेर के वनों का उल्लेख किया है–

बदरी वन कहुँ सो गई प्रभु अग्या धरि सीस। (4/25)

खण्ड-7

श्रीलंका

सेतुबन्ध से समुद्र पार कर श्रीराम लंका पहुँचे जहाँ रावण की विशाल सेना से उनका भयंकर युद्ध हुआ। युद्ध में रावण मारा गया तथा विभीषण का राज्याभिषेक हुआ। तदुपरान्त वनवास पूर्ण कर श्रीराम अयोध्या आये। श्रीलंका की वृक्ष प्रजातियाँ निम्नानुसार हैं–

1. सरल या चीड़ (Pine Tree)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को चीड़ के वृक्ष मिले–

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि ॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान् ॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान् ॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित (अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

2. कनेर या करवीर (Sweet Scented Oleader)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को कनेर के वृक्ष मिले–

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि ॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान् ॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान् ॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी

नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित (अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

श्रीलंका की अशोक वाटिका में कनेर के वृक्ष थे—

लताशतैरवततताः संतानकुसुमावृताः।
नानागुल्मावृतवनाः करवीरकृतान्तराः॥ (5/14/26)

उनके तटों पर सैकड़ों प्रकार की लताएँ फैली हुई थीं। खिले हुए कल्पवृक्षों ने उन्हें चारों ओर से घेर रखा था। उनके जल नाना प्रकार की झाड़ियों से ढके हुए थे तथा बीच-बीच में खिले हुए कनेर के वृक्ष गवाक्ष की-सी शोभा पाते थे।

त्रिजटा ने सीता से अपने स्वप्न को बताते हुए करवीर या कनेर के पुष्प का उल्लेख किया—

रावणश्च मया दृष्टो मुण्डस्तैलसमुक्षितः॥ (5/27/22)
रक्तवासाः पिबन्मत्तः करवीरकृतस्रजः।
विमानात् पुष्पकादद्य रावणः पतितः क्षितौ॥ (5/27/23)

मैंने रावण को भी सपने में देखा था। वह मूँड़ मुड़ाए तेल से नहाकर लाल कपड़े पहने हुए था। मदिरा पीकर मतवाला हो रहा था तथा करवीर के फूलों की माला पहने हुए था। इसी वेशभूषा में आज रावण पुष्पक विमान से पृथ्वी पर गिर पड़ा था।

3. खजूर (Date Palm)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को खजूर के वृक्ष मिले—

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान्॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान्॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित (अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

4. मुचुलिन्द

वाल्मीकि रामायण में मुचुलिन्द शब्द का प्रयोग किया गया है। यह एक बड़े आकार का सन्तरा है। इसके बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को मुचुलिन्द के वृक्ष मिले–

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि ॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान् ॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान् ॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित(अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

5. कुटज (Tellicherry Bark)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को कुटज के वृक्ष मिले–

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि ॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान् ॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान् ॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित (अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

6. केतक (केवड़ा) (Screw Pine)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को केवड़ा के पौधे मिले–

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि ॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान् ॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान् ॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित (अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

7. पिप्पली, प्रियंगु (Long Pepper)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को पिप्पली के पौधे मिले–

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि ॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान् ॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान् ॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित (अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

8. कदम्ब (नीप) (Cadamba Tree)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को कदम्ब के वृक्ष मिले–

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि ॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान् ॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान् ॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित (अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

9. छितवन, सप्तपर्ण (Devil's Tree, Scholar's Tree)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को छितवन के वृक्ष मिले–

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि ॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान् ॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान् ॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित (अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

पुंनागाः सप्तपर्णाश्च चम्पकोद्दालकास्तथा ॥ (5/15/9)
विवृद्धमूला बहवः शोभन्ते स्म सुपुष्पिताः।

पुंनाग (श्वेत कमल या नागकेसर), छितवन, चम्पा तथा बहुवार आदि बहुत-से सुन्दर पुष्पवाले वृक्ष, जिनकी जड़ें बहुत मोटी थीं, वहाँ शोभा पा रहे थे।

श्रीराम को लंकापुरी निरीक्षण के समय छितवन के वृक्ष दिखे–

चम्पकाशोकबकुलशालतालसमाकुला।
तमालवनसंछन्ना नागमालासमावृता ॥ (6/39/3)
हिन्तालैरर्जुनैर्नीपैः सप्तपर्णैः सुपुष्पितैः।
तिलकैः कर्णिकारैश्च पाटलैश्च समन्ततः ॥ (6/39/4)
शुशुभे पुष्पिताग्रैश्च लतापरिगतैर्द्रुमैः।
लङ्का बहुविधैर्दिव्यैर्यथेन्द्रस्यामरावती ॥ (6/39/5)

चम्पा, अशोक, बकुल, शाल और ताल वृक्षों से व्याप्त, तमाल वन से आच्छादित और नागकेसरों से आवृत लंकापुरी हिन्ताल, अर्जुन, नीप (कदम्ब), खिले हुए छितवन, तिलक, कनेर तथा पाटल आदि नाना प्रकार के दिव्य वृक्षों से जिनके अग्रभाग फूलों के भार से लदे थे तथा जिन पर लताबल्लरियाँ फैली हुई थीं, इन्द्र की अमरावती के समान शोभा पाती थी।

लंका में युद्ध के समय छितवन के वृक्ष का प्रयोग किया गया–

ग्रसन्तमिव सैन्यानि प्रघसं वानराधिपः ॥ (6/43/24)
सुग्रीवः सप्तपर्णेन निजघान जवेन च।

उधर राक्षस प्रघस वानरसेना को काल का ग्रास बना रहा था। यह देख वानरराज सुग्रीव ने सप्तपर्ण नामक वृक्ष से उसे वेगपूर्वक मार गिराया।

10. असन (Indian Laural)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को असन के वृक्ष मिले–

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि ॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान् ॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान् ॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित (अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

11. कोविदार (कचनार) (Orchid tree)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को कचनार के वृक्ष मिले–

सरलान् कर्णिकारांश्च खर्जूरांश्च सुपुष्पितान्।
प्रियालान् मुचुलिन्दांश्च कुटजान् केतकानपि ॥ (5/2/9)
प्रियङ्गून् गन्धपूर्णांश्च नीपान् सप्तच्छदांस्तथा।
असनान् कोविदारांश्च करवीरांश्च पुष्पितान् ॥ (5/2/10)
पुष्पभारनिबद्धांश्च तथा मुकुलितानपि।
पादपान् विहगाकीर्णान् पवनाधूतमस्तकान् ॥ (5/2/11)

उन कपिश्रेष्ठ ने वहाँ सरल (चीड़), कनेर, खिले हुए खजूर, प्रियाल (चिरौंजी), मुचुलिन्द (जम्बौरी नीबू), कुटज, केतक (केवड़े), सुगन्धपूर्ण प्रियंगु (पिप्पली), नीप (कदम्ब या अशोक), छितवन, असन, कोविदार तथा खिले हुए करवीर भी देखे। फूलों के भार से लदे हुए तथा मुकुलित (अधखिले) बहुत-से वृक्ष उन्हें दृष्टिगोचर हुए, जिनमें पक्षी भरे हुए थे और हवा के झोंके से जिनकी डालियाँ झूम रही थीं।

12. अशोक (Mast tree)

सीता की खोज के समय श्रीलंका में हनुमान जी को बहुत बड़ी अशोक वाटिका मिली–

अशोकवनिका चापि महतीयं महाद्रुमा।
इमामधिगमिष्यामि नहीयं विचिता मया ॥ (5/13/55)

इधर यह बहुत बड़ी अशोक वाटिका है, इसके भीतर बड़े-बड़े वृक्ष हैं। इसमें मैंने अभी तक अनुसन्धान नहीं किया है, अतः अब इसी में चलकर ढूँढूँगा।

सालानशोकान् भव्यांश्च चम्पकांश्च सुपुष्पितान्।
उद्दालकान् नागवृक्षांश्चूतान् कपिमुखानपि ॥ (5/14/3)
तथाऽऽम्रवणसम्पन्नांल्लताशतसमन्वितान्।
ज्यामुक्त इव नाराचः पुप्लुवे वृक्षवाटिकाम् ॥ (5/14/4)

वहाँ साल, अशोक, निम्ब और चम्पा के वृक्ष खूब खिले हुए थे। बहुवार, नागकेसर और बन्दर के मुँह की भाँति लाल फल देने वाले आम भी पुष्प एवं मञ्जरियों से सुशोभित हो रहे थे। अमराइयों से युक्त वे सभी वृक्ष शत-शत लताओं से आवेष्टित थे। हनुमान जी प्रत्यञ्चा से छूटे हुए बाण के समान उछले और उन वृक्षों की वाटिका में जा पहुँचे।

अशोकवनिका चेयं दृढं रम्या दुरात्मनः।
चन्दनैश्चम्पकैश्चापि बकुलैश्च विभूषिता ॥ (5/14/43)
इयं च नलिनी रम्या द्विजसंघनिषेविता।
इमां सा राजमहिषी नूनमेष्यति जानकी ॥ (5/14/44)

दुरात्मा रावण की यह अशोक वाटिका बड़ी ही रमणीय है। चन्दन, चम्पा और मौलसिरी के वृक्ष इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। इधर यह पक्षियों से सेवित कमलमण्डित सरोवर भी बड़ा सुन्दर है। राजरानी जानकी इसके तट पर निश्चय ही आती होंगी।

सर्वर्तुकुसुमै रम्यैः फलवद्भिश्च पादपैः।
पुष्पितानामशोकानां श्रिया सूर्योदयप्रभाम् ॥ (5/15/5)

सभी ऋतुओं में फूल देने वाले और फलों से भरे हुए रमणीय वृक्ष उस भूमि को विभूषित कर रहे थे। खिले हुए अशोकों की शोभा से सूर्योदयकाल की छटा-सी छिटक रही थी।

विनिष्पतद्भिः शतशश्चित्रैः पुष्पावतंसकैः।
समूलपुष्परचितैरशोकैः शोकनाशनैः ॥ (5/15/7)
पुष्पभारातिभारैश्च स्पृशद्भिरिवमेदिनीम्।
कर्णिकारैः कुसुमितैः किंशुकैश्च सुपुष्पितैः ॥ (5/15/8)
स देशः प्रभया तेषां प्रदीप्त इव सर्वतः।

वृक्षों के झड़ते हुए सैकड़ों विचित्र पुष्प-गुच्छों से नीचे से ऊपर तक मानो फूल से बने हुए शोकनाशक अशोकों से, फूलों के भारी भार से झुककर पृथ्वी का स्पर्श-सा करते हुए खिले हुए कनेरों से तथा सुन्दर फूलवाले पलाशों से उपलक्षित वह भूभाग उनकी प्रभा के कारण सब ओर से उद्दीप्त-सा हो रहा था।

शातकुम्भनिभाः केचित् केचिदग्निशिखप्रभाः ॥ (5/15/10)
नीलाञ्जननिभाः केचित् तत्रशोकाः सहस्रशः।

वहाँ सहस्रों अशोक के वृक्ष थे, जिनमें से कुछ तो सुवर्ण के समान कान्तिमान् थे, कुछ आग की ज्वाला के समान प्रकाशित हो रहे थे और कोई-कोई काले काजल की-सी कान्तिवाले थे।

रावण के कान के कुण्डल को अशोक वृक्ष के समान बताया गया है—

तरुणादित्यवर्णाभ्यां कुण्डलाभ्यां विभूषितः।
रक्तपल्लवपुष्पाभ्यामशोकाभ्यामिवाचलः ॥ (5/22/28)

प्रातःकाल के सूर्य की भाँति अरुण-पीत कान्ति वाले दो कुण्डल उसके कानों की शोभा बढ़ा रहे थे, मानो लाल पल्लवों और फूलों से युक्त दो अशोक वृक्ष किसी पर्वत को सुशोभित कर रहे हों।

हनुमान जी सीता की खोज करने के उपरान्त श्रीराम से श्रीलंका की अशोक वाटिका का वर्णन करते हैं–

अशोकवनिकामध्ये रावणस्य दुरात्मनः।
अधस्ताच्छिंशपामूले साध्वी करुणमास्थिता ॥ (5/59/21)

दुरात्मा रावण की अशोक वाटिका के मध्य भाग में एक शीशम वृक्ष के नीचे साध्वी सीता बड़ी दयनीय अवस्था में रहती हैं।

श्रीराम को लंकापुरी निरीक्षण के समय अशोक के वृक्ष दिखे–

चम्पकाशोकबकुलशालतालसमाकुला।
तमालवनसंछन्ना नागमालासमावृता ॥ (6/39/3)
हिन्तालैरर्जुनैर्नीपैः सप्तपर्णैः सुपुष्पितैः।
तिलकैः कर्णिकारैश्च पाटलैश्च समन्ततः ॥ (6/39/4)
शुशुभे पुष्पिताग्रैश्च लतापरिगतैर्द्रुमैः।
लङ्का बहुविधैर्दिव्यैर्यथेन्द्रस्यामरावती ॥ (6/39/5)

चम्पा, अशोक, बकुल, शाल और ताल वृक्षों से व्याप्त, तमाल वन से आच्छादित और नागकेसरों से आवृत लंकापुरी हिन्ताल, अर्जुन, नीप (कदम्ब), खिले हुए छितवन, तिलक, कनेर तथा पाटल आदि नाना प्रकार के दिव्य वृक्षों से जिनके अग्रभाग फूलों के भार से लदे थे तथा जिन पर लताबल्लरियाँ फैली हुई थीं, इन्द्र की अमरावती के समान शोभा पाती थी।

युद्ध के समय हनुमान जी को खिले हुए अशोक के समान बताया गया है–

विरराज महावीर्यो महाकायो महाबलः।
पुष्पिताशोकसंकाशो विधूम इव पावकः ॥ (6/56/28)

उनका सारा शरीर रक्त से रँग गया था, इसलिए वे महापराक्रमी महाबली और महाकाय हनुमान् खिले हुए अशोक एवं धूमरहित अग्नि के समान शोभा पा रहे थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने सीता जी को अशोक के वृक्ष के नीचे रहने का वर्णन किया है–

तहँ असोक उपवन जहँ रहई।
सीता बैठि सोच रत अहई ॥ (4/28)
सुनहि विनय मम विटप असोका।
सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥ (5/11)

वाल्मीकि रामायण में अशोक का वर्णन बार-बार आया है, जिससे विदित होता है कि उस समय भारत में अशोक के वृक्ष व्यापक रूप से विद्यमान थे। श्लोक संख्या (7/42/1) में अयोध्या में अन्तःपुर में अशोक वाटिका का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त श्लोक संख्या (6/128/45) में भरत जी के भवन के चतुर्दिक अशोक उपवन का उल्लेख है। रावण की नगरी लंका में सीता जी को अशोक के वृक्ष के नीचे रखा गया।

इससे स्पष्ट होता है कि शोभाकारी उपवन के रूप में उस समय समस्त भारत तथा श्रीलंका में अशोक वाटिका तैयार करने की परम्परा थी।

13. साल (Shorea)

हनुमान जी श्रीलंका में साल के वृक्षों के साथ आगे बढ़े–

तमूरुवेगोन्मथिताः सालाश्चान्ये नगोत्तमाः।
अनुजग्मुर्हनूमन्तं सैन्या इव महीपतिम् ॥ (5/1/48)

हनुमान जी की जाँघों के वेग से उखड़े हुए साल तथा दूसरे-दूसरे श्रेष्ठ वृक्ष उनके पीछे-पीछे उसी प्रकार चले, जैसे राजा के पीछे उसके सैनिक चलते हैं।

लंका में अशोक वाटिका में साल के वृक्ष थे–

सालानशोकान् भव्यांश्च चम्पकांश्च सुपुष्पितान्।
उद्दालकान् नागवृक्षांश्चूतान् कपिमुखानपि ॥ (5/14/3)
तथाऽऽम्रवणसम्पन्नांल्लताशतसमन्वितान्।
ज्यामुक्त इव नाराचः पुप्लुवे वृक्षवाटिकाम् ॥ (5/14/4)

वहाँ साल, अशोक, निम्ब और चम्पा के वृक्ष खूब खिले हुए थे। बहुवार, नागकेसर और बन्दर के मुँह की भाँति लाल फल देने वाले आम भी पुष्प एवं मञ्जरियों से सुशोभित हो रहे थे। अमराइयों से युक्त वे सभी वृक्ष शत-शत लताओं से आवेष्टित थे। हनुमान जी प्रत्यञ्चा से छूटे हुए बाण के समान उछले और उन वृक्षों की वाटिका में जा पहुँचे।

सीता की खोज के समय हनुमान से लंका में हुए युद्ध में साल के वृक्षों का प्रयोग किया गया–

भ्रामयन्तं कपिं दृष्ट्वा सालवृक्षं महाबलम्।
चिक्षेप सुबहून् बाणाञ्जम्बुमाली महाबलः ॥ (5/44/13)

उस महान् बलशाली वानर वीर को साल का वृक्ष घुमाते देख महाबली जम्बुमाली ने उसके ऊपर बहुत से बाणों की वर्षा की।

स सालवृक्षमासाद्य समुत्पाट्य च वानरः।
तावुभौ राक्षसौ वीरौ जघान पवनात्मजः ॥ (5/46/32)

वहाँ वानर शिरोमणि पवनकुमार ने एक साल वृक्ष के पास जाकर उसे उखाड़ लिया और उसी के द्वारा उन दोनों राक्षसवीरों को मार डाला।

श्रीलंका में अरिष्टगिरि पर साल के वृक्ष थे–

सालतालैश्च कर्णैश्च वंशैश्च बहुभिर्वृतम्।
लतावितानैर्विततैः पुष्पवद्भिरलंकृतम् ॥ (5/56/34)

साल, ताल, कर्ण और बहुसंख्यक बाँस के वृक्ष उसे सब ओर से घेरे हुए थे। फूलों के भार से लदे और फैले हुए लता-वितान उस पर्वत के अलंकार थे।

श्रीराम को लंका निरीक्षण के समय साल के वृक्ष मिले–

चम्पकाशोकबकुलशालतालसमाकुला।
तमालवनसंछन्ना नागमालासमावृता ॥ (6/39/3)
हिन्तालैरर्जुनैर्नीपैः सप्तपर्णैः सुपुष्पितैः।
तिलकैः कर्णिकारैश्च पाटलैश्च समन्ततः ॥ (6/39/4)
शुशुभे पुष्पिताग्रैश्च लतापरिगतैर्द्रुमैः।
लङ्का बहुविधैर्दिव्यैर्यथेन्द्रस्यामरावती ॥ (6/39/5)

चम्पा, अशोक, बकुल, शाल और ताल वृक्षों से व्याप्त, तमाल वन से आच्छादित और नागकेसरों से आवृत लंकापुरी हिन्ताल, अर्जुन, नीप (कदम्ब), खिले हुए छितवन, तिलक, कनेर तथा पाटल आदि नाना प्रकार के दिव्य वृक्षों से जिनके अग्रभाग फूलों के भार से लदे थे तथा जिन पर लताबल्लरियाँ फैली हुई थीं, इन्द्र की अमरावती के समान शोभा पाती थी।

राम-रावण युद्ध में साल के वृक्षों का प्रयोग किया गया—

ते ताम्रवक्त्र हेमाभा रामार्थे त्यक्तजीविताः।
लङ्कामेवाभ्यवर्तन्त सालभूधरयोधिनः ॥ (6/42/14)

ताँबे जैसे लाल मुँह और सुवर्ण सी कान्ति वाले वे वानर श्रीरामचन्द्रजी के लिए प्राण निछावर करने को तैयार थे। वे सब के सब साल वृक्ष और शैल शिखरों से युद्ध करने वाले थे, इसलिए उन्होंने लंका पर ही आक्रमण किया।

स शरैरभिविद्धाङ्गो द्विविदः क्रोधमूर्छितः।
सालेन सरथं साश्वं निजघानाशनिप्रभम् ॥ (6/43/34)

द्विविद का सारा शरीर बाणों से क्षत-विक्षत हो गया था। इससे उन्हें बड़ा क्रोध हुआ और उन्होंने एक साल वृक्ष से रथ और घोड़ों सहित अशनिप्रभ को मार गिराया।

रोषितः शरवर्षेण सालेन महता महान्।
प्रजघान हयान् नीलः प्रहस्तस्य महाबलः ॥ (6/58/43)

प्रहस्त की बाणवर्षा से कुपित हो महाबली महाकपि नील ने एक विशाल साल वृक्ष के द्वारा उसके घोड़ों को मार डाला।

सोऽश्वकर्णद्रुमाञ्शालांश्चूतांश्चापि सुपुष्पितान्।
अन्यांश्च विविधान् वृक्षान् नीलश्चिक्षेप संयुगे ॥ (6/59/77)

उन्होंने युद्धस्थल में अश्वकर्ण, साल, खिले हुए आम तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों को उखाड़-उखाड़ कर रावण पर चलाना प्रारम्भ किया।

ते तस्य घोरं निनदं निशम्य
यथा निनादं दिवि वारिदस्य।
पेतुर्धरण्यां बहवः प्लवङ्गाः
निकृत्तमूला इव शालवृक्षाः ॥ (6/65/56)

आकाश में जैसी मेघों की गर्जना होती है, उसी के समान उस राक्षस का घोर सिंहनाद सुनकर बहुत से वानर जड़ से कटे हुए साल वृक्षों के समान पृथ्वी पर गिर पड़े।

स चिच्छेद शितैर्बाणैः सप्तभिः कायभेदनैः।
अङ्गदो विव्यथेऽभीक्ष्णं स पपात मुमोह च ॥ (6/76/56)

किन्तु शरीर को विदीर्ण कर देने वाले सात तीखे बाण मारकर कुम्भ ने उस साल वृक्ष के टुकड़े-टुकड़े कर डाले, इससे अंगद को बड़ी व्यथा हुई। वे घायल तो थे ही, गिरे और मूर्च्छित हो गये।

तां तु भिन्नां शिलां दृष्ट्वा सुग्रीवः क्रोधमूर्छितः।
सालमुत्पाट्य चिक्षेप तं स चिच्छेद नैकधा ॥ (6/97/15)

उस शिला को विदीर्ण हुई देख सुग्रीव का क्रोध बहुत बढ़ गया। उन्होंने एक शाल का वृक्ष उखाड़कर उस राक्षस के ऊपर फेंका, किन्तु राक्षस ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

14. उद्दाल, लिसोड़ा (बहुवार) (Sebestan)

सीता की खोज के समय लंका में हनुमान को लसोड़ा के वृक्ष मिले–

पुंनागाः सप्तपर्णाश्च चम्पकोद्दालकास्तथा ॥ (5/15/9)
विवृद्धमूला बहवः शोभन्ते स्म सुपुष्पिताः।

पुंनाग (नागकेसर), छितवन, चम्पा तथा बहुवार आदि बहुत-से सुन्दर पुष्पवाले वृक्ष, जिनकी जड़ें बहुत मोटी थीं, वहाँ शोभा पा रहे थे।

15. नागकेसर (पुनांग) (Cobra's Saffron)

लंका की अशोक वाटिका में नागकेसर के वृक्ष थे–

सालानशोकान् भव्यांश्च चम्पकांश्च सुपुष्पितान्।
उद्दालकान् नागवृक्षांश्चूतान् कपिमुखानपि ॥ (5/14/3)
तथाऽऽम्रवणसम्पन्नांल्लताशतसमन्वितान्।
ज्यामुक्त इव नाराचः पुप्लुवे वृक्षवाटिकाम् ॥ (5/14/4)

वहाँ साल, अशोक, निम्ब और चम्पा के वृक्ष खूब खिले हुए थे। बहुवार, नागकेसर और बन्दर के मुँह की भाँति लाल फल देने वाले आम भी पुष्प एवं मञ्जरियों से सुशोभित हो रहे थे। अमराइयों से युक्त वे सभी वृक्ष शत-शत लताओं से आवेष्टित थे। हनुमान जी प्रत्यञ्चा से छूटे हुए बाण के समान उछले और उन वृक्षों की वाटिका में जा पहुँचे।

सीता की खोज के समय लंका में हनुमान को नागकेसर के वृक्ष मिले–

पुंनागाः सप्तपर्णाश्च चम्पकोद्दालकास्तथा ॥ (5/15/9)
विवृद्धमूला बहवः शोभन्ते स्म सुपुष्पिताः।

पुंनाग (नागकेसर), छितवन, चम्पा तथा बहुवार आदि बहुत-से सुन्दर पुष्पवाले वृक्ष, जिनकी जड़ें बहुत मोटी थीं, वहाँ शोभा पा रहे थे।

16. आम (Mango Tree)

लंका की अशोक वाटिका में आम के वृक्ष थे–

सालानशोकान् भव्यांश्च चम्पकांश्च सुपुष्पितान्।
उद्दालकान् नागवृक्षांश्चूतान् कपिमुखानपि ॥ (5/14/3)
तथाऽऽम्रवणसम्पन्नांल्लताशतसमन्वितान्।
ज्यामुक्त इव नाराचः पुप्लुवे वृक्षवाटिकाम् ॥ (5/14/4)

वहाँ साल, अशोक, निम्ब और चम्पा के वृक्ष खूब खिले हुए थे। बहुवार, नागकेसर और बन्दर के मुँह की भाँति लाल फल देने वाले आम भी पुष्प एवं मञ्जरियों से सुशोभित हो रहे थे। अमराइयों

से युक्त वे सभी वृक्ष शत-शत लताओं से आवेष्टित थे। हनुमान जी प्रत्यञ्चा से छूटे हुए बाण के समान उछले और उन वृक्षों की वाटिका में जा पहुँचे।

राम-रावण युद्ध में आम के वृक्षों का प्रयोग किया गया—

सोऽश्वकर्णद्रुमाञ्शालांश्चूतांश्चापि सुपुष्पितान्।
अन्यांश्च विविधान् वृक्षान् नीलश्चिक्षेप संयुगे ॥ (6/59/77)

उन्होंने युद्धस्थल में अश्वकर्ण, साल, खिले हुए आम तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों को उखाड़-उखाड़ कर रावण पर चलाना प्रारम्भ किया।

17. शीशम, शिंशपा (Sissoo)

हनुमान को लंका की अशोक वाटिका में शीशम के वृक्ष मिले—

लताप्रतानैर्बहुभिः पर्णैश्च बहुभिर्वृताम् ॥ (5/14/36)
काञ्चनीं शिंशपामेकां ददर्श स महाकपिः।
वृतां हेममयीभिस्तु वेदिकाभिः समन्ततः ॥ (5/14/37)

तदनन्तर महाकपि हनुमान् ने एक सुवर्णमयी शिंशपा का वृक्ष देखा, जो बहुत-से लतावितानों और अगणित पत्तों से व्याप्त था। वह वृक्ष भी सब ओर से सुवर्णमयी वेदिकाओं से घिरा था।

जाम्ववान को सीता की खोज का हाल सुनाते समय हनुमान ने शीशम के वृक्ष का उल्लेख किया—

ततोऽहं परमोद्विग्नः स्वरूपं प्रत्यसंहरम्।
अहं च शिंशपावृक्षे पक्षीव गहने स्थितः ॥ (5/58/64)

फिर तो मैंने अत्यन्त उद्विग्न होकर अपने स्वरूप को समेट लिया-छोटा बना लिया और पक्षी के समान उस गहन शिंशपा वृक्ष में छिपा बैठा रहा।

18. चन्दन (Sandalwood)

हनुमान को लंका की अशोक वाटिका में चन्दन के वृक्ष मिले—

अशोकवनिका चेयं दृढं रम्या दुरात्मनः।
चन्दनैश्चम्पकैश्चापि बकुलैश्च विभूषिता ॥ (5/14/43)
इयं च नलिनी रम्या द्विजसंघनिषेविता।
इमां सा राजमहिषी नूनमेष्यति जानकी ॥ (5/14/44)

दुरात्मा रावण की यह अशोक वाटिका बड़ी ही रमणीय है। चन्दन, चम्पा और मौलसिरी के वृक्ष इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। इधर यह पक्षियों से सेवित कमलमण्डित सरोवर भी बड़ा सुन्दर है। राजरानी जानकी इसके तट पर निश्चय ही आती होंगी।

रावण की चिता में चन्दन का प्रयोग किया गया—

रावणं प्रयते देशे स्थाप्य ते भृशदुःखिताः ॥ (6/111/112)
चितां चन्दनकाष्ठैश्च पद्मकोशीरचन्दनैः।
ब्राह्मया संवर्तयामासू राङ्कवास्तरणावृताम् ॥ (6/111/113)

आगे जाकर रावण के विमान को एक पवित्र स्थान पर रखकर अत्यन्त दुखी हुए विभीषण आदि राक्षसों ने मलय-चन्दनकाष्ठ, पद्मक, उशीर (खस) तथा अन्य प्रकार के चन्दनों द्वारा वेदोक्त विधि से चिता बनायी और उसके ऊपर रंकु नामक मृग का चर्म बिछाया।

रावण पर विजय के उपरान्त सीता की अग्नि परीक्षा में गोस्वामी तुलसीदास जी ने चन्दन का उल्लेख किया है–

तौ कृसानु सब कै गति जाना।
मो कहुँ होउ श्रीखण्ड समाना ॥ (6/109)

19. बकुल (मौलसिरी) (Elengi Tree)

हनुमान को लंका की अशोक वाटिका में मौलसिरी के वृक्ष मिले–

अशोकवनिका चेयं दृढं रम्या दुरात्मनः।
चन्दनैश्चम्पकैश्चापि बकुलैश्च विभूषिता ॥ (5/14/43)
इयं च नलिनी रम्या द्विजसंघनिषेविता।
इमां सा राजमहिषी नूनमेष्यति जानकी ॥ (5/14/44)

दुरात्मा रावण की यह अशोक वाटिका बड़ी ही रमणीय है। चन्दन, चम्पा और मौलसिरी के वृक्ष इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। इधर यह पक्षियों से सेवित कमलमण्डित सरोवर भी बड़ा सुन्दर है। राजरानी जानकी इसके तट पर निश्चय ही आती होंगी।

लंका के निरीक्षण के समय श्रीराम को मौलसिरी के वृक्ष मिले–

चम्पकाशोकबकुलशालतालसमाकुला।
तमालवनसंछन्ना नागमालासमावृता ॥ (6/39/3)
हिन्तालैरर्जुनैर्नीपैः सप्तपर्णैः सुपुष्पितैः।
तिलकैः कर्णिकारैश्च पाटलैश्च समन्ततः ॥ (6/39/4)
शुशुभे पुष्पिताग्रैश्च लतापरिगतैर्द्रुमैः।
लङ्का बहुविधैर्दिव्यैर्यथेन्द्रस्यामरावती ॥ (6/39/5)

चम्पा, अशोक, बकुल, शाल और ताल वृक्षों से व्याप्त, तमाल वन से आच्छादित और नागकेसरों से आवृत लंकापुरी हिन्ताल, अर्जुन, नीप (कदम्ब), खिले हुए छितवन, तिलक, कनेर तथा पाटल आदि नाना प्रकार के दिव्य वृक्षों से जिनके अग्रभाग फूलों के भार से लदे थे तथा जिन पर लताबल्लरियाँ फैली हुई थीं, इन्द्र की अमरावती के समान शोभा पाती थी।

20. पलाश (टेसू) (Flame of the forest)

हनुमान को लंका की अशोक वाटिका में पलाश के वृक्ष मिले–

विनिष्पतद्भिः शतशश्चित्रैः पुष्पावतंसकैः।
समूलपुष्परचितैरशोकैः शोकनाशनैः ॥ (5/15/7)

पुष्पभारातिभारैश्च स्पृशद्भिरिवमेदिनीम्।
कर्णिकारैः कुसुमितैः किंशुकैश्च सुपुष्पितैः॥ (5/15/8)
स देशः प्रभया तेषां प्रदीप्त इव सर्वतः।

वृक्षों के झड़ते हुए सैकड़ों विचित्र पुष्प-गुच्छों से नीचे से ऊपर तक मानो फूल से बने हुए शोकनाशक अशोकों से, फूलों के भारी भार से झुककर पृथ्वी का स्पर्श सा करते हुए खिले हुए कनेरों से तथा सुन्दर फूलवाले पलाशों से उपलक्षित वह भूभाग उनकी प्रभा के कारण सब ओर से उद्दीप्त-सा हो रहा था।

लंका दहन के समय पलाश के वृक्ष का उल्लेख है–

तत्राम्बरादग्निरतिप्रवृद्धो
रूक्षप्रभः किंशुकपुष्पचूडः।
निर्वाणधूमाकुलराजयश्च
नीलोत्पलाभाः प्रचकाशिरेऽभ्राः॥ (5/54/34)

वहाँ धरती से आकाश तक फैली हुई अत्यन्त बढ़ी-चढ़ी आग की प्रभा बड़ी तीखी प्रतीत होती थी। उसकी लपटें टेसू के फूल की भाँति लाल दिखाई देती थीं। नीचे से जिनका सम्बन्ध टूट गया था, वे आकाश में फैली हुई धूम पंक्तियाँ नील कमल के समान रंगवाले मेंघों की भाँति प्रकाशित हो रही थीं।

राम-रावण युद्ध के समय पलाश का उल्लेख आया है–

परस्परं स्वेदविदिग्धगात्रै
परस्परं शोणितरक्तदेहौ।
परस्परं श्लिष्टनिरुद्धचेष्टौ
परस्परं शाल्मलिकिंशुकाविव॥ (6/40/14)

फिर तो वे दोनों आपस में गुँथ गये। दोनों के ही शरीर पसीने से तर और खून से लथपथ हो गये तथा दोनों ही एक-दूसरे की पकड़ में आने के कारण निश्चेष्ट होकर खिले हुए सेमल और पलाश नामक वृक्षों की भाँति दिखाई देने लगे।

मेघनाद के प्रहार से घायल श्रीराम एवं लक्ष्मण की स्थिति खिले हुए पलाश जैसी हो गयी–

तयोः क्षतजमार्गेण सुस्राव रुधिरं बहु।
तावुभौ च प्रकाशेते पुष्पिताविव किंशुकौः॥ (6/45/9)

उन दोनों के अंगों में जो घाव हो गये थे, उसके मार्ग से बहुत रक्त बहने लगा। उस समय वे दोनों भाई खिले हुए दो पलाश वृक्षों के समान प्रकाशित हो रहे थे।

अंगद वज्रदंष्ट्र युद्ध में दोनों की स्थिति खिले पलाश जैसी हो गयी–

व्रणैः सास्रैरशोभेतां पुष्पिताविव किंशुकौः।
युध्यमानौ परिश्रान्तौ जानुभ्यामवनीं गतौ॥ (6/54/32)

दोनों के घावों से रक्त की धारा बहने लगी, जिससे वे खिले हुए पलाश के वृक्षों के समान शोभा पाने लगे। लड़ते-लड़ते थक जाने के कारण दोनों ने ही पृथ्वी पर घुटने टेक दिये।

नील प्रहस्त युद्ध में धरती की स्थिति खिले पलाश जैसी हो गयी–

सा मही रुधिरौघेण प्रच्छन्ना सम्प्रकाशते।
संछन्ना माधवे मासि पलाशैरिव पुष्पितैः॥ (6/58/28)

रक्त के प्रवाह से आच्छादित हुई वह युद्धभूमि वैशाख मास में खिले हुए पलाश वृक्षों से ढकी हुई वन्य भूमि सी सुशोभित होती थी।

कुम्भकर्ण के प्रहार से वानरों की स्थिति खिले पलाश जैसी हो गयी–

दत्तप्रहारव्यथिता मुमुहुः शोणितोक्षिताः।
निपेतुस्ते तु मेदिन्यां निकृत्ता इव किंशुकाः ॥ (6/67/29)

उसके प्रहार से व्यथित हुए वानर मूर्च्छित हो गये और रक्त से नहा उठे। फिर कटे हुए पलाश वृक्ष की भाँति पृथ्वी पर गिर पड़े।

मेघनाद के प्रहार से वानरों की स्थिति खिले पलाश जैसी हो गयी–

ततो ज्वलनसंकाशैर्बाणैर्वानरयूथपाः।
ताड़िताः शक्रजिद्बाणैः प्रफुल्ला इव किंशुकाः ॥ (6/73/59)

इन्द्रजित के चलाये हुए अग्नितुल्य तेजस्वी बाणों से घायल हो रक्त से नहाकर सारे वानर-यूथपति खिले हुए पलाश के वृक्ष के समान जान पड़ते थे।

जलती लंका को पलाश के पुष्प की भाँति दिखाया गया है–

हर्म्याग्रैर्दह्यमानैश्च ज्वालाप्रज्वलितैरपि।
रात्रै सा दृश्यते लङ्का पुष्पितैरिव किंशुकैः ॥ (6/75/26)

अट्टालिकाओं के जलते हुए शिखर उठती हुई ज्वालाओं से आवेष्टित हो रहे थे। रात्रि में उनसे उपलक्षित हुई लंकापुरी खिले हुए पलाश पुष्पों से युक्त सी दिखाई देती थी।

लक्ष्मण मेघनाद युद्ध में दोनों की स्थिति लाल पलाश पुष्प जैसी हो गयी–

तयोः कृतव्रणौ देहौ शुशुभाते महात्मनोः।
सुपुष्पाविव निष्पत्रौ वने किंशुकशाल्मली ॥ (6/88/71)

उन दोनों महामनस्वी वीरों के क्षत-विक्षत शरीर वन में पत्रहीन एवं लाल पुष्पों से भरे हुए पलाश और सेमल के वृक्षों की भाँति सुशोभित होते थे।

ततः शोणितदिग्धाङ्गौ लक्ष्मणेन्द्रजितावुभौ।
रणे तौ रेजतुर्वीरौ पुष्पिताविव किंशुकौः ॥ (6/90/37)

इससे लक्ष्मण और इन्द्रजित दोनों के शरीर लहूलुहान हो गये। रणभूमि में वे दोनों वीर फूले हुए पलाश के वृक्षों की भाँति शोभा पा रहे थे।

रावण के बाणों के प्रहार से श्रीराम की स्थिति खिले पलाश जैसी हो गयी–

स शोणितसमादिग्धः समरे लक्ष्मणाग्रजः।
दृष्टः फुल्ल इवारण्ये सुमहान् किंशुकद्रुमः ॥ (6/103/7)

समरभूमि में उन बाणों से घायल हुए लक्ष्मण के बड़े भाई श्रीराम रक्त से नहा उठे और जंगल में खिले हुए पलाश के महान् वृक्ष की भाँति दिखाई देने लगे।

21. खस (Khus)

रावण की चिता में खस का प्रयोग किया गया–

रावणं प्रयते देशे स्थाप्य ते भृशदुःखिताः ॥ (6/111/112)

चितां चन्दनकाष्ठैश्च पद्मकोशीरचन्दनैः।
ब्राह्मया संवर्तयामासू राङ्कवास्तरणावृताम् ॥ (6/111/113)

आगे जाकर रावण के विमान को एक पवित्र स्थान पर रखकर अत्यन्त दुखी हुए विभीषण आदि राक्षसों ने मलय-चन्दनकाष्ठ, पद्मक, उशीर (खस) तथा अन्य प्रकार के चन्दनों द्वारा वेदोक्त विधि से चिता बनायी और उसके ऊपर रंकु नामक मृग का चर्म बिछाया।

22. कल्पवृक्ष, पारिजात

हनुमान को श्रीलंका में कल्पवृक्ष के वृक्ष मिले—

लताशतैरवततताः संतानकुसुमावृताः।
नानागुल्मावृतवनाः करवीरकृतान्तराः ॥ (5/14/26)

उनके तटों पर सैकड़ों प्रकार की लताएँ फैली हुई थीं। खिले हुए कल्पवृक्षों ने उन्हें चारों ओर से घेर रखा था। उनके जल नाना प्रकार की झाड़ियों से ढके हुए थे तथा बीच-बीच में खिले हुए कनेर के वृक्ष गवाक्ष की-सी शोभा पाते थे।

23. रक्तचन्दन (Red Sandal-Wood)

लंका के वर्णन में लालचन्दन का उल्लेख किया गया है—

रक्तचन्दनसंकाशा संध्या परमदारुणा।
ज्वलतः प्रपतत्येतदादित्यादग्निमण्डलम् ॥ (6/23/6)

यह सन्ध्या लाल चन्दन के समान कान्ति धारण करके बड़ी भयंकर दिखाई देती है। प्रज्वलित सूर्य से ये आग की ज्वालाएँ टूट-टूटकर गिर रही हैं।

24. ताड़ (ताल) (Palmyra Palm)

लंका में हनुमान को ताड़ के वृक्ष मिले—

सालतालैश्च कर्णैश्च वंशैश्च बहुभिर्वृतम्।
लतावितानैर्विततैः पुष्पवद्भिरलंकृतम् ॥ (5/56/34)

साल, ताल, कर्ण और बहुसंख्यक बाँस के वृक्ष उसे सब ओर से घेरे हुए थे। फूलों के भार से लदे और फैले हुए लता-वितान उस पर्वत के अलंकार थे।

श्रीराम को लंका निरीक्षण के समय ताड़ के वृक्ष मिले—

चम्पकाशोकबकुलशालतालसमाकुला।
तमालवनसंछन्ना नागमालासमावृता ॥ (6/39/3)
हिन्तालैरर्जुनैर्नीपैः सप्तपर्णैः सुपुष्पितैः।
तिलकैः कर्णिकारैश्च पाटलैश्च समन्ततः ॥ (6/39/4)

शुशुभे पुष्पिताग्रैश्च लतापरिगतैर्द्रुमैः।
लङ्का बहुविधैर्दिव्यैर्यथेन्द्रस्यामरावती ॥ (6/39/5)

चम्पा, अशोक, बकुल, शाल और ताल वृक्षों से व्याप्त, तमाल वन से आच्छादित और नागकेसरों से आवृत लंकापुरी हिन्ताल, अर्जुन, नीप (कदम्ब), खिले हुए छितवन, तिलक, कनेर तथा पाटल आदि नाना प्रकार के दिव्य वृक्षों से जिनके अग्रभाग फूलों के भार से लदे थे तथा जिन पर लताबल्लरियाँ फैली हुई थीं, इन्द्र की अमरावती के समान शोभा पाती थी।

राम-रावण युद्ध में ताड़ के वृक्षों का प्रयोग हुआ—

ततः शिरस्ते निशितैः पातयिष्याम्यहं शरैः।
मारुतः कालसम्पक्वं वृन्तात् तालफलं यथा ॥ (6/71/61)

उसके बाद मैं अपने तीखे बाणों से तेरा मस्तक उसी तरह काट गिराऊँगा, जैसे वायु कालक्रम से पके हुए ताड़ के फल को उसके वृन्त (बौंडी) से नीचे गिरा देती है।

25. देवदारु या नीलाशोक

अशोक की एक और प्रजाति भारत के प्रायः सभी क्षेत्रों में पायी जाती है जिसका वानस्पतिक नाम 'Polyalthia longifolia' है। इसका वृक्ष सीधा खड़ा होता है। इसकी शाखाएँ सघन नहीं होतीं। इसकी छाल पतली और लकड़ी पीलापन लिए सफ़ेद होती है। पत्ते 15 से 25 से.मी. तक लम्बे लहरदार, धार वाले तथा चमकीले होते हैं। इसे कहीं-कहीं पर हिन्दी में एवं बंगला में देवदारु कहा जाता है। इसे आजकल भी वाटिकाओं में लगाया जाता है। अतः वाल्मीकि रामायण में वर्णित देवदारु अशोक की यही प्रजाति है।

लंका में हनुमान को देवदारु वृक्ष मिले—

प्रगीतमिव विस्पष्टं नानाप्रस्रवणस्वनैः।
देवदारुभिरुद्धूतैरूर्ध्वबाहुमिव स्थितम् ॥ (5/56/29)

अनेकानेक झरनों के कलकल नाद से वह अरिष्टगिरि स्पष्टतया गीत सा गा रहा था। ऊँचे-ऊँचे देवदारु वृक्षों के कारण मानो हाथ ऊपर उठाए खड़ा था।

26. अश्वकर्ण, गर्जन

राम-रावण युद्ध में गर्जन के वृक्षों का प्रयोग हुआ—

सोऽश्वकर्ण समासाद्य रोषदर्पान्वितो हरिः।
तूर्णमुत्पाटयामास महागिरिमिवोच्छ्रितम् ॥ (6/56/20)

फिर रोष और दर्प से उन वानरवीर ने महान् पर्वत के समान ऊँचे अश्वकर्ण नामक वृक्ष के पास जाकर उसे शीघ्रतापूर्वक उखाड़ लिया।

सोऽश्वकर्णद्रुमाञ्शालांश्चूतांश्चापि सुपुष्पितान्।
अन्यांश्च विविधान् वृक्षान् नीलश्चिक्षेप संयुगे ॥ (6/59/77)

उन्होंने युद्धस्थल में अश्वकर्ण, साल, खिले हुए आम तथा अन्य नाना प्रकार के वृक्षों को उखाड़-उखाड़ कर रावण पर चलाना प्रारम्भ किया।

उत्पाट्य च महावृक्षानश्वकर्णादिकान् बहून्।
अन्यांश्च विविधान् वृक्षांश्चिक्षेप स महाकपिः ॥ (6/76/66)

महाकपि सुग्रीव, अश्वकर्ण आदि बड़े-बड़े वृक्ष तथा दूसरे भी नाना प्रकार के वृक्ष उखाड़कर उस राक्षस पर फेंकने लगे।

27. तिलक

लंका निरीक्षण के समय श्रीराम को तिलक के वृक्ष मिले–

चम्पकाशोकबकुलशालतालसमाकुला।
तमालवनसंछन्ना नागमालासमावृता ॥ (6/39/3)
हिन्तालैरर्जुनैर्नीपैः सप्तपर्णैः सुपुष्पितैः।
तिलकैः कर्णिकारैश्च पाटलैश्च समन्ततः ॥ (6/39/4)
शुशुभे पुष्पिताग्रैश्च लतापरिगतैर्द्रुमैः।
लङ्का बहुविधैर्दिव्यैर्यथेन्द्रस्यामरावती ॥ (6/39/5)

चम्पा, अशोक, बकुल, शाल और ताल वृक्षों से व्याप्त, तमाल वन से आच्छादित और नागकेसरों से आवृत लंकापुरी हिन्ताल, अर्जुन, नीप (कदम्ब), खिले हुए छितवन, तिलक, कनेर तथा पाटल आदि नाना प्रकार के दिव्य वृक्षों से जिनके अग्रभाग फूलों के भार से लदे थे तथा जिन पर लताबल्लरियाँ फैली हुई थीं, इन्द्र की अमरावती के समान शोभा पाती थी।

28. अर्जुन (ककुभ) (Arjuna Tree)

लंका निरीक्षण के समय श्रीराम को अर्जुन के वृक्ष मिले–

चम्पकाशोकबकुलशालतालसमाकुला।
तमालवनसंछन्ना नागमालासमावृता ॥ (6/39/3)
हिन्तालैरर्जुनैर्नीपैः सप्तपर्णैः सुपुष्पितैः।
तिलकैः कर्णिकारैश्च पाटलैश्च समन्ततः ॥ (6/39/4)
शुशुभे पुष्पिताग्रैश्च लतापरिगतैर्द्रुमैः।
लङ्का बहुविधैर्दिव्यैर्यथेन्द्रस्यामरावती ॥ (6/39/5)

चम्पा, अशोक, बकुल, शाल और ताल वृक्षों से व्याप्त, तमाल वन से आच्छादित और नागकेसरों से आवृत लंकापुरी हिन्ताल, अर्जुन, नीप (कदम्ब), खिले हुए छितवन, तिलक, कनेर तथा पाटल आदि नाना प्रकार के दिव्य वृक्षों से जिनके अग्रभाग फूलों के भार से लदे थे तथा जिन पर लताबल्लरियाँ फैली हुई थीं, इन्द्र की अमरावती के समान शोभा पाती थी।

29. जपा, गुड़हल (Shoe Flower)

इसका वानस्पतिक नाम 'Hibiscus rosa-sinensis' है। इसे हिन्दी में गुड़हल, अड़हुल तथा जवाकुसुम, बंगला में जबाफुल, गुजराती में जासुस आदि कहते हैं। यह लगभग पूरे भारत में फूलों के लिए लगाया जाता है। यह एक सदाहरित 5 से 8 फीट ऊँचा पौधा है। इसके फूल लाल, घण्टाकार तथा बड़े होते हैं। पुष्प के जननांग बीच से बाहर निकले होते हैं। यह सदैव फूलता रहता है।

लंका में जपा फूल का उल्लेख आया है–

संध्यया चावृता लङ्का जपापुष्पनिकाशया।
दृश्यते सम्प्रदीप्तेव दिवसेऽपि वसुंधरा॥ (6/106/23)

असमय में ही जपा (अड़हुल) के फूल सी लाल रंग वाली सन्ध्या से आवृत हुई लंकापुरी की भूमि दिन में भी जलती हुई सी दिखाई देती थी।

30. बरगद (भंडीर) (Banyan Tree)

लंका में बरगद के वृक्ष थे–

नीलजीमूतसंकाशं न्यग्रोधं भीमदर्शनम्।
तेजस्वी रावणभ्राता लक्ष्मणाय न्यवेदयत्॥ (6/87/3)

वहाँ एक बरगद का वृक्ष था, जो श्याम मेघ के समान सघन और देखने में भयंकर था। रावण के तेजस्वी भ्राता विभीषण ने लक्ष्मण को वहाँ की सब वस्तुएँ दिखाकर कहा।

विभीषण ने लंका में बरगद का वृक्ष लक्ष्मण को दिखाया–

तमप्रविष्टं न्यग्रोधं बलिनं रावणात्मजम्।
विध्वंसय शरैर्दीप्तैः सरथं साश्वसारथिम्॥ (6/87/6)

अतः जब तक यह इस बरगद के नीचे आये, उसके पहले ही आप अपने तेजस्वी बाणों द्वारा इस बलवान् रावणकुमार को रथ, घोड़े और सारथि सहित नष्ट कर दीजिए।

विभीषण ने मेघनाद से वार्ता में बरगद के वृक्ष का उल्लेख किया–

अद्येह व्यसनं प्राप्तं यन्मां परुषमुक्तवान्।
प्रवेष्टुं न त्वया शक्यं न्यग्रोधं राक्षसाधम॥ (6/87/28)

नीच राक्षस! तूने मुझसे जो कठोर बात कही है, उसी का फल है कि आज तुझपर घोर संकट आया है। अब तू बरगद के नीचे तक नहीं जा सकता।

31. सेमल (चूर्णक या शाल्मली) (Silk Cotton Tree)

सुग्रीव रावण युद्ध के समय सेमल के वृक्ष का उल्लेख है–

परस्परं स्वेदविदिग्धगात्रौ
परस्परं शोणितरक्तदेहौ।

परस्परं श्लिष्टनिरुद्धचेष्टौ
परस्परं शाल्मलिकिंशुकाविव ॥ (6/40/14)

फिर तो वे दोनों आपस में गुँथ गये। दोनों के ही शरीर पसीने से तर और खून से लथपथ हो गये तथा दोनों ही एक-दूसरे की पकड़ में आने के कारण निश्चेष्ट होकर खिले हुए सेमल और पलाश नामक वृक्षों की भाँति दिखाई देने लगे।

लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध के समय सेमल के वृक्ष का उल्लेख है–

तयोः कृतव्रणौ देहौ शुशुभाते महात्मनोः।
सुपुष्पाविव निष्पत्रौ वने किंशुकशाल्मली ॥ (6/88/71)

उन दोनों महामनस्वी वीरों के क्षत-विक्षत शरीर वन में पत्रहीन एवं लाल पुष्पों से भरे हुए पलाश और सेमल के वृक्षों की भाँति सुशोभित होते थे।

32. कमल (Lotus)

सीता की खोज के समय हनुमान को कमल के फूल मिले–

समासाद्य च लक्ष्मीवाँल्लङ्कां रावणपालिताम्।
परिखाभिः सपद्माभिः सोत्पलाभिरलंकृताम् ॥ (5/2/14)

अद्भुत शोभा से सम्पन्न हनुमान जी धीरे-धीरे रावण-पालित लंकापुरी के पास पहुँचे। उसके चारों ओर खुदी हुई खाइयाँ उस नगरी की शोभा बढ़ा रही थीं। उनमें उत्पल और पद्म आदि कई जातियों के कमल खिले थे।

33. पद्मक (Mild Himalaya Cherry)

रावण की चिता में पद्मक का प्रयोग किया गया–

रावणं प्रयते देशे स्थाप्य ते भृशदुःखिताः ॥ (6/111/112)
चितां चन्दनकाष्ठैश्च पद्मकोशीरचन्दनैः।
ब्राह्मया संवर्तयामासू राङ्कवास्तरणावृताम् ॥ (6/111/113)

आगे जाकर रावण के विमान को एक पवित्र स्थान पर रखकर अत्यन्त दुखी हुए विभीषण आदि राक्षसों ने मलय-चन्दनकाष्ठ, पद्मक, उशीर (खस) तथा अन्य प्रकार के चन्दनों द्वारा वेदोक्त विधि से चिता बनायी और उसके ऊपर रंकु नामक मृग का चर्म बिछाया।

34. क्षौम (अलसी) (Common Flax)

वाल्मीकि रामायण में इसके लिए क्षौम शब्द का प्रयोग किया गया है। इसे हिन्दी में तीसी, अलसी या मसीना, बंगला में तिसी या मसीना, मराठी में जवस एवं गुजराती में अलशी कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम 'Linum usitatissimum' है। यह लगभग पूरे भारत में बोई जाती है। इसका पौधा

30 से 60 से.मी. ऊँचा होता है। पत्ते छोटे, रेखाकार या भालाकार एवं 3 शिराओं से युक्त होते हैं। फूल नीले रंग के तथा घण्टाकार होते हैं। फल गोल तथा ऊपर की ओर घुण्डी-सा नुकीला होता है। इससे तेल निकलता है। इसके बीज एवं तेल का उपयोग चिकित्सा में किया जाता है। इसके कांड से लिनेन तन्तु निकलते हैं जिससे कपड़े बनाये जाते हैं।

लंका में अलसी एवं सन से बने कपड़ों का उल्लेख आया है–

क्षौमं च दह्यते तत्र कौशेयं चापि शोभनम्।
आविकं विविधं चौर्ण काञ्चनं भाण्डमायुधम् ॥ (6/75/9)

वहाँ क्षौम (अलसी या सन के रेशों से बना हुआ वस्त्र) भी जलता था और सुन्दर रेशमी वस्त्र भी। भेंड़ के रोंएँ का बना कम्बल, नाना प्रकार के ऊनी वस्त्र, सोने के आभूषण और अस्त्र-शस्त्र भी जल रहे थे।

उक्त से विदित होता है कि रामायण काल में अलसी एवं सन से बने वस्त्रों का उपयोग होता था।

35. गूलर (Wild Fig)

इसका वानस्पतिक नाम 'Ficus glomerata' है। सामान्यतया गूलर नदी के तटीय क्षेत्रों में जहाँ पर्याप्त मात्र में नमी होती है, बहुतायत में पाया जाता है। यह विशाल छत्र वाला वृक्ष है जिसकी ऊँचाई 15 मीटर तक होती है। इसके फल को पक्षी एवं जानवर दोनों बड़े चाव से खाते हैं। यह बन्दरों को विशेष प्रिय है। अगस्त से अक्टूबर के बीच पतझड़ होता है। फूल मार्च-अप्रैल में आते हैं और फल लगभग पूरे वर्ष रहता है। इसे प्रायः मन्दिर परिसर में, गाँवों में एवं सड़कों के किनारे लगाया जाता है।

लंका में रावण से वार्तालाप में अंगद ने लंका को गूलर के फल के समान बताया है–

गूलर फल समान तव लंका।
बसहु मध्य तुम जंतु असंका ॥ (6/34)

36. बाँस

गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्रहस्त द्वारा रावण को समझाते समय बाँस का उल्लेख किया है–

बेनु मूल सुत भयउ घमोई ॥ (6/10)

37. बेंत

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रावण के अहंकार का वर्णन करते समय बेंत का उल्लेख किया है–

फूलहिं फरहिं न बेंत जदपि सुधा बरसहिं जलद॥ (6/16)

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.	वनौषधि निदर्शिका	–	डॉ. रामसुशील सिंह
2.	मानस में प्रकृति विषयक सन्दर्भ	–	महेन्द्र प्रताप सिंह
3.	वाल्मीकि की पर्यावरण चेतना-भाग-1 : वनस्पतियाँ	–	महेन्द्र प्रताप सिंह
4.	Fodder Trees of India	–	Sri R. V. Singh
5.	Manual of Indian Timbers	–	Sri J. S. Gamble
6.	Trees of India	–	Sri C. K. Warman

❐❐